ॐ

नित्य नियम पूजा

प्रकाशक :
दिगम्बर जैन पुस्तकालय
सूरत - ३

नित्य नियम पूजा

[दैनिक एवं पर्वके दिनोंमें करने योग्य
सभी पूजाओं तथा स्तोत्रका संग्रह]

प्रकाशक :

दिगम्बर जैन पुस्तकालय

गांधीचौक

सूरत–३

मुद्रक :

शैलेश डाह्याभाई कापड़िया

"जैन विजय प्रिन्टींग प्रेस"

गांधीचौक, सूरत–३

—* *—

मूल्य रु. १५–००

* विषय सूची *

क्रम सं.		पेज नंबर
१.	देव दर्शन विधि	१
२.	दर्शन पाठ (दर्शनं देव)	२
३.	वर्तमान तथा भविष्यत् तीर्थंकरोंके नाम	४
४.	दर्शन पाठ (बुधजनजी कृत)	५
५.	पंचामृताभिषेक पाठ (संस्कृत)	७
६.	लघु शांतिमंत्र	२०
७.	बृहत शांति मंत्र	२२
८.	अभिषेक पाठ	२७
९.	लघुपंचामृताभिषेक भाषा	३१
१०.	विनय पाठ	३३
११.	पूजन प्रारम्भ	३५
१२.	देवशास्त्र गुरुकी भाषा पूजा	३९
१३.	बीस तीर्थङ्कर, भाषा पूजा	४३
१४.	देवशास्त्र विद्यमान तीर्थङ्कर एवं सिद्धपूजा (समुच्चय)	४७
१५.	तीस चौबीसीका अर्घ	५०
१६.	विद्यमान बीस तीर्थङ्करका अर्घ	५०
१७.	कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयोंका अर्घ	५०
१८.	सिद्ध पूजा द्रव्याष्टक	५२
१९.	सिद्ध पूजा भावाष्टक	५७
२०.	सिद्धपूजा भाषा (अष्ट करम करि०)	५८
२१.	समुच्चय चौबीसी पूजा	६२
२२.	निर्वाण क्षेत्र पूजा	६५
२३.	सप्तऋषि पूजा	६८
२४.	सोलह कारण पूजा	७२
२५.	पंचमेरु पूजा	७५

२६. नन्दीश्वर द्वीप (अष्टाह्निका) पूजा ७८
२७. दशलक्षण धर्म पूजा ८१
२८. रत्नत्रय पूजा (समुच्चय) ८७
२९. दर्शन पूजा ९०
३०. ज्ञान पूजा ९२
३१. चारित्र पूजा ९४
३२. सरस्वती पूजा ९६
३३ गुरु पूजा ९८
३४. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा १०१
३५. श्री ऋषि मण्डल पूजा १०७
३६. तीस चौबीसीकी पूजा ११६
३७. रविव्रत पूजा १२२
३८. आदिनाथ पूजा (नाभिराय मरुदेविके....) १२६
३९. पंचबालयती तीर्थंकर पूजा १३०
४०. पंचपरमेष्ठी पूजा १३४
४१. श्री शांतिनाथ जिन पूजा १३८
४२. पार्श्वनाथ पूजा १४२
४३. नवग्रह अरिष्ट निवारक पूजा १४७
४४. रक्षा बन्धन पूजा १५०
४५. सलूना पर्व पूजा १५४
४६. चौसठ ऋद्धि (समुच्चय) पूजा १५७
४७. वर्धमान जिन पूजा १६०
४८. महा अर्घ १६५
४९. शांतिपाठ भाषा १६७
५०. भजन....नाथ तेरी पूजा को फल पायो १६९
५१. स्तुति (तुम तरण तारण) १६९
५२. विसर्जन १७१

५३. पद्मावती माताकी पूजा १७२
५४. शांतिपाठ (संस्कृत) १७६
५५. विसर्जन संस्कृत १७८
५६. चौबीस तीर्थंकरकी आरती १७९
५७. पंचपरमेष्ठीकी आरती १८०
५८. पद्मावतीकी माताकी आरती १८०
५९. भक्तमर स्तोत्र १८१
६०. तत्वार्थ सूत्रम् १९१
६१. बारह भावना २०६
६२. निर्वाण कांड भाषा २०७
६३. श्री पद्मप्रभ पूजा (अ० क्षेत्र पद्मपुरा क्षेत्र स्थित) २१०
६४. चांदनगांव महावीर श्री महावीरजी क्षेत्र स्थित) २१४
६५. श्री चन्द्रप्रभ पूजा (अ० क्षेत्र देहरा-तिजारा स्थित) २१९
६६. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा २२४
६७. विघ्नहर पार्श्वनाथ (अ० क्षेत्र) पूजा २२९
६८. श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा (अ. क्षेत्र पैठण स्थित) २३२
६९. श्री मुनिसुव्रतनाथकी आरती २३६
७०. श्री मनिसुव्रतनाथकी स्तुति २३७
७१. श्री पद्मप्रभ चालीसा २३८
७२. श्री चन्द्रप्रभु चालीसा २४०
७३. श्री पार्श्वनाथ चालीसा २४३
७४. श्री महावीर चालीसा २४५
७५. लक्ष्मी प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ण करनेका मंत्र २४८
७६. शान्ति मंत्र २४८
७७. नवग्रह शांतिके लिए मंत्र जाप २४८

શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી વિઘ્નહર પાર્શ્વનાથ
(અતિ.) દિગંબર જૈનમંદિર-મહુવા (સુરત)

श्री १००८ विघ्नहर पार्श्वनाथ भगवान्
१००० वर्ष प्राचीन अतिशय वेलुरकी प्रतिमा

एक ही जगहसे ग्रन्थ मंगावें।

हमारे यहां धर्म, न्याय ज्योतिष, सिद्धांत, कथा, पुराण षट्खण्डागम, धवल, जयधवलके अतिरिक्त पवित्र काश्मीरी केशर, दशांग, धूप, अगरबत्ती, कांचकी व चांदीकी मालायें, जनोई, जैन पंचरंगी झंडा, बम्बई (शोलापुर) इन्दौर, दिल्ली तीनों जैन परीक्षालयके पाठ्यक्रमकी पुस्तकें मंगाकर हमारे लिए सेवाका अवसर दीजिये। ग्राहकोंको संतोषित करना हमारा लक्ष्य है। पर्वके अवसर पर आवश्यकतानुसार उच्च कोटिके जैन साहित्यिक ग्रन्थ रत्न पढके मनुष्य जन्म सफल बनाईये। एक पत्र लिखकर सूची-पत्र मुफ्त मंगवाईये।

शैलेश डाह्याभाई कापड़िया

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक, सूरत–३

टे. नं. २७६२१

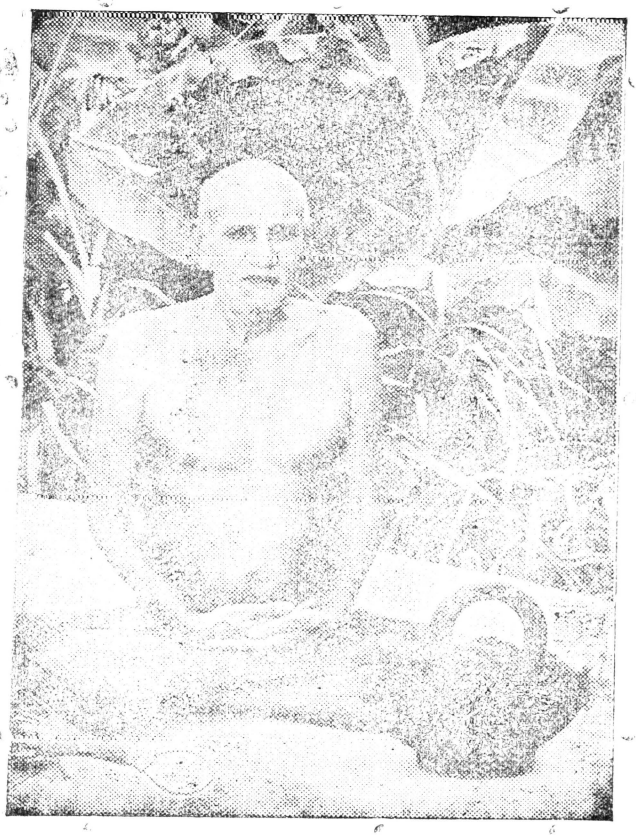

सन्मार्ग दिवाकर आचार्य विमलसागरजी महाराज

पूजन कथा विधानादि

सिद्धचक्र विधान (कपडा बाईन्डींग)	२४-००
नित्य पूजा गुटका	८-००
नित्य नियम पूजा (दैनिक पाठ पूजा)	१५-००
चतुर्विंशति पूजन वृन्दावन	१०-००
चौषठ ऋद्धि विधान	५-००
सोलहकारण विधान	८-००
दशलक्षण विधान	५-००
सुगंधदशमी पूजा विधान	३-००
रविवार व्रत कथा विधान सहित	२-५०
दशलक्षण धर्म दिपक	५-००
जैन व्रत कथा संग्रह	१०-००
नंदीश्वर विधान	१२-००
शांतिनाथ विधान	३-००
रत्नत्रय विधान ३-०० रक्षाबंधन कथा	२-५०
आराधना कथा प्रथम	८-००
,, ,, द्वितीय--८-००, तृतीय	८-००
नवीन महावीर किर्तन	६०-००
धन्यकुमार चरित्र	५-००
नवग्रह विधान	२-५०
सच्चा जिनवाणी	४४-००
बृहद जिनवाणी	४०-००

दिगम्बर जैन पुस्तकालय
गांधीचौक, सूरत-३.

श्री वीतरागाय नमः

देव दर्शन विधि

मन्दिरके दरवाजेमें प्रवेश करते ही बोले—

ॐ जय जय जय, निःसही, निःसही, निःसही।

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

भगवानके सामने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर बोले—

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

भगवानकी तीन प्रदक्षिणा देवे। बंधी मुट्ठीसे अंगुठा भीतर करके चावलका पूंज चढ़ावे भगवानके सामने—

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु ऐसे पांचों पद बोलते हुए क्रमसे बीचमें, उपर, दाहिनीं तरफ नीचे और बाई तरफ ऐसे, पांच पूंज चढ़ावे।

*
* * *
*

सरस्वतीके सामने—प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ऐसे बोलकर क्रमसे चार पूंज लाइनसे चढ़ावे * * * *

गुरुके सामने—सम्यग्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्र ऐसे बोलकर क्रमसे तीन पूंज लाइनसे चढ़ावे * * *

पुनः हाथ जोड़कर स्तोत्र बोले—

हे भगवन्! नेत्रद्वय मेरे सफल हुये हैं आज अहो।
तव चरणांबुजका दर्शन कर जन्म सफल हैं आज अहो॥

हे त्रिभुवन के नाथ ! आप के दर्शन से मालूम होता ।
यह संसार जलधि चुल्लू जल सम हो गया अहो ऐसा ॥१॥
अर्हंतसिद्धाचार्य औ पाठक साधु महान ।
पंच परम गुरुको नमूं भव भवमें सुखदान ॥२॥

पुन: विधिवत् पृथ्वीतल पर मस्तक टेक कर नमस्कार करे ।

अर्थ–हे भगवान् ! आपके चरण कमलोंका दर्शन करके आज मेरे दोनों नेत्र सफल हो गये हैं और मेरा जन्म भी सफल हो गया है। हे तीन लोकके नाथ ! आपके दर्शन करने से ऐसा मालूम होता है कि जो मेरा संसार समुद्र अपार था सो आज चुल्लू भर पानीके समान थोड़ा रह गया है ।

अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पंच परम गुरु भव२में सुख देनेवाला है मैं इनको नमस्कार करता हूँ ।

दर्शन पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पाप–नाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्ष–साधनम् ॥१॥
दर्शनेन जिनेंद्राणां साधुनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतराग-मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभं ।
जन्म-जन्म-कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥३॥
दर्शनं जिन सूर्यस्य संसार ध्वान्त-नाशनम् ।
बोधनं चित्तपद्मस्य समस्तार्थ-प्रकाशनम् ॥४॥

दर्शनं जिनचन्द्रस्य सद्धर्मामृत-वर्षणम् ।
जन्म-दाहविनाशाय वर्धनं सुखवारिधेः ॥५॥

जीवादि-तत्व प्रतिपाद-काय सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय ।
प्रशांतरुपाय दिगंबराय देवाधिदेवाय नमो जिनाय ।६॥

चिदानन्दैक रुपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥८॥

न हि त्राता, न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥

जिने भक्तिर्जिने भक्ति र्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे ।१०॥

जिनधर्म, विनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥११॥

जन्म जन्मकृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्म-मृत्यु जरा-रोगं हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥

अद्याभवत्सफलता नयन-द्वयश्य,
देव त्वदीय चरणांबुज-वीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोक-तिलकं प्रतिभासतेमे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम् ॥१३॥

वर्तमान २४ तीर्थंकरोंके नाम

१. आदिनाथजी, २. अजितनाथजी, ३. संभवनाथजी
४. अभिनन्दननाथजी, ५. सुमतिनाथजी, ६. पद्मप्रभजी,
७. सुपार्श्वनाथजी, ८. चन्द्रप्रभजी, ९. पुष्पदंतजी,
१० शीतलनाथजी, ११. श्रेयोनाथजी, १२. वासुपूज्यजी
१३. विमलनाथजी, १४. अनन्तनाथजी, १५. धर्मनाथजी,
१६. शांतिनाथजी, १७. कुन्थुनाथजी, १८. अरनाथजी,
१९. मल्लिनाथजी, २०. मुनिसुव्रतनाथजी,
२१. नमिनाथजी, २२. नेमिनाथजी, २३. पार्श्वनाथजी,
२४. महावीरजी।

भविष्यत् २४ तीर्थंकरोंके नाम

१. महापद्मजी, २. सुरदेवजी, ३. सुप्रभजी, ४. स्वयंप्रभजी
५. सर्वायुद्धजी, ६. जयदेवजी, ७. उदयदेवजी, ८. प्रभा-
देवजी, ९. उदंकदेवजी, १०. प्रश्नकीर्तिजी, ११. जयकीर्तिजी
१२. पूर्णबुद्धजी, १३. निःकषायजी १४. विमलप्रभजी,
१५. बहलगुप्तजी, १६. निर्मलगुप्तजी, १७. त्रिगुप्तजी,
१८. समाधिगुप्तजी, १९. स्वयंभूजी, २०. कंदर्पजी,
२१. जयनाथजी, २२. विमलनाथजी, २३. दिव्यवाक्जी
२४. अनन्तवीर्यजी।

कवि बुधजनजी कृत स्तुति [हिन्दी दर्शनपाठ]

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरण आयो शरणजी।
यो विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरणजी॥

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो देव विविध प्रकारजी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो भ्रम गिन्यो हितकारजी॥

भव विकट बनमें कर्म वैरी ज्ञान धन मेरो हन्यो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरतो फिरयो॥

धन घड़ी यो धन दिवस यो ही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभुको लख लयो॥

छबि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुणजुत कोटि रवि छबिको हरैं॥

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो मनु रङ्क चिंतामणी लयो॥

मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक वीनऊं तुव चरणजी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारण तरणजी॥

जाचूं नहीं सुरवास पुनि नर राज परिजन साथजी।
'बुध' जाचहूं तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथजी॥

श्री चौवीस तीथङ्करोंका चिन्ह ।

वृषभनाथका 'वृषभ' जु जान । अजितनाथके 'हाथी' मान ।
संभवजिनके 'घोडा' कहा । अभिनन्दनपद 'बन्दर' लहा ॥१॥
सुमतिनाथके 'चकवा' होय । पद्मप्रभके 'कमल' जु जोय ।
जिनसुपासके 'सथिया' कहा । चंद्रप्रभ पद 'चन्द' जु लहा ॥२॥
पुष्दन्त पद 'मगर' पिछान । कल्पवृक्ष 'शीतल' पद मान ।
श्री श्रेयांस पद 'गैंडा' होय । वासुपूज्यके 'भैसा' जोय ॥३॥
विमलनाथपद 'शूकर' मान । अनंतनाथके 'सेही' जान ।
धर्मनाथके 'वज्र' कहाय शांतिनाथ पद 'हरन' लहाय ॥४॥
कुन्थुनाथके पद 'अज' चीन । अरजिनके पदचिह्न जु 'मीन' ।
मल्लिनाथके पद 'कमल' कहा । मुनिसुव्रतके 'कछुआ' लहा ॥५॥
लालकमल नमिजिनके होय । नेमिनाथ-पद 'शङ्ख' जु जोय ।
पार्श्वनाथके 'सर्प' जु कहा । वर्द्धमान पद 'सिंह' हि लहा ॥६॥

श्री पंचामृताभिषेक पाठ

श्री पंचनमस्कार मंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

मंगलाष्टकं

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।१।।

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ।
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।।
धर्मः सूक्ति सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्यालयं ।
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।२।।

नाभेयादि जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।।
ये विष्णु प्रतिविष्णु लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः ।
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ॥
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्त कुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृताः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥५॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरो कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्यादिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥८॥

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ॥
ये श्रृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।९॥

॥ इति श्रीमंगलाष्टकम् ॥

*

अथ अभिषेक पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैंकहेतु–
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाम्यधायि ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तापनाय पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत् ॥१॥

(नीचे लिखे श्लोकको पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करना ।)

श्रीमन्मन्दरसुन्दरे (मस्तके) शुचिजलैधौतैः सदर्भाक्षतैः ।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थंकमिदं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्राकंकणशेखराण्यापि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ॥२॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरञ्जिनि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ।

ॐ नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

(तिलक लगानेका श्लोक)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्य-
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ॥३॥

(भूमिप्रक्षालनका श्लोक)

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् । ४॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

(पीठप्रक्षालनका श्लोक)

श्रीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्यमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ।५॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥५॥

(पीठपर श्रीकारलेखन)

श्रीशारदाम्बुमुखनिर्गतवीजवर्ण ।
श्री मंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं ॥
श्रीमत्स्वयं श्रयति तस्य विनाशविघ्नं ।
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा ॥ ६ ॥

(अग्निप्रज्वालनक्रिया)

दुरन्तमोहसन्तानकान्तारदहनक्षमम् ।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लविताम्बरम् ॥७॥

ॐ ह्रीं अग्निप्रज्वालयामि स्वाहा ॥ ७ ॥

(दशदिक्पालक आह्वान)

इन्द्राग्निदंडधरनैर्ऋतपाशपाणि ।
वायूत्तरेण शशिमौलिफणींद्रचन्द्राः ॥
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः ।
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ॥८॥

(दशदिक्पालक मंत्र)

ॐ आं क्रों ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राय स्वाहा ॥१॥
ॐ आं क्रों ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ॥२॥
ॐ आं क्रों ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाहा ॥३॥
ॐ आं क्रों ह्रीं नैर्ऋत आगच्छ आगच्छ नैर्ऋतये स्वाहा ॥४॥
ॐ आं क्रों ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा ॥५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा ॥६॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ आगच्छ कुबेराय स्वाहा ॥७॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ॥८॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ आगच्छ धरणेंद्राय स्वाहा ॥९॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ॥१०॥

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार ।
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ॥
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विंशदाक्षतैश्च ।९॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञं भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा ॥९॥

(क्षेत्रपालको अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकपाल,
दंष्ट्रा कराल जिनशासनरक्षपाल ।
तैलादिजन्म गुडचन्दनपुष्पधूपै–
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले ॥
विमल सलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटह पटुतरोघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः,
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ॥१०॥

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र--वीरभद्र--मणिभद्र--भैरवा-पराजित--पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां-मिति स्वाहा ॥१०॥

(दिक्पाल और क्षेत्रपालको पुष्पांजली)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीय कीर्तिः ।
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ॥
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धा ।
पुष्पांजलि मलयजाद्रिभुपाक्षिपेऽहम् ॥११॥

इति पुष्पांजलिः क्षिपेत् ॥११॥

(कलशस्थापन और कलशोंमें जलधारा देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य-
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ॥
संबाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ।
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥१२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिच्छ केशरी पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकांता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघंट प्रक्षालित परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमा-मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं क्ष्वीं असि आ उ साय नमः स्वाहा ।

(अभिषेकके लिये प्रतिमाजीको अर्घ चढ़ाना)

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥१३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

(बिम्बस्थापना)

यः पांडुकामलशिलागतमादिदेव-
मस्नापयन् सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि ॥
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः ।
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रावर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ।

(मुद्रिकास्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग—
निर्यत्करप्रकरबद्धसुरेन्द्रचापम् ॥
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ साय नमः मुद्रिकाधारणं ॥

(जलाभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटिसंलग्नरत्न किरणच्छविधूसरांघ्रिम्
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टैर्भक्त्याजलैजिनपतिंबहुधाभिषिञ्च

मंत्र--(१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं व मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

मंत्र--(२) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानातं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....देशे.....नाम नगरे एतद्.....जिनचैत्यालये सं.....मासोत्तम मासे.....पक्षे तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनि--आर्यिका--श्रावक-श्राविकाणाम् सकल-कर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्। ❀

अर्घ :-उदक चंदन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(फलरसाभिषेक २)

मुक्त्यांगनानर्मविकीर्यमाणैः पिष्टार्थकपूररजोविलासैः।
माधुर्यधुर्यैंवरशर्करोघैर्भक्त्या जिनस्य वरसंस्नपनं करोमि॥

❀ नोट--उपरोक्त दोनों मंत्रोमेंसे कोई एक मंत्र बोलना चाहिये।
नोट--प्रतिष्ठापाठादिमें जलके बाद फल रसका ही अभिषेक हैं।
जो रस मौजूद हो उसीका श्लोक पढ़कर चढ़ाना चाहिये।

मंत्र-ॐ ह्रीं.....इति शर्करास्नपनम् ।
अर्घ-उदकचन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः ।
हस्तैश्च्युता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः ॥
तत्कालपीलित महेक्षुरसस्य धारा ।
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान् ॥१९॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं.....इति इक्षुरसस्नपनम् !
अर्घ-उदक चन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः ॥२०॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं.....इति नालिकेरस्नपनम् ।
अर्घ-उदक चन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः ।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः ॥२१॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं.....इति आम्ररसस्नपनम् ।
अर्घ-उदक चन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण-नय-हेम-रसाभिराम—
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ।
धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां,
वन्देऽर्हतां सुरभि संस्नपनोपयुक्ताम् ॥२२॥

मंत्र–ॐ ह्रीं.....इति घृतस्नपनम् ।
अर्घ–उदक चन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दुग्धाभिषेक ४)

सम्पूर्ण–शारद–शशांकमरीचिजाल–
स्पन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यमानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥२३॥

मंत्र–ॐ ह्रीं.....इति दुग्धाभिषेकस्नपनम् ।
अर्घ उदक चन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्येष्ठजिनवर जयमाला

(भट्टारक ब्रह्मकृष्णकृत)

अमरनयरिसम नयरि अयोध्या नाभिनरेन्द्र वसे निजबुध्या ।
सुरपति मेरुशिखर ले चढिया कनक कलश क्षीरोदधि भरिया ॥
तसघर राणी मरुदेवी माया युगपति आदि जिनेश्वर जाया ।
*ज्येष्ठमास अभिषेक जु करिया अष्टोत्तर शत कुंभजु भरिया ॥
मभकत जलधारा संचरिया ललितकलोल धरणि उतरिया ।
जय जय सुरनि करी उच्चरिया इंद्रइंद्राणी सिंहासन धरिया ।
अंग अनंग विभूषण धरिया कुंडलहार हरितमणि जड़िया ।

नोट–* जिस महिनेमें अभिषेक किया जाय उस महिनेका नाम बोलना चाहिये । **यह जयमाला दुग्धाभिषेकके समय बोली जाती हैं । प्रत्येक पंक्तिके बाद 'सुरपति मेरुशिखर' वाली पंक्तिको दुहराना चाहिये ।

ऋषभ नाम शतमुखविस्तरिया कमलनयन कमलापति कहिया ॥
युगला धर्मनिवारण चरिया सुरनर निकर गंधोदक महिया ।
रत्न कचोल कुमारिनी भरिया जिनचरणाम्बुज पूजत हरिया ॥
हिम हिमांशु चंदन घनसरिया भूरि सुगंध गंध पसरयिया ।
अक्षत अक्षतवास लहरिया रोहिणिकांत किरणसम सरिया ॥
देखत रूचिकर अमरनि करिया पंचमुष्टि जिन आगे धरिया ।
सुन्दर पारिजात मोगरिया कमल बकुल पाटल कुमदरिया ॥
चरुवर दीप लेय अपछरिया जिनवर आगे उतारि उधरिया ।
अगर तगर धूप फलफलिया फणस रसाल मधुर रसभरिया ॥
कुसुमांजलि सांजलि समुजलिया पंडितराय अम्रवच कलिया ।
त्रिभुवनकीर्ति पदपंकज वरिया रत्नभूषणसूरि महापद कहिया ॥
ब्रह्मकृष्ण जिनराज स्तविया जयजयकार करी मनहरिया ।
कुंभ कलशभरि जयजिनवरिया शाश्वत धर्म सदा अनुसरिया ॥

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

(दध्याभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिचयसंचितफेनराशि–
पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव ।
दध्नांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा ।
सम्पद्यतां सपदि वांछितसिद्धये वः ॥२४॥

मंत्र–ॐ ह्रीं.....इति दधिस्नपनम् ।
अर्घ–उदकचन्दन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[सर्वौषधि ६]

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः ।
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला,
कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपुरैः ॥२५॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं ..... इति सर्वौषधिस्नपनम् ।
अर्घ-उदकचन्दन ..... अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चतुःकोणकुंभकलशाभिषेकः ७)

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानै
संसारसागरविलघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेंद्रं ।

मंत्र-ॐ ह्रीं ..... इति चतुःकोणकुम्भकलश स्नपनम् ।
अर्घ-उदकचंदन ..... अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चन्दनलेपनम् ८)

संशुद्धशुद्धया परया विशुध्या । कर्पूरसम्मिश्रितचंदनेन ।
जिनस्य देवासुरपूजितस्य । विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ।२६

मंत्र-ॐ ह्रीं ..... इति चन्दनलेपनम् करोमीति स्वाहा ।
अर्घ-उदकचंदन ..... अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पुष्पवृष्टि ९)

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद्गंधादिभिः स्वोपमा-
नन्यर्थान्सुमनोगणान्सुमनसा वर्षंति विश्वक् सदा ।
यः सिद्धि सुमनः सुखं सुमनसां स्वं ध्यायतामावह
तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनोभेदैः समभ्यर्चये ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं सुमनःसुखप्रदाय पुष्पवृष्टिं करोमि स्वाहा ।

(मंगल आरति १०)

दध्युज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण
त्रैलोक्यमंगलसुखालयकामदाहमारार्तिकं तवविभोरवतारयामि

(इति मंगल आरति अवतारणम्)

(पूर्णसुगंधितकलशाभिषेक ११)

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुःसमाढयैरामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां
त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ॥

मंत्र-ॐ ह्रीं.....इति पूर्णसुगंधितजलस्नपनम् ।
अर्घ-उदकचंदन.....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ शान्तिमन्त्राः प्रारभ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः । ॐ नमोऽर्हते भगवते । श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय । सर्वज्ञाय । स्वयंभुवे । सिद्धाय । बुद्धाय । परमात्मने । परमसुखाय । त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय । अनंतसंसारचक्र-परिमर्दनाय । अनंतदर्शनाय अनंतवीर्याय । अनंतसुखाय सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवंशकराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामंडलमण्डिताय, ऋष्या-र्यिका श्रावक-श्राविका प्रमुखचतुर्स्संघोपसर्गविनाशनाय, घाति कर्मविनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय, अपवार्यं छिंद छिंद, भिंद भिंद । मृत्युं छिंद २ भिंद २ । अतिकामं छिंद २ भिंद २ । रतिकामं छिंद २ भिंद २ । क्रोधं छिंद२

भिंद २। अग्निं छिंद २ भिंद २ सर्वशत्रुं छिंद २ भिंद २। सर्वोपसर्गं छिंद २ भिंद २। सर्वविघ्नं छिंद २ भिंद २। सर्वभयं छिंद २ भिंद २। सर्वराजभयं छिंद २ भिंद २। सर्व चोरभयं छिंद २ भिंद २। सर्वदुष्टभयं छिंद २ भिंद २। सर्वमृगभयं छिंद २ भिंद २। सर्वमात्मचक्रभयं छिंद २ भिंद २। सर्वपरमंत्रं छिंद २ भिंद २। सर्वशूल-रोगं छिंद २ भिंद २। सर्व क्षयरोगं छिंद २ भिंद २। सर्वकुष्ठरोगं छिंद २ भिंद २। सर्वक्रूररोगं छिंद २ भिंद २ सर्वनरमारीं छिंद २ भिंद २। सर्वगजमारीं छिंद २ भिंद २। सर्वोश्वमारीं छिंद २ भिंद २। सर्वगोमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व महिषमारी छिंद २ भिंद २। सर्व धान्यमारीं छिंद २ भिंद २ सर्ववृषमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व गुल्ममारीं छिंद २ भिंद २। सर्व पत्रमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व पुष्पमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व फलमारीं छिंद २ भिंद २। सर्वराष्ट्रमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व देशमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व विषमारीं छिंद २ भिंद २। सर्व वेतालशाकिनी भयं छिंद २ भिंद २। सर्ववेदनीयं छिंद २ भिंद २। सर्व मोहनीयं छिंद २ भिंद २। सर्वकर्माष्टकं छिंद २ भिंद २।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरुकुरु। सर्वं जनानंदनं कुरुकुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरुकुरु। सर्व गोकुलानन्दनं कुरुकुरु सर्वग्रामनगरखेटकर्वटमटम्बपत्तन-

द्रोणमुखमहानंदनं कुरु कुरु सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु। सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानन्दनं कुरुकुरु। सर्व दुःखं हन हन, दह दह, पच पच कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥

शिवमस्तु। कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः॥

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहार्थं गन्धोदकधारावर्षणम्)

(गन्धोदकवन्दनमंत्रः)

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशनम्।
जिनगन्धोदकं वन्दे कर्माष्टकनिवारणम्॥

इति गन्धोदकवन्दनम्॥

अथ बृहच्छान्तिमंत्राः प्रारभ्यते

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं स्वीं स्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमो अर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खंडय खंडय हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्रं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हं झं ह्वीं स्वीं हं सं झं वं वः पः हः क्षां क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम पूजकस्य (सर्वेषां पूजकानाम्) ऋद्धि वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कांतिरस्तु कल्याणमस्तु मम कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं श्रीमद्भगवतः सर्वोत्कृष्टत्रैलोक्यनाथार्चितपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु श्रीशांतिनाथो मां प्रति प्रसिदतु, श्रीवीतरागदेवो मां प्रति प्रसिदतु, श्रीजिनेन्द्र-परममांगल्यनामधेयो ममेहामुत्र च सिद्धि तनोतु,

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चिंतामणी-पार्श्वतीर्थंकराय रत्नत्रयरूपाय अनन्तचतुष्टयसहिताय धरणेंद्रफणामण्डलमण्डिताय समवशरणलक्ष्मीशोभिताय इन्द्रधरणेंद्रचक्रवर्त्यादि--पूजितपादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मी--शोभिताय जिनराजमहादेवाय अष्टादशदोषरहिताय षट् चत्वारिंशत्गुणसंयुक्ताय परमगुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यपरमेश्वराय देवाय सर्वसत्वहितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्यापरमेश्वराय त्रैलोक्यमोहनाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय अनेकदैत्यदानवकोटिमुकुटघृष्टपादपीठाय ब्रह्माविष्णुरुद्रनारदखेचरपूजिताय सर्वभव्यजनानन्दकराय सर्वरोगमृत्युघोरोपसर्गविनाशाय सर्वदेशग्रामपुर पट्टनराजा-प्रजाशांतिकराय सर्वजीवविघ्ननिवारणसमर्थाय श्रीपार्श्वदेवाधिदेवाय नमोस्तु श्रीजिनराजपूजन-

प्रसादात् सर्वसेवकानां सर्वदोषरोगशोकभयपीडाविनाशनं कुरु कुरु सर्वशांति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो श्री शांतिदेवाय सर्वारिष्टशांतिकराय हां हीं हूं हौं हौं हः अ सि आ उ सा मम सर्व विघ्नं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा, मम तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथपूजनप्रसादात् मम अशुभानि पापानि छिंद २ भिंद २ मम परदुष्टजनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छलछिद्रदोषान् छिंद २ भिंद २ मम अग्निचोर जलसर्व-व्याधि छिंद २ भिंद २ मारीकृतोपद्रवान् छिंद २ भिंद २ सर्वभैरवदेवदानव वीरनरनारिसिंहयोगिनी कृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, डाकिनी शाकिनी-भूत भैरवादिकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, भवनवासीव्यन्तर-ज्योतिषीदेवदेवीकृत-विघ्नान् छिंद २ भिंद २, अग्निकुमारकृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, उदधिकुमारस्तनितकुमारकृतविघ्नान् छिंद २, भिंद २, द्वीपकुमार-दिक्कुमारकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, वातकुमारमेघकुमारकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, इन्द्रादि-दशदिक्पालदेवकृतविघ्नान् छिंद छिंद भिंद भिंद। जय-विजय—अपराजित मणिभद्र—पूर्णभद्रादि क्षेत्रपालकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, राक्षस वेताल—दैत्य—दानवयक्षादिकृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, नवग्रहकृत सर्वग्रामनगरीपीडां छिंद २ भिंद २, सर्वग्राम नगर देशमारीं रोगान् छिंद २ भिंद २, सर्व स्थावरजंगम वृश्चिकदृष्टिविष-

जातिविष सर्पादिकृत दोषान् छिंद २ भिंद २, सर्वसिंहअष्टापदव्याघ्रव्यालवनचर जीव भयान् छिंद२ भिंद २, परशत्रुकृत–मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन–वशीकरणादिदोषान् छिंद२ भिंद २, सर्व देशपुरमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वराजनरमारीम् छिंद २ भिंद २, सर्व हस्ति-घोटकमारीं छिंद २ भिंद २, ॐ भगवती श्रीचक्रेश्वरी ज्वालामालिनी कूष्मांडिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्रभवने आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ बलिं ग्रहाण २ मम धनधान्यसमृद्धिं कुरु २ सर्व भव्यजीवानन्दनं कुरु २ सर्व देशग्रामपुरमध्ये क्षुद्रोपद्रवसर्व दोषमृत्युपीडाविनाशनं कुरु२ सर्वपरभयनिवारणं कुरु२ स्वाहा

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीवृषभादि वर्धमानांत चतुर्विंशति तीर्थंकरमहादेवाः प्रियंतां २, मम पापानि शाम्यंतु घोरपसर्गाणि सर्वविघ्नानि शाम्यंतु ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीचक्रेश्वरीज्वालामालिनी कूष्मांडि पद्मावती देवी प्रियंताम् २, ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री रोहिण्यादि-महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्वदेवताः प्रियंताम् २, ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमारदेवाः प्रियंताम् २, सर्वे जिनशासन-रक्षकदेवाः प्रियंताम् २ श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहदेवाः प्रियंताम् २ प्रसीदन्तु ।

देशस्य राष्ट्रस्य राज्ञः करोंतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ।
यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितं ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु मम सदा ।
यस्यार्थं क्रियते कर्म स प्रीतो नित्यमस्तु मे ।

शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ॥
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।
प्रध्वस्त घातिकर्माण केवलज्ञानभास्कराः
कुर्वन्तु जगत शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥

॥ इति शांतिधारा ॥

गन्धोदक लेनेका श्लोक

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं ।
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी–राज्याभिषेकोदकम् ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलता–संवृद्धिसम्पादकम् ।
कीर्ति-श्री जयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गंधोदकम् ॥

(चन्दन चढ़ानेका श्लोक)

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्ति-समस्तसत्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्रीचंदननैर्गंधविलुब्धभृंगै-र्जिनेन्द्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प चढ़ानेका श्लोक :

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान् वर्यान् सुचर्यान् कथनैकधुर्यान्
कुन्दारविंदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने कामबाण-विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ इति अभिषेकपाठ ॥

लघु अभिषेक पाठ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः

पणविवि पंचपरमगुरु गुरु जिन शासनो,
सकल सिद्ध दातार सुविघन विनाशनो ।
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो,
मङ्गल कर चउ संघहि पाप पणासनो ।।

पापहि पणासन गुणहि गरुआ, दोष अष्टादश–रहिउ ।
धरि ध्यान कर्मविनाशि केवल-ज्ञानी अविचल जिन लहिउ ।।
प्रभु पंचकल्याणक विराजित सकल सुर-नर ध्यावहीं ।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ।।१।

उदक-चन्दन-तंदुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे पंचकल्याणमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं भगवानके गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पञ्च-कल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभिषेक पाठ

श्री तुम मज्जिनेन्द्र तुम चरण नख, नव्य कंज हित सूरि ।
विघ्न–शिलोच्चय दलत पवि, नमूं हरण भव भूरि ।।१।।
आप्त–वदन–उद्भव–वचन, हितमित विशद प्रमाण ।
दृष्ट इष्ट अविरोध कृत, जिनवाणी दुःखखान ।२।।
निरारम्भ परिग्रह रहित विजय–वासनातीत
ज्ञान–ध्यान–तप–रत मुनी, सहज जगतजन मीत ।३।

तदाकार प्रतिबिम्बको प्रथम कहो अभिषेक ।
तातैं विधि अभिषेककी, योग्य रचों सविवेक ॥४॥

इति अभिषेक प्रतिज्ञां कृत्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

दोहा—प्रणव आदि जय जय उचरि, नमन ठानि पढ़ि मंत्र ।
मंगल उत्तम शरण गहि, स्वस्तिक लिखहूं स्वतंत्र ॥

अथ मंत्र पाठ

ॐ जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

अनादि मूल-मंत्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलि क्षेपण करना)
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं, । चतारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंत शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ॥

ॐ नमो अर्हते स्वाहा । (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशकं ।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतं ॥

मत्तगयन्द छन्द

श्री जिननो पदपंकजको नमि नित्य सही विधि न्होंन प्रसारैं।
ताहित सन्मुख तिष्ठत उज्वल द्रव्य सुधार यहां विस्तारैं॥
कंचन पीठक पैं करि स्वस्तिक पुष्प सुगंधित धोकरि डारैं।
तामधि तोय शिवालय-नायक हो अभिषेक हितार्थ सुधारैं।

ॐ ह्रीं सिंहपीठे जिनबिम्बं स्थापयाम्हम् ॥

नीर महाशुचि गंधक चन्दन अक्षत पुष्प सु ले अनियारे।
व्यंजन सजुत ले चरू उत्तम दीप धूप फल अर्घ सु धारे॥
यों वसु द्रव्य तनों करि अर्घा उतारि-उतारि यजों पद थारे।
द्यो मुझ शीघ्र शिवालय वास सदा हम भव्य उबारन बारे॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठे स्थित-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम और अकृत्रिम बिम्ब सनातन राजत श्री जिन तेरे।
तास तनी इन्द्र उपासन ठानत भानत कर्म करे रे।
क्षीर समुद्र नदी नद तीरथ तास तनों जल प्रासुक हरे।
कंचन कुंभ भरे परिपूरण ल्याय यथाक्रम उत्थित टेरे॥१॥
कर्मजंजीर जरयो यह जीव शुभाशुभ भोगत ज्ञान न पायो।
पै अब कालसुलब्धि प्रसाद लह्यो तब दर्शन आनन्द आयो॥
हो तुम कर्मकलङ्क-विनाशक प्रेम तउ इत प्रेरित लायो।
हो गुनकार करौं अभिषेक वरों शिवनारि समय अब आयो॥
यों कहि दीप चहों दिशि जोय कियो बहु धुमसु धूपक केरो।
बाजत ताल सुवीन मृदङ्ग शची पुनि नाचत भाव सु टेरो॥

जय जिनराज इतीश उचारि कियो अभिषेक जिनेश्वर तेरो ।
तासम शक्ति प्रमाण यहां हम ठानत भानत कर्म करेरो ।३।

ॐ ह्रीं शुद्धोदकेन जिनाभिषेक करोम्यहम् ।

यों अभिषेक कियो अब पूरण पूजनके हित अर्घ सुधारो ।
तीरथ को जल प्रासुक चन्दन अक्षत अक्षत पुष्प सुप्यारो ।
ले चरु दीपक उत्तम धूप फलार्घ करों वर मंत्र उचारो ।
वार धरो तुव चरणनके ढिग हो जिन तारक मोहिं उबारो ॥

ॐ ह्रीं अभिषेकोत्सवसमये श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

या उपरात शचीपती आदिक सर्व सुरासुर स्तोत्र उचार्यो ।
हो तुम नाथ अनाथनिके पुनि मोहमहाभट उद्धत मार्यो ॥
मैं जगजाल फंस्यो बहुदुःख सह्यो नहिं जात भयो दुखियारो
हो करुणानिधी जाननहार तुम्हीं समरत्थ मुझे अब त्यारो ॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं परिक्षिपेत् ।

तीन प्रदक्षिण दे शिरनाय शचीपति आदिक सर्व सुरेशा ।
ले चरणोदक शीश धर्यो सुरनाथ प्रभुति जु नाग नरेशा ॥
मैं धरि ध्यान प्रदक्षिण देय नमूं तुवपाद जिनेश महेशा ।
हो तुव पाद प्रसाद-तकीमम मोक्ष महाफल शीघ्र विशेषा ॥

इति प्रदक्षिणां दत्वा नमस्कारं च कृत्वा जिनगंधोदक शिरसि धारयाम्यहम् ।

ले शुचि उज्वल स्वर्ग समुद्भव वस्त्र अलौकिक हस्त मंझारे ।
तव तन ऊपर नीर निहार शचीपती मार्जनको विस्तारे ॥
पुलकित सहस्र-नमनकरि मघवा निरखत पावनरूप तिहारे ।
धन्य धन्य जिनराज लोकमें वसुविध कर्म जलावन हारे ॥

इति पठित्व जिनबिम्बस्य सम्मार्जनम् करोम्यहम् ।

दोहा—माजन करि वेदी विषै, सिंहासन परि थापि।
प्रातिहार्ययुत निरख जिन, यजन करो गुन जापि॥

॥ पुष्पांजलिं ॥

लघु पंचामृताभिषेक भाषा

शुद्ध घृत--दुग्ध आदिसे पंचामृत अभिषेक करना हो तो यह पाठ बोलना अथवा पंचामृतके अभावमें सिर्फ जलधारासे काम लेना।

दोहा—श्री जिनवर चौवीस वर, कुनयध्वांतर भान।
अमितवीर्य दृगबोधसुख—युत तिष्ठो इहि थान॥

नाराच छन्द :

गिरीश शीश पांडुपै, सचीश इश थापियो
महोत्सवो अनन्दकन्दको, सबै तहां कियो॥
हमैं सो शक्ति नाहिं व्यक्त देखि हेतु आपना।
यहां करैं जिनेन्द्रचन्द्रकी सुबिंब थापना॥

पुष्पांजलिं क्षेपणकर श्रीवर्णपर जिनबिम्बकी स्थापना करें।

कनकमणिमय कुम्भ सुहावने, हरि सुक्षीर भये अति पावने।
हम सुवासित नीर यहां भरैं, जगतपावन पाय तरैं धरैं।३।

पुष्पांजलिं क्षेपणकर वेदीके कोनोंमें चार कलश स्थापना करें।

शुद्धोपयोग समान भ्रमहर, परम सौरभ पावनो।
आकृष्ट भृङ्ग समूह गंग—समुद्भवो अति भावनो॥
मणिकनककुम्भ निसुम्भकिल्विष, विमल शीतल भरि धरौं।
श्रम स्वेद मल निरवार जिन त्रय धार दे पांयनि परो ४।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य जलेनाभिषिंचये।

अति मधुर जिनधनि सम सुप्राणित प्राणिवर्ग सुभावसों ।
बुधचित्तसम हरिचित नित, सुमिष्ट इष्ट उछावसों ।
तत्काल इक्षुसमुत्थ प्रासुक रतनकुम्भ विषै भरौं ।
यम त्रास ताप निवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं ।५।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य इक्षुरसेनाभिषिंचये ।

निस्तप्त-क्षिप्त-सुवर्ण-मद-दमनीय ज्यौ विधि जैनकी ।
आयुप्रदा बलबुद्धिदा, रक्षा सु यों जिय सैनकी ।
तत्काल मन्थित क्षीर उत्थित, प्राज्य मणिझारी भरौं ।
दीजे अतुलबल मोहि जिन, त्रय धार दे पांयनि परौं ।६।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य घृतेनाभिषिंचये ।

सरदभ्र शुभ्र सुहाटकद्युति, सुरभि पावन सोहनो ।
क्लीवत्वहर बल धरन पूरन पय सकल मनमोहनो ।
कृतउष्ण गोथनतै समाहृत घट जटितमणि मैं भरौं ।
दुर्बल दशा मो मेट जिन त्रय धार दे पांयनि परौं ।७।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य दुग्धेनाभिषिंचये ।

वर विशद जैनाचार्य ज्यो मधुराम्लकर्कशता धरैं ।
शुचिकर रसिक मन्थन विमन्थन नेह दोनों अनुसरैं ।
गोदधि सुमणिभृंगार पूरन लायकर आगे धरौं ।
दुखदोष कोष निवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं ।८।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य दध्यानाभिषिंचये ।

सर्वोषधी मिलायके भरि कंचन भृङ्गार ।
जजौ चरण त्रय धार दे, तारतार भवतार ।९।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं सकलकर्मक्षयार्थं अद्य सर्वौषधिभ्यामभिषिंचये ।

विनय पाठ

दोहा—इह विधि ठाडो होयके प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्तिवधूके कंत तुम, तीन भुवनके राज ॥२॥
तिहुँ जगकी पीडा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिव सुखके करतार ॥३॥
हरता अघ—अंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निज गुण राश ॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसो, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुँ जग भूप ॥५॥
मैं वन्दौ जिनदेवको, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछू उपाव ॥६॥
भविजनको भवकूप तें, तुमही काढनहार।
दिनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार ॥७॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल।
सरल करी या जगतमें, भवि जनको शिव गैल ॥८॥
तुम पद पङ्कज पूजते, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजनसे तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषै तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥१३॥
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग मेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
तुमको पूजे सुरपति, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भवसिंधु में, खेओ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो बिरद निहारकै कीजे आप समान ॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हा हा डुब्यो जात हो, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों तो न मिटे उरभार ।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौ पुकार ॥२०॥
वन्दौ पांचो परम गुरु सुर गुरु वन्दत जास ।
विघन हरन मंगल करन, पुरन परम प्रकाश ॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥२२॥
मंगल मूर्ति परम पद पंच धरों नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्वका मंगलमय भगवान ।२३॥
मंगल जिनवर पद नमो मंगल अर्हंत देव ।
मंगलकारी सिद्धपद सो वंदो स्वमेव ।२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो वंदो मन बच काय ।२५॥
मंगल सरस्वती मात का मंगल जिनवर धर्म ।
मगलमय मंगल करो हरो असाता कर्म ।२६॥
या विधि मंगल करनेसे जगमें मंगल होत ।
मंगल 'नाथुराम' यह भवसागर दृढ़ पोत ।२७॥

॥ पुष्पांजलि क्षेपण करे ॥

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।१॥
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलि क्षेपण करना)
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं, । चतारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली-पण्णत्तो

धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।१॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः ।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ॥३॥
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।५॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।७॥

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढकर एक अर्घ चढावें)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-सहस्रनामेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ स्वस्ति मंगल ॥

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायकमनंत-चतुष्टयार्हम् । श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतुर्जैनेंद्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥९॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय । स्वस्तिप्रकाश सहजोर्जितदृ ंङ मयाय, स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय ।१०॥ स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय, स्वस्ति त्रिलोक-विततैकचिदुद्गमाय स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय ॥११॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः । आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्, भूतार्थयज्ञ- पुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥१२॥ अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव । अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ, पुण्यं समग्रमहं मेकमना जुहोमि । १३॥

ॐ ह्रीं विविधयज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

श्री वृषभो नमः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांन्तिः ।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलोधाः स्फुरन्मन पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।१

(यहांसे प्रत्येक श्लोकके अन्तमें पुपांजलि क्षेपण करना चाहिये ।)

कोष्ठस्थ–धान्योपममेकबीजं संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।२
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा दास्वादनाघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।३
प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।४
जङ्घावलि–श्रेणि–फलाम्बु–तंतु–प्रसूनबीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।५
अणिम्नि दक्षाकुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताःकृतिनोगरिम्णि
मनोवपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।६
सकामरुपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।७

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः । ८
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषाश्च ।
सखिल्ल-विड्-जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुरस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवासमहानशाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः । १०

(इति पुष्पांजलि) [इति परम-ऋषिस्वस्ति मगल विधान]

देव—शास्त्र—गुरु—पूजा (भाषा)

(कवि द्यानतराय कृत)

अडिल्ल छंद-प्रथम देव अरिहन्त सुश्रुत सिद्धांतजू ।
गुरु निग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पंथजू ।
तीन रतन जग माहिं सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइये ॥१॥

दोहा—पूजों पद अरिहन्तके, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह ! अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

॥ गीता छन्द ॥

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपद प्रभा ।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्जवल देख छवि मोहित सभा ।
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा–मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व० ।

जे त्रिजग उदर मंझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ।
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन, सरस चंदन घसि सचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा–चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु बीन ॥२॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो संसार-ताप विनाशनाय चंदनं निर्व० ।

यह भवसमुद्र अपार तारणके निमित्त सुविधि ठई ।
अती दृढ परमपावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही ॥
उज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा–तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥३॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व० स्वाहा ।३।

जे विनयवंत सुभव्य उर, अम्बुज प्रकाशन भान है ।
जे एक मुख चारित्र भाषित, त्रिजग माहिं प्रधान है ॥
लहि कुंद कमलादिक पहुँप, भव भव कुवेदन सों बचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥४॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अति सबल मद कंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको, सु गरुड़ समान है॥
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेधकरि घृत में पचूं।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रंथ नित पूजा रचूं॥

दोहा—नाना विधि संयुक्तरस, व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।५॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जे त्रिजग उद्यम नाश किने, मोहतिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश ज्योति प्रभाबली॥
इह भांति दीप प्रजाल, कंचनके सुभाजनमें खचूं।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—स्वपर प्रकाशक ज्योति अति दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ।६॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र गुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा

जो कर्म—ईंधन दहन अग्नि, समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंध ताकरि, सकल परिमलता हंसै॥
इह भांति धूप चढाय नित, भवज्वलन माहीं नहिं पचूं।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—अग्नि माहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।७।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा ।।७।।

लोचन सु रसना घ्राण उर, उत्साहके करतार है ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।

दोहा—जे प्रधान फलविषै, पञ्चकरण रस लीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।८।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा ।।८।।

जल परम उज्जवल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरु ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनमके पातक हरूं ।।
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ।

दोहा—वसुविधी अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ।९।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा ।।९।।

।। अथ जयमाला दोहा ।।

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहूँ आरती अल्प सुगुण विस्तार ।।१।।

।। पद्धरि छन्द ।।

चौ कर्मसु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि ।
जे परमसुगुण है अनंत धीर, कहवतके छयालिस गुण गंभीर ।।

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीसधार।
देवाधिदेव अरिहंत देव, वन्दों मन-वच-तनकरि सुसेव ।।३।।

जिनकी धुनि ह्वै ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।
दशअष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ।।४।।

सो स्याद्वादमय सप्त भङ्ग गणधर गूंथे बारह सु अङ्ग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय सोशास्त्र नमो बहु प्रीति ल्याय ५

गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतनत्रय निधि अगाध
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपै शिवपद निहार ६।।

गुण छत्तिस पचिस आठ बीस, भवतारण-तरन जिहाज ईस।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मन-वचन-काय ७

सोरठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति विना श्रद्धा धरै।
'द्यानत' श्रद्धावान, अजर अमरपद भोगवे ।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस तीर्थङ्कर भाषा पूजा

दोहा- दीप अढाई मेरू पन, अरू तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूँ, मनवचतन धरि शीस ।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थङ्कराः अत्र अवतर२ संवौषट् स्थापनं
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंङ्कराः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारि।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी ॥
क्षीरोदधि सम नीरशों, (हो) पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार ॥
श्री जिनराज हो भवतारण तरण जहाज ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

इस पूजामें बीस पुंज करना हो तो, इस प्रकार मंत्र बोलना

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु--संजातक--स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजङ्गम-ईश्वर नेमिप्रभ वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजित-वीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थङ्करेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति ।

तीन लोकके जीव, पाप आताप सताये ।
तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये ॥
बावन चंदन सों जजू, (हो) भ्रमण तपत निरवार। सीमंधर

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवताप-विनाशनाय चंदनं नि.

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी ।
तातें तारे बड़ी भक्ति नौका जगनामी ॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार । सीमंधर आ.

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व०

भविक-सरोज विकास, निंद्य-तमहर-रवि से हो।
जति श्रावक आचार, कथनको तुमही बड़े हो ॥
फुल सुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार । सीमंधर ४

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

काम नाग विष धाम, नाशको गरूड कहे हो।
क्षुधा महादव-ज्वाल, तास को मेघ लहे हो॥
नेवज बहु घृत मिष्टसो (हो) पूजों भूख विडार। सीम.॥५

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.

उद्यम होन न देत सर्व जग माहिं भरयो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश करयो हैं।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञान-ज्योति करतार। सीम. ६

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनि कर प्रकट सर्व किनो निरवारा॥
धूप अनूपम खेवते (हो) दुःख जलै निरधार। सीम. ॥७

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ॥७

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिन में जीत जैन के मेरू खरे हैं॥
फल अति उत्तमसों जजो (हो) वांछित फल दातार। सी.।८

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ।८

जल फल आठों दरव अरघ कर प्रिति धरी है।
गणधर इन्द्रनहु तै थुति पूरी न करी है॥
द्यानत, सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार॥ सीम.॥९

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० ।९

॥ अथ जयमाला ॥

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चन्द, भविक--खेत--हित मेघ हो ।
भ्रम-तम भान अमन्द, तीर्थङ्कर बीसों नमों ॥

॥ चौपाई १६ मात्रा ॥

सीमन्धर सीमन्धर स्वामी, जुगमन्धर जुगमन्धर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥१
जात सुजात सुकेवल--ज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं अनन्त वीरज वीरज कोषं ॥२
सौरी प्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
वज्रधार भव-गिरिवज्रा हैं चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं । ३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता, श्री भुजङ्गभुजङ्गम हरता ।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजै, नेमिप्रभु जस नेमि विराजे ॥४॥
वीरसेन वीरं जग जानैं महाभद्र महाभद्र बखानैं ।
नमों जसोधर जसधरकारो नमों अजित-वीरज बलधारो ॥५
धनुष पांचसै काय विराजै आयु कोडिपूरव सब छाजै ।
समवसरण शोभित जिनराजा, भव-जलतारन तरन जिहाजा ।६
सम्यक् रत्नत्रयनिधिदानी, लोकालोक-प्रकाशक ज्ञानी ।
शतइन्द्रनिकरि वंदित सोहैं, सुरनर पशु सबके मन मोहैं ।७
दोहा—तुमकों पुजैं वन्दना, करे धन्य नर सोय ।
'द्यानत' श्रद्धा मन धरैं सो भो धर्मी होय ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व० ।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

श्री देव-शास्त्र गुरु विदेह क्षेत्रस्थ श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर
तथा श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठीकी

समुच्चय पूजा

दोहा—देव-शास्त्र गुरु नमन करि, बीसतीर्थंकर ध्याय ।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह ! श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह ! श्री अनन्तानंत ! सिद्धपरमेष्ठी समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव भषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टकं

(चाल-करले करले तू नित प्राणी, श्रीजिन पूजन करले रे)

अनादिकालसे जगमें स्वामी जलसे शुचिताको माना ।
शुद्ध निजातम सम्यक्, रत्नत्रय निधिको नहीं पहिचाना ॥
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं ॥ जलं ।१
भव आताप मिटावनकी, निजमें हो क्षमता समता है ।
अबतक मैंने, परमें की झूठी ममता है ॥
चन्दन सम शीतलता पाने श्री देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं ।चंदनं ।२
अक्षय पदके बिना फिरा जगकी लख चौरासी योनीमें ।
अष्ट कर्मके नाश करनको, अक्षत तुम ढिग लाया मैं ॥
अक्षय निधि निजकी पाने अब देव-शास्त्र गुरुको ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं ।अक्षतं ।३

पुष्प सुगन्धीसे आतमने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणोंसे बिंद करके चहुँ गति दुःख उपजाया है॥
स्थिरता निजमें पानेको, श्री देव-शास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं।पुष्पं।४

षट रस मिश्रित भोजनसे, ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतम रस अनुपम चखनेसे, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।
भूख सर्वथा मेटनको श्री देव-शास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं नैवेद्यं।५

जड़ दीप विनश्वरको अबतक, समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीपसे, मिटा मोहका अंधियारा॥
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं। दीपं।६

ये धूप अनलमें खेने से कर्मोंको नहीं उलायेगी।
निजमें निजकी शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी॥
उस शक्तिदहन प्रकटानेको, श्री देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं। धूपं ७

पिस्ता बदाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया॥
आतमरस भीने निजगुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया॥
अब मोक्ष महाफल पानेको श्री देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं। फलं।८

अष्टम वसुधा पानेको करमें ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकतासे निजमें निज गुण प्रगट किये॥
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देवशास्त्र गुरुको ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभुके गुण गाऊं। अर्घं।९

॥ जयमाला ॥

नशे घातिया कर्म अर्हन्त देवा, करैं सुरअसुर नर मुनि नित्य सेवा। दरश ज्ञान सुख बल अनंतके स्वामी, छियालीस गुणयुक्त महाईश नामी। तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्षदानी। अनेकान्त मय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैन वाणी॥ विरागी अचारज उवज्झाय साधु दरश, ज्ञान भंडार समता अराधूं। नगन वेशधारी सु एका बिहारी निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी। विदेह क्षेत्रमें तीर्थंकर बीस राजे, विरहमान बन्दूं सभी पाप भाजें। नमूं सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी अनाकुल समाधान सहजाभिरामी॥

छन्द।

देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तरले रे॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यः श्री विद्यमान-विंशति तीर्थंकरेभ्यः अनन्तानन्त-सिद्ध परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति।

तीस चौबीसीका अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है।
पूजता पाप छीना है, 'भानुमल' जोर कीना है।
दीप अढाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषे छाजै।
सात सत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्रके विषै तीस चौबीसीके सातसौ बीस जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरोका अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु--संजातक--स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजङ्गम-ईश्वर नेमिप्रभ वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजित-वीर्यंति विंशति-विद्यमान तीर्थङ्करेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति।

कृत्रिम व अकृत्रिम चैत्यालयोके अर्घ

कृत्याकृत्रिम-चारु-चैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वन्दे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्।
सद् गन्धाक्षत-पुष्पदाम चरुकैः, स दीप-धूपैः फलैः।
द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्माणां शान्तये॥१॥

ॐ ह्रीं कृतिमाकृत्रिमचैत्यालय-संबंधिजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्व०।

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु।
यावंति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वन्दे जिनपुंगवानां॥२

अवनि–तल–गतानां कृतिमाकृत्रिमाणां,
वन–भवन–गतानां दिव्य वैमानिकानाम् ।
यह मनुज–कृतानां देवराजार्चितानां.
जिनवर-निलयनां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥

जम्बू-घातकी-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षेत्र-त्रये ये भवाः
चन्द्रांभोज-शिखंडि-कण्ठ-कनक-प्रावृड्घनाभाजिनाः ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण धरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः,
भूतानागत-वर्तमान समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बूवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रूचिके कुण्डले मानुषांके ।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥५

द्वौ कुन्देकुन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्र-नील-प्रभौ ।
द्वौ बन्धूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगु प्रभौ ।
शेषाः षोडश-जन्ममृत्युरहिताः सन्तप्त हेम-प्रभाः
स्ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः ॥

णवकोडिसया पणवीसा तेपण लक्खाण सहसत्ताइसा ।
नी सेते अडियाला, जिण पडिमा किट्टिमा वन्दे ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक-सम्बन्धि कृत्रिम-अकृत्रिमचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि०

इच्छामिभंते ! चेइयभक्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय–उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि

जाणि जिनचैइयाणि ताणि सव्वाणि तीसु वि लोयेसु भवण-वासिय-वाण-विन्तर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्येण, फुप्फेण दिव्वेण-धूवेण दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण, वासेण, दिव्वेण ह्राणेण णिच्च-कालं अच्चन्ति पुज्जन्ति वंदन्ति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वन्दामि णमस्सामि । दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाधिमरणं जिनगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्लिक* देववन्दनायां पूर्वाचार्यानक्रमेण सकल-कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वंदना स्तव समेतं श्री सिद्धभक्ति कार्योत्सर्ग करोम्हम् ।

ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

(यहांपर नौ बार णमोकार मंत्रका जाप्य करना चाहिये)

अथ सिद्ध पूजा द्रव्याष्टक

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुज-दलं तत्सन्धि-तत्त्वान्वितं ॥

---

* नोट-अगर दोपहरको पूजन करें तो पौवाह्लिकके स्थान पर मध्याह्लिक और सायंकाल करें तो अपराह्लिक बोलना चाहिये ।

अन्तःपत्र-तटेष्वनाहतयुतं हींकार-संवेष्टितं ।
देवं ध्यायति यः स मुक्ति-सुभगो वैरीभ-कण्ठीरवः ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

निरस्त-कर्म सम्बन्धं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम् ॥१॥ (पुष्पांजलिं)

जिन त्यागियोंको बिना द्रव्य चढाये भावोंके द्रव्योंसे ही पूजा करना हो वे आगेसे भावाष्टकको बोलकर करे । अष्ट-द्रव्यसे पूजा करनेवालोंको भाव पूजाका अष्टक कदापि नहीं बोलना चाहिये ।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म गम्यं, हान्यादि-भाव रहितं भव-वीत-कार्यं । रेवापगा-वरसरो-यमुनोद्भवानां नीरैर्यजे कलशगैर्वर--सिद्धचक्रम् ॥१

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं० ।

आनंद-कन्द-जनकं-धन-कर्ममुक्तं, सम्यक्त्व-शर्म-गरिमं जननार्ति वीतं । सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दनानां, गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्व० ।

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं सिद्धं स्वरूप-निपुणं कमलं विशालं। सौगन्ध्य--शालि-वनशालि--वराक्षतानां, पुंजैर्यजे शशि--निर्भैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं।

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादि-संज्ञं, द्रव्यानपेक्षमृतं मरणाद्यतीतम्। मन्दार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमवर—सिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं०

ऊर्ध्व—स्वभाव-गमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगनावभासम्। क्षीरान्न-साज्य वटकैं रस-पूर्ण-गर्भै-नित्यं यजे चरुवरैर्वर, सिद्ध-चक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं

आतंक-शोक-भय रोग-मद-प्रशांतं, निर्द्वन्द्वभाव-धरणं महिमानिवेशं। कर्पूर-वर्ति-बहुभिः कनकावदातैर-दीपैर्यजे रूचिवरैर्वर, सिद्धचक्रम् ।६॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतयेसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं

पश्यन्समस्त भुवन युगपन्नितांतं, त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविडप्रदीपम्। सद्द्रव्य-गंध-घनसार-विमिश्रितानां, धूपैर्यजे परिमलैर्वर सिद्धचक्रम् ॥७॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

सिद्धासुराधिपति-यक्ष-नरेंद्र-चक्रे-ध्येयं शिवं सकल-भव्य जनैः सुगंद्यम्। नारंगिपुग-कदली फल-नारिकेलः, सोऽहं यजे वरफलैर्वर सिद्धचक्रम् ॥८॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

गंधाढ्यं सुपयो मधुव्रत–गणैः संगं वरं चंदनम् ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षत–चयं रम्यं चरुं दीपकम् ॥
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ९॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं

ज्ञानोपयोग-विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म-स्वभाव–परमं
यदनंतवीर्यं । कर्मौघ-कक्ष दहनं-सुख शस्य बीजं वन्दे
सदा निरुपमं वर सिद्धचक्रम् ।१०।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

त्रैलोक्येश्वर-वंदनीय चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतां ।
यानाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनसः संतोऽपि तीर्थंङ्कराः ॥
सत्सम्यक्त्व विबोध-वीर्य-विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै ।
युक्तांस्तादिनिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥

(पुष्पांजलि)

॥ अथ जयमाला ॥

विराग सनातन शांत निरंश निरामय निर्भय निर्मल हंस
सुधाम बिबोध-निधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ।१
विदूरित संसृति-भाव निरंग, समामृत-पूरित देव विसंग ।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ।२
निवारित-दुष्कृत कर्मविपाश, सदामल-केवल-केलि-निवास ।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ।३
अनंत सुखामृत सागर धीर, कलंक-रजोमल भूरि-समीर ।
विखंडितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ।४

विकार-विवर्जित-तर्जित-शोक, विबोध-सुनेत्र-विलोकित-लोक
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ५
रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरन्तर नित्य सुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।६
नरभर वन्दित निर्मल-भाव अनंत-मुनीश्वर-पूज्य विहाव।
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।
विदम्भ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापर शंकर सार वितिन्द्र
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।८
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार।
अचिंत्य-चरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।९
विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।१०
(घत्ता)-असमय-समयसारं चारूचैतन्यचिह्नं पर-परणति-मुक्तं
पद्मनन्दीन्द्र—वंद्यं। निखिल-गुण-निकेतं सिद्धचक्र विशुद्धं
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥११॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घं।

अथाशीर्वादः।

अडिल्ल छन्द।

अविनाशी अविकारं परम रस-धाम हों।
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवन्त हो ॥१॥

ध्यान अग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजन देव सरूपी ह्वै रहें।
ज्ञायकके आकार ममत्व निवारिकै,
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकै ॥२॥

दोहा—अविचल-ज्ञान-प्रकाशतैं, गुण अनन्तकी खान।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥
अविनाशी आनंदमय, गुण पूरण भगवान।
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ ज्ञान ॥३॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सिद्ध पूजाका भावाष्टक

निज-मनो-मणि-भाजन-भारया, सम-रसैक, सुधा रस-धारया।
सकल-बोध-कला-रमणीयकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ।जलं।
सहज-कर्म कलंक-विनाशनैरमल भाव-सुवासित-चन्दनैः।
अनुपमान-गुणावलि-नायकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ।चंदनं
सहज-भाव-सुनिर्मल तंदुलैः, सकल दोष विशाल-विशोधनैः।
अनपरोध सुबोध-निधानकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ।अक्षतं
समयसार-सुपुष्प सुमालया, सहजकमकरेण विशोधया।
परम-योग-वलेन-वशीकृतं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ।। पुष्पं
अकृत-बोध-सुदिव्य-नैवेद्यकैर्विहित-जाति-जरा-मरणांतकैः।
निरवधि-प्रचुरात्म गुणालयं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ।नैवेद्यं
सहज रत्न-रूचि-प्रतिदीपकैः,रूचिविभूति-तमः प्रविनाशनैः।
निरवधि-स्वविकास-प्रकाशनं ,सहज-शिद्धमहं परिपूजये ।दीपं

निज-गुणाक्षय-रूप-सुधूपनैः, स्वगुणघाति-मल-प्रविनाशनैः।
विशद-बोध सुदीर्घ-सुखात्मकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये। धूपं
परम-भाव-फलावलि-सम्पदा, सहज-भाव-कुभाव विशोधया।
निज-गुणा-स्फुरणात्मनिरञ्जनं, सहज सिद्धमहं परिपूजये। फलं
नेत्रोन्मीलि-विकास-भाव-निरतैरत्यन्त बंधाय वै।
वार्गंधाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकैः सदीप-धूपैः फलैः॥
यश्चिंतामणी-शुद्ध-भाव-परम-ज्ञाना-मकैरर्चयेत ।
सिद्धं स्वादुमगाध-बोधमचलं संचर्ययामो वयं ॥९॥ इति।

सिद्ध पूजा भाषा

अडिल्ल छन्द

अष्ट करम करि नष्ट अष्ट गुण पायकैं
अष्टम वसुधा माहिं विराजै जायकैं
ऐसे सिद्ध अनन्त महन्त मनायकैं
संवौषट आह्वान करूं हरषायकैं।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर २ संवौषट् स्थापनं।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द त्रिभंगी।

हिमवनगत गंगा आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा।
आनिय सुरसंगा सलिल सुरंगा, करि मन चंगा भरिभृङ्गा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अन्तरजामी अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी सिद्धजजामी सिरनामी॥

ॐ ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्दन लायो कर्पूर मिलायो. बहु महकायो मनभायो।
जलसंग घसायो रंगसुहायो, चरण चढ़ायो हरषायो। त्रि.२
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥
तन्दुल उजियारे शशिदुतिटारे, कंमल प्यारे अनियारे।
तुषखंड निकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिग धारे।त्रि.३
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥
सुरतरुकी बारी, प्रतिविहारी किरिया प्यारी गुलजारी।
भरि कंचन थारी फुलसंबारी, तुम पद धारी अतिसारी।त्रि.४
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥
पकवान निवाजे, स्वाद विराजे, अमृत लाजे, क्षुत भाजे।
बहु मोदक छाजे, घेबरखाजे, पूजन काजे करि ताजे। त्रि. ५
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥
आपापर भासै ज्ञान प्रकाशै, चित्तविकासै तम नाशै।
ऐसे विध खासे दीप उजासे, धरि तुम पासे उल्लासे।त्रि.६
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥
चुम्बक अलिमाला गन्धविशाला, चंदनकाला गरूवाला।
तस चूर्ण रसाला करि ततकाला, अग्निज्वालामें डाला।त्रि.७
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥
श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा।
ऋतु ऋतुका न्यारा रत्फलसारा, अपरम्पारा, ले धारा।त्रि.८
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥
जल फल वसुवृन्दा अरघ अमन्दा, जजत अनन्दाके कन्दा।
मेटो भवफन्दा, सबदुखदन्दा, 'हीराचन्दा' तुम बन्दा त्रि.९
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अथ जयमाला ॥

दोहा-ध्यान दहन विधि दारु दहि पायो पद निरवान ।
पंचभावजुत थिर भये, नमों सिद्ध भगवान ॥

त्रोटक छन्द

सुख सम्यग्दर्शन ज्ञान लहा, अगुरु-लघू सूक्ष्म वीर्य महा ।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥
असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जजै, भुवनेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजै ।
जर जामन मरण मिटायक हो सब० ॥३॥
अमलं अचलं अकलं अकुल, अछलं असलं अरलं अतुल ।
अरलं सरलं शिवनायक हो सब० ॥४॥
अजरं अमरं अधरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अधरं ।
अपरं असरं सब लायक हो सब० ॥५॥
वृषवृन्द अमन्द न निन्द लहैं, निरदन्द,, अफन्द सुछन्द रहे ।
नित आनन्दवृन्द बधायक हो, सब० ॥६॥
भगवन्त सुसन्त अनन्तगुणी, जयवन्त महन्त नमन्त मुनी ।
जगजन्तु-तणे अघघायक हो, सब० ॥७॥
अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडंक निशंक शिवंकर हो ।
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सब० ॥८॥
अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंग उतंग सदा ।
सरवंग अनंग नसायक हो, सब० ॥९॥
ब्रह्मण्डजूमंडलमंडन हो, तिहुँ दंडप्रचंड विहण्डन हो ।
चिद पिंड अखण्ड अकायक हो, सब० ॥१०॥

निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे।
भ्रमभंजन तीक्ष्ण सायक हो, सब० ॥११॥

जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्ष्यक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षक हो।
पण अक्ष प्रतक्ष खपायक हो, सब० । १२॥

निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद अवेदन वेद नहीं।
सबलोक अलोकहि ज्ञायक हो, सब० ॥१३॥

अमलीन अदीन करीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने।
जमको घनघात बचायक हो, सब० ॥१४॥

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै।
जगजीवनके मन भायक हो, सब० ॥१५।

अप्रमाद अमाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता।
समता रमता अकषायक हो, सब० । १६॥

असमंद अधंद अरन्ध भये निरबन्ध अखन्द अगन्ध ठये।
अमनं अतनं निरवायक हो, सब० । १७

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुखहर्ण अशर्ण सुशर्ण भली।
बलि मोंह की फौज, भगायक हो सब० ॥१८॥

अविरूद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभु, अति शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू।
परमातम पूरन पायक हो, सब० ॥१९॥

विरूप चिद्रूप स्वरूपद्युति, जसकूप अनूपम भूप भुती।
कृतकृत्य जगत्त्रयनायक हो सब० ॥२०॥

जय इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितु, उत्कृष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू ।
शिवतिष्ठत सर्व सहायक हो, सब० ॥२१॥
जय श्रीधर श्रीकर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीमर श्रीझर हो।
जय ऋद्धि सुसिद्धि बढ़ायक हो, सब० ॥२२॥

दोहा—सिद्धसुगुण को कहि सकै ज्यों विलस्त नभ मान ।
'हिराचन्द' तातैं जजें, करहु सकल कल्याण ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यहां पर विसर्जन भी करना चाहिये)

अडिल्ल—सिद्धजजें तिनको नहिं आवे आपदा ।
पुत्र पौत्र धन धान्य लहै सुख सम्पदा ॥
इन्द्र चन्द्र धरणेन्द्र नरेन्द्र जु होयकै ।
जावैं मुक्ति मझार करम सब खोयकै ॥२४॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलि क्षिपेत् ।)

समुच्चय पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पहुप शीतल श्रेयांस नमि वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनंत धर्मजश उज्ज्वल, शांति-कुन्थु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांत-चतुर्विंशति-जिन-समूह ! अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा ।
भरि कनक कटोरि धीर दीनों धार धरा ।
चौबीसों श्रीजिनचन्द आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही । १॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांतेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी ।
जिनचरणन देत चढ़ाय, भव आताप हरी । चौबीसो चंदनं ।
तंदुल सितसोमसमान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ताफलकी उनमान, पुजधरों प्यारे । चौबीसो अक्षतं ॥
वरकंज कदंब कूरंड सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरो गुनमंड, काम कलंक हरे ॥ चौ० । पुष्पं ॥
मन मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद जजत क्षुधादि हने ॥चौ० । नैवेद्यं ॥
तमखंडन दीप जगाय, धारो तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे ।चौ० ॥दीपं ॥
दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जाहि तुमपद सेवत हों । चौ० । धूपं ॥
शुचि पक्व सुरस फल सार सब ऋतुके ल्याया ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो चौ० ॥फलं॥
जल फल आठों शुचि सार ताको अर्घ करो ।
तुमको अरपो भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।.चौ० ॥अर्घ्यं ।

॥ अथ जयमाला ॥

दोहा—श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ।१॥

घत्ता

जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगन नाशक, चौबीसों जिनराज वरा ।।

पद्धरि छन्द

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीतवसु अरि तुरन्त ।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्दपूर ॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्मपद्मद्युतितन रसाल ।
जय जय सुपास भवपासनाश, जय चंद चंद तनदुतिप्रकाश ॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतलगुण निकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहस मुज्ज, जय वासवपूजित वासुपूज्ज ॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुणगन अपार ।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टि करेत ।
जय कुन्थु कुन्थुवादिक रखेय, जय अरजिन वसुअरि क्षयकरेव ।
जय मल्लि मल्ल हत मोह मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ।
जय नमि नित वासवनुतसपेम, जय नेमनाथ वृषचक्र नेम ।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥

घत्ता—चौबीस जिनंदा, आनंदकंदा—पापनिकंदा सुखकारी ।
तिनपदजुगचंदा, उदय अमंदा, वासव वंदा, हितकारी ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—मुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराज वर ।
तिनपद मनवच धार जो पूजै सो शिव लहै ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

निर्वाण क्षेत्र पूजा

(कविवर द्यानतरायजी कृत)

सोरठा ।

परम पूज्य चोबीस जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं । १॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि । अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं चतुर्विंशति--तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

गीता छन्द

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारीमें भरौ ।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौ ॥
सम्मेदगढ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशको ।
पूजों सदा चौवीसजिन निर्वाण भूमि निवासको । १॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो जलं नि० ॥१॥

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौ ।
भवतापको सन्ताप मेटो, जोरकर विनती करो । सम्मेद.॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो चन्दनं नि०।२॥

मोती समान अखण्ड तन्दुल अमल आनन्द धरि तरौ ।
औगुन हरो गुण करौ हमको, जोरकर विनती करौ ।सम्मेद३
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो अक्षतान् नि०।३।

शुभ फुलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौ ।
दुखधामकामविनाश मेरो, जोरकर विनती करौ ।सम्मेद.४
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो पुष्पं नि० ।।४।।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं ।
मम भूख दूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौ ।सम्मेद.५
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं नि० ।५।

दीपक प्रकाश उजास उज्जवल, तिमिरसेती नहि डरौ ।
संशयविमोह विभरम तमहर, जोरकर विनती करौ ।सम्मेद.६
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो दीपं नि० ।६।

शुभधूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौ ।
सब करमपुंज जलाय दीज्यो, जोरकर विनती करौ ।सम्मेद.७
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो धूपं नि० ।।७।।

बहुफल मंगाय चढाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौ ।
निहचै मुकतिफल देहु मोकों जोरकर विनती करौ सम्मेद.८
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो फलं नि० ।।८।।

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरो ।
द्यानत करो निरभय जगतसों जोरकर विनती करौ सम्मेद.
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० ।।९।।

॥ अथ जयमाला । सोरठा ॥

श्री चौबीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमो ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥ १॥

नमो ऋषभ कैलाशपहारं नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वन्दौ, सन्मति पावापुर अभिनन्दों ॥२॥
वंदौ अजित अजित पद दाता, वंदौ संभव भवदुखघाता ।
वंदौ अभिनन्दन गुणनायक, वंदौ सुमति सुमतिके दायक ॥३
वंदौ पद्मप्रकृति पदमाकर, वंदौ सुपास आशपासाहर ।
वंदौ चन्द्रप्रभ प्रभुचंदा, वंदौ सुविधि सुविधि निधिकंदा ॥४
वंदौ शीतल अघतपशीतल, वंदौ श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
वंदौ विमल विमल उपयोगी, वंदौ अनंत अनंत सुखभोगी ॥५
वंदौ धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौ शांति शांति मनधारा ।
वंदौ कुन्थु कुन्थु-रखवालं, वंदौ अर अरिहर गुणमालं ॥६
वंदौ मल्लि काममलचूरन, वंदौ मुनिसुव्रत व्रतपूरन ।
वंदौ नमिजिन नमितसुरासुर, वंदौ पास पास भ्रम जगहर ॥७
बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर ।
भावसहित वन्दै जो कोई, ताहि नरकपशुगति नहिं होइ ॥८
नरपति नृपसुरशुक्र कहावे, तिहूँजग भोग भोगि शिव पावै ।
विघन विनाशन मंगलकारी, गुणविलास वन्दौ भवतारी ॥९
घत्ता—जो तीरथ जावै, पापमिटावै ध्यावै गावै भगति करै ।
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरिके गुणको बुधउचरैं ।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि० ॥१०

इत्याशीर्वादः ।

सप्त ऋषि पूजा

छप्पय

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसरे मुनि श्रीनिचय सर्व सुन्दर चौथोवर ॥
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम मनि ।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि ॥
ये सातो चारणऋद्धिधर, करूं तास पद थापना ।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना ॥

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्री सप्तऋषीश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक—गीता छन्द

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकै ।
भवतृषा कन्द निकन्दकारण शुद्ध घट भरवायकैं ॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करुं ।
ता करें पातक हरें सारे सकल आनंद विस्तरुं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनय-लालस, जयमित्र, ऋषिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

श्रीखण्ड कदलीनंद केशर, मंदमंद घिसायकैं ।
तस गंध प्रसारित दिगदिगंतर, भर कटोरी लायकैं मन्वादि२

ॐ ह्रीं मन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यो चन्दनं नि०।२।

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित, मिष्ट राजन भोगके ।
कलधौत थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोगके ।म.।३।
ॐ ह्रीं मन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः अक्षतान् नि०

बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे अमल कमल गुलाबके ।
केतकी चांपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके ।।म.।४।।
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः पुष्पं नि०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये ।
सद मिष्ट लाडू आदिभर बहुँ, पुरटके थारा लये ।।म. ।५।
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यः नैवेद्यं नि०

कलधौत दीपक जड़ित नाना भरित गोघृत सारसों
अति ज्वलित जगमग ज्योतिजाकि तिमिरनाशनहारसों ।म.६
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः दीपं नि०

दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कही ।
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगायकर खेऊं सही ।मन्वादि.।७
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः धूपं नि०

वरदाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायके ।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकै ।।म.।।८
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः फलं नि०

जलगंधअक्षतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।म.।९
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्त-ऋषिभ्यः अर्घ्यं नि०

अथ जयमाला । छन्द त्रिभंगी ।

वंदू ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा करत भले ।
करुणाके धारी, गगन बिहारी दुःख अपहारी भरम दले ॥
काटत जमफंदा भविजन वृन्दा, करत अनंदा चरणनमें ।
जो पूजै ध्यावैं मंगल गावैं फेर न आवैं भववनमें ॥१॥

पद्धरि छन्द

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत त्रस थावरकी रक्षा करंत ।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग ।२
जय श्रीस्वमनु-अकलंकरूप, पद सेव करत नित अमर भूप ।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचनसमान ।३
जय निचय सप्त तत्वार्थ भास, तप-रमातनों तनमें प्रकाश ।
जय विषयरोध संबोध भान, पर परणति नाशन अचल ध्यान
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगत जाल
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणतिमें पायो विराम ।५
जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप ।
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विचरत सब करत सेव ।६
जय जयहि विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान
जय कृषितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनंददाय ।७
जय मित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र
जय चंद्रवदन राजीव-नैन, कबहूँ विकथा बोलत न बैन ।८
जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन गमन करते अभंग ।
जय आये मथुरापुर मंझार, तहं मरिरोगको अति प्रचार ।९

जय जय तिनचरणनिके प्रसाद सब मरी देवकृत भईवाद ।
जय लोककरै निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़हस्त ।
जय ग्रीषमऋतु परवत मंझार, नित करत अतापन योगसार
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहीं मनसुमेर ।११
जय मूल अठाईस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार ।
जय वर्षाऋतुमें वृक्षतीर, तहँ अति शीतल झेलत समीर ।१२
जय शीतकाल चौपट मंझार, कै नदीसरोवर तट विचार ।
जय निवसत ध्यानारुढ होय रंचकनहि मटकत रोम कोय ।१३
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय ।
जय आसन नानाभांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ।१४
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुलवृद्धि होय ।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्र तनों दुःख होय छार ।१५
जय चोर अग्नि डाकीन, पीशाच, अरुईति भीतिसब नसतसांच
जय तुम सुमरत सुखलहत लोक, सुरअसुर नमत पद देत धोक

छन्द रोला ।

ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी ।
परम पूज्य पद धरे, सकल जगके हितकारी ।
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवे औ ध्यावै ।
सो जन 'मनरंगलाल' अष्टऋद्धिनको पावै ॥१७॥

दोहा—नमन करत चरनन परत अहो गरीबनिवाज ।
पंच परावर्तननितै, निरवारो ऋषिराज ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वारादि-चारण-ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं नि०

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल—सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये ।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसों ।
हमहूँ षोडशकारण भावे भावसौं ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टक ।

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गंभीर ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरश-विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि १, विनयसम्पन्नता २, शीलव्रतेष्वनतिचार ३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४, संवेग ५, शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधु समाधो ८, वैयावृत्यकरण ९, अर्हद्भक्ति १०, आचार्य भक्ति ११, बहुश्रुतभक्ति १२, प्रवचन भक्ति १३, आवश्यकापरिहाणि १४, मार्ग प्रभावना १५, प्रवचन वात्सल्य १६, इतिषोडश कारणेभ्यः नमः ।। जलं ।। १ ।।

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश-वि० २।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यः चन्दनं नि० स्वाहा ।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप पूजौं जिनवर तिहुँ जग भूप।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि०॥३॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अक्षतं नि० ।

फुल सुगन्ध मधुप गुंजार पूजौं जिनवर जग आधार।
परमगुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरशवि० ॥४॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः पुष्पं निर्व० ।

सद नेवज बहु बिधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परमगुरु हो जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥५॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः नैवेद्यं नि० ।

दीपक ज्योति तिमिर छयकार पूंजू श्रीजिन केवल धार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरशवि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः दीपं निर्व० ।

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥७॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः धूपं निर्व० ।

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजौं जिन वांछितदातार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥८॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः फलं निर्व० ।

जल फल आठों द्रव्य चढाय, 'द्यानत' वरत करो मनलाय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥दरशवि० ॥९॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः अर्घ्यं निर्व० ।

॥ अथ जयमाला ॥

दोहा षोडशकारण गुण करैं, हरैं चतुरगति वास ।
पापपुण्य सब नाश कै, ज्ञान भानु परकाश ॥

दरश विशुद्ध धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥
शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सौ औरनकी आपद टाले ।
ज्ञानाभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह-महातम नाहीं ॥३॥
जो संवेग-भाव विस्तारै, तुरग-मुक्ति पद आप निहारै ।
दान देय मन हर्ष बिशेखै, इह भव जश परभव सुख देखै ४
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे कर्म शिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहूँ जग भोग भोगि शिवजावै ५
निश दिन वैयावृत्य करैया, सा निरचय भवनीर तिरैया ।
जो अरहत-भक्ति मन आनै सो जन विषय कषाय न जाने ॥६
जो आचारज भक्ति करै है, सो निरमल आचार धरै है ।
बहुश्रुतवन्त-भक्ति जो करई सो नर संपूरण श्रुत धरइ ॥७॥
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहैं ज्ञान परमानन्द-दाता ।
षट् आवश्यक नित जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ।८।
धर्म प्रभाव करे जे ज्ञानी, तीन शिव-मारग रीति पिछानी ।
वत्सलअंग सदा जो ध्यावे, सो तीर्थंकर पदवी पावै ।९।
दोहा—ये ही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य पद, धानत शिव पद होय ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० ॥

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै ।
कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै ॥
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भवसागरको पर पार उतारै ।
ज्ञान कहे यहि षोडशकारण, कर्म निवारण सिद्ध सुधारै ॥

अथाशीर्वादः ।

जाप्य

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयै नमः । ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः, ॐ ह्रीं शीलव्रताय नमः, ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगाय नमः, ॐ ह्रीं संवेगाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे - नमः, ॐ ह्रीं साधुसमाध्यै नमः, ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्ये नमः, ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आवश्यकपरिहाण्यै नमः, ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ॥१६॥

पंचमेरु पूजा

गीता छन्द

तीर्थंकरोंके ह्वन जलतें भये तीरथ शर्मदा ।
तातै प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरुनकी सदा ॥
दो जलधि ढाईद्वीपमें सब गनत मूल बिराजहीं ।
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा, होहि सुख दुःख भाजहीं १

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिन सम्बन्धि चैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा समूह

अत्रावतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं पंचमेरु-सम्बन्धित-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-प्रतिमा-समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं पंचमेरु-सम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-प्रतिमा समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक, चौपाई आंचली बद्ध (१५ मात्रा)

शीतल मिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजौ श्रीजिनराय ।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु विजय अचलमेरु, मन्दिरमेरु विद्युन्माली-मेरु-पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन-चैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति ॥१॥

जल केसर कर्पूर मिलाय गन्धसों पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ, परमसुख होय ॥पांचो० २॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः चंदनं नि०

अमल अखंड सुगन्ध सुहाय अच्छतसों पूजों श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ, परमसुख होय । पांचों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिन-चैत्यालस्थ-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् ।

वरण अनेक रहें महकाय, फुलसों पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥पांचों० ४ ।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं नि०

मनवांछित बहूँ तुरत बनाय, चरूसों पूजों श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय । पांचो० ॥५॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं नि०

तमहर उज्ज्वल जोति जगाय, दीपसौ पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय । पांचों० ।।६।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः दीपं नि०
खेऊं अगर अमल अधिकाय धूपसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।। पांचो० ।।७।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः धूपं नि०
सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।। पांचों० । ८।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः फलं नि०
आठ दरबमय अरघ बनाय 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ।।पांचों० ।।९।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबन्धि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं नि०

जयमाला—सोरठा

प्रथम सुदर्शन-स्वामी, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम पंचमेरु जगमें प्रगट ।। १० ।।

बेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन कर वन्दना हमारी।
उपर पांच शतक पर सोहै नंदनवन देखत मन मोहे।चैत्या.
साढ़े बासठ सहस ऊंचाई, बन सुमनस शोभै अधिकाई।चै.
ऊंचा जोजन सहस छतीसं, पांडुकवन सोहै गिरिशीसं।चै.
चारो मेरु समान बखानै, भूपर भद्रसाल चहूँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतनकर वंदना हमारी।

ऊँचे पांच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन कर वंदना हमारी ।
साढ़े पचपन सहस उत्तंगा, बन सोमनस चार बहुरंगा ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतनकर वंदना हमारी ॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभगाये ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतनकर वंदना हमारी ॥
सुरनर चारन वंदन आवैं, सो शोभा हम किह मुखगावैं ।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतनकर वंदना हमारी ।

दोहा—पंचमेरूकी आरती, पढ़े सुने जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभु, तुरत महा सुख होय ॥११॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं नि०

नन्दीश्वरद्वीप (अष्टान्हिका) पूजा

सरव परवमें बड़ो अठाई परव हैं ।
नन्दीश्वर सुर जांहि लिये वसु दरव हैं ॥
हमें शक्ति सौं नांहि इहा करि थापना ।
पूजै जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत-जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा ।
तिहुँ धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥

* नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूंज करों।
बसु दिन प्रतिमा, अभिराम, आनन्दभाव धरो ।१।

ॐ ह्रीं मासोत्तमे....मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दक्षिण-पश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरी चार दधिमुख आठ रतिकर. प्रतिदिशि तेरह २ इति बावन जिन चैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

भवतप हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुण कोजै सांच, आयो तुम ठांहीं ।।नन्दी० ।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ जिन-प्रतिमाभ्यः चंदनं निर्व०।

उत्तम अक्षत जिनराज पुंज धरे सो है।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरू को है ।।नन्दी० ३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः अक्षतान् निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं।
लहि शील लच्छमी एव, छूटों शूलनसौं ।नन्दी० ।४।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः पुष्पं नि०।

नेवज इन्द्रयबलकार सो तुमने चूरा।
चरूं तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ।नन्दी० ।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं नि०।

दीपक की ज्योति प्रकाश तुम तन मांहिं लसै।
टूटे करम की राश, ज्ञानकणी दरसै ।। नन्दी० ।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः दीपं नि०।

---

* नन्दीश्वरद्वीपे महान चारों दिशि सों हैं।
बावन जिनमंदिर जान सुर नर मन मोहें।

कृष्णागरु धूप सुवास, दशदिशि नारि वरैं ।
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करैं ।।नन्दी० ।।७ ।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः धूपं नि०
बहुविधिफल ले तिहूँकाल, आनन्द राचत हैं ।
तुम शिवफल देहु दयाल तु ही हम जाचत है । नन्दी.। ८
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः फलं नि०
यह अर्घ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हो ।
'द्यानत' किज्यो शिवखेत भूमि समरतु हों ।।नन्दी०।।९ ।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं नि०

जयमाला—दोहा

कार्तिक फाल्गुन षाढके, अन्त आठ दिनमाहिं ।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं ।।१।।

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा लाख चौरासिया एकदिश में लहा आठमों द्वीप नन्दीश्वर भास्करं । भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं ।।२।। चारदिशि चार अंजनगिरी राजही । सहस चौरासिया एकदिशि छाजहीं । ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं भौन. । ३ । एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी । एक इक लाख जोजन अमल जलभरी चहुंदिशि चार बन लाख जोजन वरं । भौन० ।४।। सोल बापींन मधि सोल गिरि दधिमुखं । सहस दस महा जोजन लखत ही सुखं बावरी कोण दो मांहि दो रतिकरं ।। भौन० । ५ ।। शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे, चार सौलै मिले सर्व बावन लहे । एक इक सीस पर एक जिनमन्दिरं । भौन०।।६

बिंब अठ एकसो रतनमय सोहही । देव देवी सर्व नयन मन मोहही । पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं भौनं० ।७ लाल नख मुखनयन श्याम अरु श्वेत हैं । श्याम रंग भौंह शिर केश छवि देत हैं । वचन बोलत मनो हंसत कालुष हरं । भौन० ८। कोटिशशि भानु दुति तेज छिप जात है । महा वैराग परिणाम ठहरात है । बयन नहिं कहैं लखि होत सम्यक धरं । भौन० ।९।।

सोरठा—नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै ।
'द्यानत' लीनो नाम यहि भगति शिव सुख करै ।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं नि०

दशलक्षण धर्म पूजा

उत्तम छिमा मार्दव आर्जव भाव हैं ।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं ।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दस सार है ।
चहूँ गति दुखतैं काढि मुकति करतार है ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र अवतरावतर संवौषट
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भवभव षट

सोरठा—हेमाचल की धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यादि-दश-लक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति ।।१।।

चंदन केशर गार, होय सुवास दशोंदिशा ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय चन्दनं नि० ।।२।।

अमल अखंडित सार, तंदुल चंद्र समान शुभ ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अक्षतान् नि० ।।३।।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लौं ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय पुष्पं नि० ।।४।।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय नैवेद्यं नि० ।।५।।

वाति कपूर सुधार, दिपक जोति सुहावनी ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय दीपं नि० ।।६।।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय धूपं नि० ।।७।।

फल की जाती अपार, घ्राण नयन मनमोहने ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय फलं नि० ।।८।।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अर्घ्यं नि० ।।९।।

अङ्ग पूजा-सोरठा

पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहु विधि करै।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ।१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

उत्तम छिमा गहो रे भाई इहभव जस परभव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो॥
कहि है अयानो वस्तु छीने, बांध मार बहुँविधि करै।
धरतैं निकार, तन विदारै वैर जो न तहां धरै॥
तैं करम पूरव किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मान महाविषरूप, करहि नीचगति जगतमें।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ।२॥
उत्तम मार्दवगुण मन माना, मान करनको कौन ठिकाना।
वस्यो निगोदमाहिंतैं आया, दमरी रूकन भागबिकाया॥
रुकन बिकाया कर्म वशतैं देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कीडोंमें गया॥
जीतव्य-जीवन-धन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा।
करि विनय बहुँगुण बड़े जनकी ज्ञानको पावै उदा॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घं निर्व० स्वाहा ॥२॥

कपट न कीजै कोय, चोरनके पुर ना बसे।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा॥२॥
उत्तम आर्जवरीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसों करिये॥

करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी ।
मुख करैं जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी ॥
नहि लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध-विशेषता ।
भय त्यागी दूध बिलाव पीवै आपदा नहिं देखता ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

कठिन वचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज ।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥
उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वास घात नहीं किजै ।
सांचें झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचेको दरव सब दीजिये ।
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठी वसुनृप धरमका भूपति भया ।
बच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरगमें नारद गया ॥४॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

धरि हिरदै सतोष, करहूँ तपस्या देहसों ।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसारमें ॥
उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पापको बाप बखानो ।
आशा–पास महा दुखदानी, सुख पावे सन्तोषी प्राणी ॥
प्राणी सदा शुचिशील जप तप, ज्ञानध्यान प्रभावतैं ।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये अशुचि दोष सुभावतैं ।
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौनविधी घट शुचि कहै ॥
बहू देह मैली सुगुनथैली, शौच गुन साधु लहै ॥५॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संयमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं ॥६
उत्तम संयम गहु मन मेरे, भव भवके भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरकपशुगतिमें नाही, आलस-हरन करणसुख ठाहीं॥
ठाही पृथ्वी जल आग मारुत रूख त्रस करूना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे तू रूल्यो जग कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जममुख बीचमें॥६
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तप चाहें सुर राय, करमशिखरको वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निज शक्तिसम।
उत्तम तप सब मांहि बखाना, कर्मशैलको वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा॥
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवाणी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता॥
अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरे।
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलशा धरे॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दान चार परकार, चार संघको दीजिये।
धन बिजली उनहार, नरभव लाहो लीजिये॥
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनो दान संभारै॥

दोनों संभारे कूप जलसम, दरव घरमें परनिया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया॥
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधकों।
विन दान श्रावक साधु दोनो, लहै नाहीं बोधकों॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौंविस भेद, त्याग करें मुनिराजजी।
तृष्णाभाव उछेद, घटती जान घटाइये॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।
फांस तनकसी तनमें सालैं, चाह लंगोटीकी दुख भालै॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरै।
धनि नगनपर तन नगन ठाड़े, सुर असुर पायनि परै॥
घरमांहि तृष्णा जो घटाबे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हूँ भला कहिये लीन पर उपगारसौं॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील बाड नो राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव सदा।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै बान वर्षा बहु सूरे, टिके न नैन–बाण लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचितनमें कामरोगी रति करें।
बहु मृतक सड़हि मसानमांहीं काक ज्यों चोंचै भरै।
संसारमें विषबेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दशपैंड चढिके शिवमहलमें पगधरा॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-दशलच्छन वंदौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहौं आरती भारती, हम पर होउ सहाय ॥१॥

बेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नानाभेद ज्ञान सब भासे॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागी सुगति उपजावे।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले॥
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करैं ले साता॥
उत्तम तप निरवांछित पाले सो नर करम-शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई॥५
उत्तम आकिंचन व्रत धारै परम समाधिदशा विस्तारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुर सहित मुकतिफल पावै। ६
दोहा-करे करमकी निरजरा, भव पींजरा विनाश।
अजर अमरपदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राश॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम तप त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

रत्नत्राय पूजा

दोहा—चहूँगति-फणि विष-हरन-मणि, दुःख पावक जलधार।
शिवसुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्त्रयी निहार॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा—क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा

चंदन केशर गारि, परिमल महा सुरंगमय।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

तंदुल अमल चितार, वासमति सुखदास के।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।

महकैं फूल अपार, अलि गुजै ज्यों थुति करे।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ।४।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

लाडू बहू विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत।
जनम रोग निरवार सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगतमें।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०।

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूरकी।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥८॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा ।

आठ दरव निरधार उत्तमसों उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥९॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

सम्यक्दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥१०॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय जयमाला

दोहा—सम्यक्दर्शन ज्ञान व्रत इन विन मुकति न होय ।
अन्ध पंगु अरु आलसी जुदे जलै दवलोय ॥१॥

चौपाई

जावै ध्यान सुधिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै ।
तासौं शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ।२
ताकौं चहुँगतिके दुःख नाहीं, सो न परै भवसागर मांहीं ।
जनम जरा मृत दोष मिटावै जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ।३
सोई दशलच्छनका साधै, सो सोलह कारण आराधै ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥४
सोई शक्र-चक्रि-पद लेई, तीन लोकके सुख बिलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ।५।
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विस्तारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्या व ॥६॥

दोहा-एक स्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहि जाय।
तीनभेद व्योहार सब 'द्यानत' को सुखदाय ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन पूजा

दोहा–सिद्ध अष्टमगुनमय प्रगट मुक्त जीव सोपान।
ज्ञानचरित जिहं बिन अफल, सम्यग्दर्शन प्रधान ।१

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सोरठा–नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यक् दर्शन सार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्व० स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यक् दर्शन सार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चंदनं निर्व० स्वाहा।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यक् दर्शन सार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक् दर्शन सार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥५॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशैं महा ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।६॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्व० स्वाहा ।

धूप घ्राणसुखकार, रोग विघन जडता हरै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।७।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्व० स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करे ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।८॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्व० स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ।९।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

जयमाला

दोहा–आप आप निहचै लखौ, तत्त्वप्रीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्टगुण सार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यक्दर्शन रतन गहीजै, जिन–वचमें संदेह न कीजै ।
इहभव विभव–चाह दुखदानी, पर भव भोग चहै मत प्रानी ॥
प्राणी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरू प्रभु पर खिये ।
परदोष ढकिये धरम डिगतेको सुथिर कर हरखिये ॥

चउसंघको वात्सल्य कीजै धरमकी परभावना ।
गुण आठसौ गुन आठ लहि कै, इहां फेर न आवना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहित-पंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं

ज्ञान पूजा

पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह तपन-हर-चन्द्रमा सोइ सम्यक्ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सोरठा-नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलकेशर घनसार, ताप हरै शीतल करे ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशैं सुख भरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहूच सुवास उदार खेद हरे मन सुचि करें ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥५॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥६॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्राण सुखकार, रोगविघन जडता हरै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥८॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरू ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा—आप आप जाने नियत, ग्रन्थ पठन व्योहार ।
संशय विभ्रम मोह बिन अष्टअङ्ग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यग्ज्ञान रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय संगजानो ।
जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तपरीति गहि बहु मौन देकै विनय गुन चित लाइये ॥

ए आठ भेद करम अछेदक, ज्ञानदर्पण देखना ।
इस ज्ञानहीसौं भरत सोझा, और सब पट पेखना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारित्र पूजा

दोहा—विषयरोग औषध महा दवकषाय जलधार ।
तीर्थंकर जाकों धरैं सम्यक्चारितसार ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर २ संवौषट् ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्

सोरठा—नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरे मल छय करैं ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व० स्वाहा ।
जल केसर घनसार, ताप हरैं शीतल करैं ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्व० स्वाहा ।
अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्व० स्वाहा ।
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्व० स्वाहा ।
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरैं थिरता करैं ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥५॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्व० स्वाहा ।

धूप घ्राणसुखकार, रोग विघन जडता हरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ।७।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्व० स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करैं ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ।८।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्व० स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ।९।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

जयमाला दोहा ।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार ।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरह विध दुखहार ।।१०।।

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यक्चारित रतन संभालो, पांच पाप तजिके व्रत पालो ।
पंचसमिति त्रय गुपतिगहीजौ, नर भव सफल करहूँ तन छीजै ।।
छिजे सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये ।
बहु रूल्यो नरक निगोद मांही, विषय कषायनि टालिये ।।
शुभ करम–जोग सुघाट आयो पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो शिवपुरी कुशलात है ।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

सरस्वती पूजा

दोहा—जनम जरा मृत्यु छय करै हरै कुनय जडरीति।
भव सागरसों ले तिरै पूजै जिनवच प्रीति ।१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि । अत्र अवतर, अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट ।

क्षीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुखसंगा ।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा ॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अङ्ग रचे चुनि ज्ञान मई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी त्रिभुवन मानी, पूज्य भई ॥१

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्व० स्वाहा ।

कपूर मंगाया चंदन आया केशर लाया रंगभरी ।
शारद पद वंदौं, मन अभिनंदौं, पापनिकंदौं दाहहरी ।तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चंदनं निर्व० स्वाहा ।

सुखदास कमोदं धारकमोदं, अतिअनुमोदं चंदसमं ।
बहुभक्ति बढाई, किरति गाई होहु सहाई, मात ममं तीर्थं०३

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

बहु फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनन्दरासं लाय धरे ।
मम काम मिटायौ, शील बढायौ सुख उपजायो, दोषहरे तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पुष्पं निर्व० स्वाहा ।

पकवान बनाया बहुघृत लाया सब विधभाया, मिष्ट महा ।
पूजूं थुति गाऊं प्रीति बढाऊं, क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा । तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्व० स्वाहा ।

करि दीपक जोतं, तमछयहोतं, ज्योति, उदोतं, तुमही चढै।
तुमहो परकाशक भरमविनाशक हमघट मासक, ज्ञानबढै ती०
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्व० स्वाहा।
शुभगंध दशोकर, पावकमें धर धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावै, पुण्य कमावै, दास कहावै सेवत हैं। ती०
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्व० स्वाहा।
बादाम छुहारी लोंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत है ती०
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं निर्व० स्वाहा।
नयनन सुखकारी, मृदुगुनधारी उज्ज्वल भारी, मोल धरै।
शुभगंधसम्हारा, वसन निहारा तुमतन धारा ज्ञान करै ती०
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै वस्त्रं निर्व० स्वाहा।
जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत दीप, धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुखपावै ती०
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

सोरठा—ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जडता हरै॥

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादस सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥१॥
तीजो ठाना अङ्ग सुजानं, सहस बियालीस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारं ॥२॥

पंचमव्याख्याप्रज्ञपति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तार पांच लाख छप्पन हजारं ।३।
सप्तम उपासकाध्यायनगं, सत्तर सहस ग्यारह लख भंगं ।
अष्टम अन्तकृतं दस इसं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं ।।४।।
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं ।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानवे सोल हजारं ।।
ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ।।
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कौडिपन वेदं ।
अडसठ लाख सहस छप्पन है, सहित पंचपद मिथ्याहन है ।
इकसो बारह कोड़ि बखानों, लाख तिरासी ऊपर जानों ।
ठावन सहस पच्च अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने ।।८
कोड़ि इकावन आठहि लाखं, सहस चुरासी छहसो भाखं ।
साड़े इक्कीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ।।९।।
दोहा—जा वानी के ज्ञानते, सूझे लोक अलोक ।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देतहों धोक ।।१०।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

गुरु पूजा

दोहा—चहुँ गति दुखसागरविषे तारनतरन जिहाज ।
रतनत्रयनिधि नगन तन, धन्य महा मुनिराज ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्योपाध्याय-सर्वसाधुगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्री आचार्योपाध्याय--सर्वसाधुगुरुसमूह । अत्र

तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं श्री आचार्योपाध्याय सर्वसाधु-गुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

शुचि नीर निरमल छीरदधिसम, सुगुरु चरन चढाइया ।
तिहूँ धार तिहूँ गदटार स्वामी, अति उछाह बढाइया ॥
भव भोग तन वैराग धार निहार शिव तव तपत हैं ।
तिहूँ जगतनाथ अराध साधु सु पूज नित गुन जपत हैं ।१।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः जलं निर्व० स्वाहा ।

करपूर चन्द सलिलसौं घसि, सुगुरु पद पूजा करौं ।
सब पाप ताप मिटाय स्वामी, धरम शीतल विस्तरो ।भव० २

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः चंदनं निर्व० स्वाहा ।

तन्दूल कमोद सुवास उज्ज्वल, सुगुरु पद पगतर धरत हैं ।
गुनकार ओगुनहार स्वामी, वंदना हम करत है ।भव०॥३

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अक्षतान् निर्व० स्वाहा ।

शुभफुलराश प्रकाश परिमल सुगुरुपांयनि परत हो ।
निरवार मार उपाधि स्वामी, शीलदृढ उर धरत हों ।भव.४

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः पुष्पं निर्व० स्वाहा ।

पकवान मिष्ट सलौन सुन्दर सुगुरु पांयनि प्रीतिसों ।
धर क्षुधारोग विनाश स्वामी, सुथिर कीजे रीतिसों ।भव.५

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः नैवेद्यं निर्व० स्वाहा ।

दीपक उदोत सजोत जगमग सुगुरु पद पूजों सदा ।
तमनाश ज्ञान उजास स्वामी, मोहि मोह न हो कदा ।भव.६

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः दीपं निर्व० स्वाहा ।

बहु अगर आदि सुगंध खेऊं सुगुण पद पद्महि खरे ।
दुख पुंजकाठ जलाय स्वामी, गुण अछय चितमें धरे ।भव.७
ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०
भर थार पूंग बदाम बहुविधि सुगुरुक्रम आगे धरों ।
मंगल महाफल करो स्वामी, जोर कर विनती करों ।भव.८
ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०
जल गंध अक्षतफूल नेवज, दीप धूप फलावली ।
'द्यातन' सुगुरुपद देहु स्वामी, हमहिं तार उतावली ।भव.९
ॐह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि०

जयमाला

दोहा—कनकामिनी विषयवश, दीसै सब संसार ।
त्यागी वैरागी महा, साधु सुगुन भंडार ॥१॥
तीन घाटि नवकोड सब, बन्दौ शीश नवाय ।
गुण तिन अट्ठाईस लौं, कहूँ आरती गाय ॥२॥

बेसरी छन्द

एक दया पालैं मुनिराजा, रागदोष, द्वै हरन परं ।
तीनों लोक प्रकट सब देखौ, चारों आराधन निकर ॥
पंच महाव्रत दृढ़र धारैं, छहों दर्व जानें सुहितं ।
सातभंग वानी मन लावैं, पावै आठ रिद्ध उचितं ॥३॥
नवों पदारथ विधिसौं भाखैं, बन्ध दशों चूरन करनं ।
ग्यारह शंका जानें मानैं, उत्तम बारह व्रत धरनं ॥
तेरह भेद काठिया चूरे, चौदह गुणथानक लखियं ।
महा प्रमाद पंचदश नाशे, सोल कषाय सबै नशियं ॥४॥

बन्धादिक सत्रह सब चूरे ठारह जन्म न मरण मुनं ।
एक समय उनईस परीषह, बीस प्ररुपनिमें निपुनं ॥
भाव उदीक इकीसौ जानैं, बाइस अभखन त्याग करं ।
अहिमिंदर तेईसौं वन्दैं, इन्द्र सुरग चौबीस वरं ॥५॥
पच्चीसों भावन नित भावै छब्बीस अंग अपंग पढै ।
सत्ताइसो विषय विनाशै, अट्ठाईसों गुण सु पढै ॥
शीत समय सर चौहटवासी, ग्रीषमगिरिसिर जोग धरं ।
वर्षा वृक्षतरै थिर ठाढै, आठ करम हनि सिद्ध वरं । ६॥

दोहा–कहो कहां लों भेद में, बुध थोडी गुण भूर ।
'हेमराज' सेवक हृदय, भक्ति करो भरपूर ॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

अकृत्रिम चैत्यालय पूजा

चौपाई

आठकरोडअरु छप्पनलाख, सहस सत्याणव चतुशतभाख ।
जोड इक्यासी जिनवर थान, तीनलोंक आह्वानकरान ॥ १॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षटपंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितानी भव २ वषट् ।

छन्द त्रिभंगी ।

क्षीरोंदधिनीरं, उज्ज्वल सीरं, छान सुचिरं, भरि झारि ।
अति मधुर लखावन, परमसुपावन तृषोबुझावन, गुणभारी ॥
वसुकोटि सु छप्पनलाख सताणा, सहस चारशत इक्याशी ।
जिनगेह अकीर्तिम तिहुँ जगभीतर पूजत पद ले अविनाशी ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट् पंचाशल्लक्ष सप्तनवतिसहस्त्र-चतःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो जलं नि० ॥१॥

मलयागिर पावन चंदन बावन, तापबुझावन, घसि लीना ।
धरि कनककटोरी, द्वैकरजोरी, तुमपदओरी, चितदीनो ।वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चत:शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चंदनं नि० ॥२॥

बहुभांति अनोखे तंदुल चोखे, लखि निरदोखे हम लिने ।
धरि कंचनथाली तुमगुणमाली, पुंजविशाली करदीने ।वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् नि० ॥३॥

शुभ पुष्पसुजाति है बहु भांति अलि लिपटाती, लेय वरं ।
धरि कनक-रकेबी करगह लेवी, तुम पदजुगकी, भेटधरं ।वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पुष्पं नि० ॥४॥

खुरमा जू गिंदौड़ा बरफी पेंडा, घेवर मोदक भरि थारी ।
विधिपूर्वक कीने, घृतपयभीने, खंडमें लीने, सुखकारी बसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं नि० ॥५॥

मिथ्यात महातम छाय रह्यो मम, निजभव परणति न हिंसूझे ।
इह कारण पाकै दीप सजाकै, थाल धराकै हम पूजौ ॥वसु.॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं नि० ॥६॥

दशगंध कुठाकैं धूप बनाकैं निजकर लेके, धरि ज्वाला ।
तसु धूम उडाई, दशदिशछाई बहुमहकाई अतिआला ॥वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो धूपं नि० ॥७॥

बादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे, दाख वरं।
इन आदि अनोखे लखि निरदोखे थालपजोखे, भेट धरं।वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो फलं नि० ॥८॥

जल चंदन तंदुल कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल, थाल रचौं।
जयघोष कराऊ बीनबजाऊं अर्घ चढाऊं,खूब नचौं।वसु०।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योः अर्घ्यं नि० ॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ। चौपाई।

अधोलोक जिनआगमसाख, सात कोडि अरु बहतर लाख।
श्रीजिनभवन महा छवि देइ, ते सब पूजौं वसुविधि लेई।

ॐ ह्रीं अधोलोकसम्बन्धि सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्षाकृत्रिम श्री जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

मध्यलोक जिन मन्दर ठाठ, साढैचार शतक अरु आठ।
ते सब पूजौं अर्घ चढाय, मन वच तन त्रयजोग मिलाय॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धि चतुशताष्टपंचाशत श्रीजिनचैत्यालये-भ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

अडिल्ल–ऊर्ध्वलोक के मांहि भवन जिन जानिये,
लाख चौरासी सहस सत्याणव मानिये।
ताणै धरि तेईस अजों शिरनायकैं
कंचन थाल मझार जलादिक लायकैं ॥३॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकसम्बन्धि चतुरशीतिलक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र-त्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।३।

गीता छन्द

वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर, सहस सत्याणव मानिये ।
शतच्यारपैं गिनले इक्यासी, भवनजिनवर जानिये ॥
तिहुँ लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करे ।
तिन भवनको हम अर्घ लेके पूजि हैं जगदुख हरैं । ४ ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्त्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि० ॥४॥

अथ जयमाला

दोहा—अब वरणों जयमालिका, सुनों भव्य चित लाय ।
जिनमन्दिर तिहुं लोयके देहूँ सकल दरशाय ॥

पद्धरि छन्द

जयअमलअनादि अनंतजान, अनिमितजु अकीर्तमअचल थान
जय अजय अखंड अरूपधार, षट् द्रव्य नही दीसैं लगार ॥
जय निराकार अविकार होय, राजत अनंत परदेश सोय ।
जैशुद्धसुगुण अवगाहपाय, दशदिशामाहिं इहविधि लखाय ॥
यह भेद अलोकाकाश जान तामध्य लोक नभ तीन मान ।
स्वमेव बन्यौ अविचल अनंत, अविनाशिअनादि जु कहतसंत
पुरुषाअकार ठाडो निहार, कटि हाथ धारि द्वै पग पसार ।
दक्षिन उत्तरदिशि सर्व ठौर, राजू जुसात भाख्यो निचोर ॥
जय पूर्व अपरदिश घाटबाधि, सुन कथन कहूं ताकोजु साधि
लखि श्वभ्रतले राजू जु सात, मधिलोक एक राजू रहात ।
फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच, भू सिद्ध एक राजू जु सांच ॥

दश चार ऊंच राजू गिनाय, षटद्रव्य लये चतुकोण पाय।
तसु वातवलय लपटाय तीन, इहनिराधार लखियो प्रवीन।
त्रसनाडी तामधि जान खास,चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥
राजू उतंग चौदह प्रमान लखि स्वयंसिद्ध रचना महान।
तामध्य जीव त्रस आदि देव, निज थान पाय तिष्ठे भलेय ॥
लखि अधोभागमें श्वभ्रथान गिन सात कहे आगम प्रमान।
षटथानमाहिं नारकिवसेय, इक श्वभ्रभाग फिर तीनभेय ॥
तसु अधोभाग नारकि रहाय, पुनिऊर्ध्वभाग द्वय थानगाय।
वस रहें भवन व्यंतरजु देव पूर हर्म्य छजै रचना स्वमेव ॥
तिहथान गेह जिनराजभाख, गिन सातकोटि बहत्तर जुलाख।
जे भवननमों मनवचन काय, गति श्वभ्रहरन हारे लखाय ॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार, लखिदीप उदधिरचना विचार।
गिन असंख्यात भाखे जुसंत, लखि संभुरमन सबके जु अंत ॥
इक राजुव्यासमें सर्व जान, मधिलोकतनो इह कथन मान।
सबमध्य द्वीप जम्बू गिनेय त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥
इन तेरहमें जिनधाम जान, शतचार अठावन हैं प्रमान।
खग देव असुर नर आयआय, पद पूजजाय शिर नायनाय ॥
जय ऊर्ध्वलोक सुर कल्पवास, तिहथानछजे जिनभवनखास।
जय लाखचुरासी पर लखेय, जयसहस सत्याणव और ठेय ॥
जय बीसतीन फूनि जोडदेय, जिनभवन अकीर्तम जानलेय।
प्रतिभवन एकरचना कहाय, जिनबिंब एकशत आठ पाय ॥

शतपंच धनुष उन्नत लसाय, पदमासन जुतवर ध्यानलाय ।
शिरतीन छत्रशोभितविशाल, त्रयपादपीठ मणि जडितलाल ॥
भामंडलकी छवी कौन गाय, फुनिचंवरढुरत चोसठि लखाय ।
जय दुन्दुभिरव अद्भुत सुनाय, जयपुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥
जय तरुअशोक शोभा भलेय मंगल विभूति राजत अमेय ।
घटतूप छजे मणिमाल पाय, घटधूम्रधूम दिग सर्व छाय ॥
जयकेतुपंक्ति सोहैं महान, गंधर्व देव गन करत गान ।
सुर जनमलेतलखि अवधिपाय, तिहंथान प्रथम पूजन कराय ॥
जिनगेहतनो वरनन अपार, हम तुच्छबुद्धि किम लहतपार ।
जयदेव जिनेसूर जगत भूप, नमि नेम मंगे निज देहरूप ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बध्यष्टकोटि षट्पंचाशल्लक्ष सप्तनवति-सहस्त्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—तीनलोकमें सासते, श्रीजिन भवन विचार ।
मनवचतन करि शुद्धता पूजों अरघ उतार ॥

तिहुँ जगभीतर श्रीजिनमंदिर, बने अकृतिम अति सुखदाय ।
नर सुर खगकरि वंदनीक जे तीनको भविजन पाठ कराय ॥
धनधान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपोत्र सुख होत भलाय ।
चक्रीसुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपूर सुख थाय ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्व० त्यागी दौलतराम वर्णी कृत

श्री ऋषि-मण्डल पूजा

स्थापना । दोहा ।

चौबीस जिनपद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय ।
तृतीय पंच परमेष्ठि को, चौथे शारद माय ॥
मन वच तन ये चरन युग, करहूँ सदा परनाम ।
ऋषि मण्डल पूजा रचो, बुद्धि बल द्यो अभिराम ॥

अडिल्ल छंद-चौबीस जिन वसु वर्ग पंच गुरु जे कहे ।
रत्नत्रय चव देव चार अवधि लहे ॥
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर हीं तीन जू ।
अरहंत दश दिग्पाल यंत्र मे लीन जू ॥

दोहा-यह सब ऋषि मण्डल विषै, देवी देव अपार ।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबीसतीर्थंकर, अष्टवर्ग अर्हंतादि पंचपद-दर्शन-ज्ञान-चारित्रसहितचतुर्निकायदेव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्टऋद्धिसंयुक्त चतुर्विंशति सूरि, तीन ह्रीं, अर्हंत् बिबदस दिग्पाल यंत्रसम्बन्धिपरमदेव अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

जल क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि-चित सारसों ।
भरभृङ्ग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरत निवारसों ॥

जहां सुभग ऋषि मण्डल बिराजैं पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सबसुख स्वप्नमें दुख नहिं कदा ॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय यंत्रसम्बन्धिपरमदेवाय जलं ।१

मलय चंदन लाय सुन्दर गंध सौं अलि झंकरैं ।
सो लेहु भविजन कुम्भ भरिके तप्त दाह सब हरैं ॥
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० । चंदनं ॥

इन्दू किरण समान सुन्दर ज्योति मुक्ता की हरैं ।
हाटक रकेबी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करैं ॥
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ अक्षतं ।

पाटल गुलाब जुही चमेली मालती बेला घने ।
जिस सुरभितैं कल हंस नाचत फूल गुंथि माला बनै ।
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ पुष्पं ॥

अर्द्ध चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने ।
घृतपक्व मिश्रितरस सु पूरे लख क्षुधा डायनी हने ॥
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ नैवेद्यं ॥

मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं ॥
हाटक सुथाली माहि धरिके वारि जिनपद भूपकं ॥
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ दीपं ॥

चंदन सु कृष्णागरु कपूर मंगाय अग्नि जराइये ।
सो 'धूप धूम्र' आकाश लागी मनहुँ कर्म उडाइये ॥
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो ॥ धूपं ॥

दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये ।

मोक्ष फलके पायवे की आश धरि करि आइये।
जहां सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० । फलं ॥
जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवत् वारि तुम पद में दिया।
जहां सुभग ऋषि० । तिस मनो० ॥ अर्घ्यं ॥

अर्घावली। अडिल्ल छन्द।

वृषभ जिनेश्वर आदि अन्त महावीरजी।
ये चउवीस जिनराज हनों भवपीरजी ॥
ऋषि मण्डल बिच हीं विषैं राजे सदा।
पूजूं अर्घ्यं बनाय होय नहिं दुख कदा।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थाय वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थङ्कर परमदेवाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शाषासहा,।
ये वसुवर्ग महान यन्त्र में शुभ कहा ॥
जल शुभ गन्धादिक वर द्रव्य मंगायके।
पूजहूँ दोउ कमजोर शीश जिन नायके ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थाय कवर्गादिअष्टवर्ग सहिताय ह्म्ल्व्यूं परम यंत्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

कामिनी मोहनी छन्द

परम उत्कृष्ट परमेष्ठी पद पांच को,
नमत शत इन्द्र खग वृन्द पद सांचको।
तिमि अघनाश करणार्थ तुम अर्क हो,
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय पंचपरमेष्ठिपरमदेवाय अर्घ्यं०

सुन्दरी छन्द

शुभग सम्यग दर्शन ज्ञान जू, कह चरित्र सुधारक मान जू।
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले, चरण पूजहूँ साज सु ठाठ ले।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्योऽर्घ्यं

हरिगीता छन्द

भवनवासी देव व्यंतर ज्योतिषी कल्पेन्द्र जू,
जिनगृह जिनेश्वर देव राजै रत्न के प्रतिबिंब जू।
तोरण ध्वजा घण्टा बिराजै चंवर ढरत नवीन जू,
वर अर्घ ले तिन चरण पूजौं हर्षमें अति लीन जू॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय भवनेन्द्रव्यंतरेन्द्र ज्योतिषेन्द्र कल्पेन्द्र चतुःप्रकारदेवगृहेभ्यः श्रीजिनचैत्यालयसंयुक्तेभ्यो अर्घ्यं०

दोहा—अवधि चारप्रकार मुनि, धारत जे ऋषिराय।
अर्घ लेय तिन चरण जजि, विघन सबै मिट जाय॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थेभ्यो चतुःप्रकारअवधिधारक-मुनिभ्योऽर्घ्यं०

भुजंगप्रयात छन्द

कही आठऋद्धि धरे जे मुनीशं महाकार्यकारी बखानो गनीशं
जल गंध आदे दे जजों चर्नतेरे,लहीं सुक्ख सबेरे हरो दुखफेरे

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहितमुनिभ्योअर्घ्यं

श्री देवी प्रथम बखानी, इन आदिक चौबीसों मानी।
तत्पर जिन भक्ति विष हैं, पूजत सब रोग नशै हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्या श्रीआदिचतुर्विंशदेवीभ्योऽर्घ्यं०

हंसा छन्द

यन्त्र विषै वरन्यो तिरकोन, हीं तहं तीन युक्त सुखभोन ।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ सहित पूजूं शिर नाय ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थायत्रिकोणमध्ये तीनह्रीं संयुक्तायऽर्घ्यं०

तोमर छंद

दश आठ दोष निरवारि, छयालीस महागुण धारि ।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय, तिन चर्न जजों सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय अष्टादशदोषरहिताय छयालीस महागुणयुक्ताय अर्हद्परमेष्ठिने अर्घं ।

सोरठा—दश दिश दश दिग्पाल, दिशानाम सौ नामवर ।
तिनगृह श्रीजिन राज पूजौ मैं वन्दौं सदा ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो दशदिग्पालेभ्यः जिनभक्ति युक्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।

दोहा—ऋषिमण्डल शुभयन्त्र के देवी देव चितारि ।
अर्घ सहित पूजहूँ चरन, दुख दारिद्र निवारि ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो ऋषिमंडल सम्बन्धदेवी—देवेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।

अथ जयमाला

दोहा—चौबीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊं भाल ।
शारद पद पंकज नमूं गाऊं शुभ जयमाल ॥

जय आदिश्वर जिन आदिदेव, शत इन्द्र जजैं मैं करहुँ सेव ।
जय अजित जिनेश्वर जे अजीत जे जीत भये भव तैं अतीत ॥
जय संभव जिन भवकूप मांहि डूबत राखहु तुम शर्ण आंहि ।
जय अभिनंदन आनंद देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत ॥

जय सुमति २ दाता जिनन्द, जयकुमति तिमिर नाशनदिनंद ।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिनरैन करहूँ तव चरन सेव ॥
जय श्री सुपार्श्व भव पास नाश, भवि जीवनकूं दियो मुक्तिवास
जय चंद जिनेश दया निधान, गुणसागर नागर सुख प्रमान
जय पुष्पदंत जिनवर जगीश, सतइन्द्र नमत नित आत्मशीश
जय शीतल वच शीतल जिनंद, भवताप नशावत जगतचन्द
जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भविकंठ मांहि मुक्तासुहार
जय वासुपूज्य बासव खगेश, तुम स्तुतिकर पुनि नमि हमेश।
जय विमल जिनेश्वर विमलदेव, मलरहित बिराजत करहूँ सेव ।
जय जिन अनंतके गुण अनंत कथनी कर गणधर लहे न अंत ॥
जय धर्म धुरंधर धर्मधीर, जय धर्म चक्र शुचि ल्याय वीर।
जय शांति जिनेश्वर शांतिभाव, भववन भटकत शुभमग लखाव
जय कुन्थु कुन्थुवा जीव पाल सेवक पर रक्षा करि कृपाल ।
जय अरहनाथ अरि कर्मशैल, तपवज्र खंड २ लहिमुक्ति गैल
जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ, मल डारे पायो मुक्ति ठाठ ।
जय सुव्रत मुनि सुव्रत धरन्त, जय सुव्रत व्रत पालत महन्त ॥
जय नमिय नमत सुरवृन्द पाय पद पंकज निरखत शीशनाय ।
जय नेमि जिनेन्द्र दयानिधान, फैलायो जग में तत्वज्ञान ॥
जय पारस जिन आलस निवारि उपसर्ग रुद्र कृत जीतधारि।
जय महावीर महाधीरधार, भव कूप थकी जग तैं निकार ॥
जय वर्गआठ सुन्दर अपार, तिन भेद लखत बुध करतसार ।
जय परमपूज्य परमेष्ठि सार, जिन सुमरत वरसे मोड धार ॥

जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन, ये रत्न महा उज्ज्वल प्रवीन ।
जय चार प्रकार सुदेव सार, तीनके गृह जिन मन्दिर अपार ॥
जो पूजै वसुविधि द्रव्यलाय, मैं इत जजि तुम पद शीशनाय ।
जो मुनिवर धारत अवधि चार, तिन पूजै भवि भव सिंधुपार ॥
जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरंत, ते मोपै करुणा करि महन्त ।
चौबीस देवि जिन भक्ति लीन, बंदन ताको सु परोक्ष कीन ॥
जे हीं तीन त्रिकोण मांहि, तिन नमत सदा आनन्द पाहि ।
जय जय जय श्री अरहंत बिंब तीन पद पूजूं मैं खोइ डिंब ।
जो दश दिग्पाल कहें महान, जे दिशा नाम सो नाम जान ।
जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम ।
ध्वज तोरण घंटायुक्तसार, मोतिन माला लटकैं अपार ।
जे ता मधि वेदि है अनूप, तहां राजत हैं जिनराज भूप ॥
जय मुद्रा शांति विराजमान, जा लखि वैराग्य बढ़े महान ।
जे देवि देव आय आय पूजैं तिन पद मन वचन काय ।
जल मिष्ठ सु उज्ज्वल पय समान, चंदन मलयागिरको महान ॥
जे अक्षत अनियारे सु लाय जे पुष्पन की माला बनाय ॥
चरु मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार ।
जे धूपसु कृष्णागर सुखेय, फल विविध भांतिके मिष्टलेय ॥
वर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ैव ।
फिर मुखतें स्तुति करते उचार हो करुणानिधि संसार तार ॥

मैं दुख सहे संसार इस, तुमतैं छानी नाहीं जगीश ।
जे इहविधि मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र संसारभार
इहविधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यंत्र सु चित्तलाय
जे ऋषिमंडल पूजन करंत, ते रोग शोक संकट हरन्त ।
जे राजारन कुल वृद्धि जान, जल दुर्गसु जग के हरि बखान
जे विपत घोर अरु अहि मसान, भय दूर करै यह सकल जान
जे राजभ्रष्ट ते राज पाय, पद भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय ।
धन अर्थी जन पावै महान, या मैं संशय कछु नाहिं जान ॥
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अर्थी सुत पावै तुरंत ।
जे रूपा सोना ताम्रपत्र, लिख तापर यंत्र महा पवित्र ॥
ता पूजैं भागे सकल रोग जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग ।
तिन गृह तैं भूत पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन
जे ऋषिमंडल पूजा करंत, ते सुख पावत लहि लहै न अंत ।
जब ऐसी मैं मन मांहि जान तब भाव सहित पूजा सुठान ।
वसुविधिके सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढाय
फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव
तुम देवनके हो देव देव इक अरज वितमें धारि लेव ॥
हे दिन दयाल दया कराय, जो मैं दुखिया इह जग भ्रमाय ।
जे इस भववनमें वास लीन जे काल अनादि गमाय दीन ॥
भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहे सुक्खको लेशनाहिं
ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे मनमाने ये दुःख दीन ।

ये काहे को नहिं डर धराय, इनतैं भयभीत भयो अघाय ।
यह जन्म२ की बात जान मैं कह न सकत हूँ देवमान ॥
जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान
उपकारी तुम बिन और नांहि दीखत मोकों इस जगत मांहि
तुम सब लायक ज्ञायक जिनेन्द्र, रत्न त्रय सम्पत्ति द्यो अमंद
यह अरज करूं मैं श्रीजिनेश, भव२ सेवा तुम पद हमेश ॥
भवभवमें श्रावक कुल महान, भवभवमें प्रकटित तत्वज्ञान ।
भवभवमें व्रत हो अनागार, तिस पालन तैं हों भवाब्धिपार ॥
ये योग सदा मुझको लहान, है दिनबन्धु करूणा निधान ।
"दौलत आसेरी" मित्र दीय, तुम शरण गही हरषित सुहोय
घत्ता-जो पूजे ध्यावे भक्ति बढावे, ऋषि मंडल शुभ यंत्रतनी ।
या भव सुखपावे सुजस लहावे, परभव स्वर्ग मुलक्ष धनी

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय रोगशोक सर्व-संकट-हराय सर्वशांतिपुष्टिकराय श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद, दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्निकाय देव चव प्रकार अवधिधारक श्रमण अष्ट ऋद्धि संयुक्त बीस चार सुरि, तीन ह्रीं अर्हंदबिम्ब दशदिग्पाल यंत्र सम्बन्धि परम-देवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋषि मंडल शुभ यंत्र को जो पूजे मन लाय ।
ऋद्धि सिद्धि ता घर बसे, विघन सघन मिट जाय ॥
विघन सघन मिट जाय, सदा सुख सो नर पावै ।
ऋषि मंडल शुभ यंत्र तनी, जो पूज रचावै ॥

भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै ।
या भव में सुख भोग, स्वर्गकी सम्पति पावै ॥
या पूजा परभाव मिटे भव भ्रमण निरन्तर ।
यातैं निश्चय मान करो, नित भावभक्ति धर ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सम्वत् भूव ग्रह मांहि, सावन सार असेत ।
पहर रात बाकी रही, पूर्ण करी सुख हेत ॥

श्री तीस चौबीसी पूजा

पांच भरत शुभ क्षेत्र, पांच ऐरावते,
आगत नागत वर्तमान जिन शाश्वते ।
सो चौबीसी तीस जजों मन लायके,
आह्वाननं विधि करूं वार त्रय गायके ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि-पंचभरत पंचऐरावत क्षेत्रस्थ भूतानागत वर्तमान-सम्बन्धिसप्तशतविंशतितीर्थंकराः अत्र अवतर२ संवौषट् इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

नीर दधि क्षीर सम लायो, कनकके भृग भरवायो ।
जरा मृतु रोग सन्तायो, अवै तुम चरण ढिंग आयो ।
द्वीप ढाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता दश विषै छाजै ।
सात शत बीस जिनराजैं, पूजते पाप सब भाजैं ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचभरत-पंचऐरावत--क्षेत्रस्थ--भूतानागत--वर्तमानकाल सम्बन्धि तीस चौबीसीके सातसौवीस तीर्थंकरेभ्यो जलं नि ।

सुरभिजुत चन्दन लायो, संग करपूर घसवायो।
धार तुम चरण ढरवायो, सु भवआताप नशवायो।द्वीप०।
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो चदनम् नि०।
चन्द्रसम तन्दुल, सारं किरण मुक्ता जु उनहारं।
पुंज तुम चरनढिंग धारं, अक्षय पद काजके कारं।द्वीप०।
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् नि०।
पुष्प—शुभ गन्धजुत सोहें सुगन्धित तास तन मोहे।
जजत तुम मदन छय होवे, मुक्तिपुर पलकमें जोवे।द्वीप०।
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं नि०।
सरस व्यञ्जन लिया ताजा, तुरत बनवाइया खाजा।
चरन तुम जजो महाराजा, क्षुधा दुख पलकमें भाजा द्वीप०
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं नि०।
दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ ज्योतिधारी हैं।
होय दश दिश उजारी है, धूम्र मिस पाप जारी हैं।द्वीप०।
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो दीपं नि०।
सरस शुभ धूप दश अगी, जलाऊं अग्निके संगी।
करम की सैन चतुरंगी, चरण तुम पूजते भंगी।।द्वीप०।।
ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो धूपं नि०।

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो ।
श्रीजिन भेट करवायो, कार्य मनवांछित पायो ॥द्वीप० ।

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो फलं नि० ।

द्रव्य आठो जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है ।
पूजतैं पाप छीना है 'भानमल' जोड कीना है ॥ द्वीप० ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धि तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ।

प्रत्येक अर्घं

आदि सुदर्शन मेरु तनी दक्षिण दिशा,
भरत क्षेत्र सुखदाय सरस सुन्दर बसा ।
तिहँ चौबीसी तीन तने जिनरायजी,
बहत्तरि जिन सर्वज्ञ नमो शिरनायजी ।१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र सम्बन्धिके तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ।

ताहि मेरु उत्तर ऐरावत सोहनो,
आगत नागत वर्तमान मनमोहनो ।
तिहँ चौबीसी तीन तने जिनरायजी,
बहत्तरि जिन सर्वज्ञ नमों शिरनायजी ।२।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी उत्तर दिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ।

खण्ड धातुकी विजय मेरुके, दक्षिण दिशा बरत शुभ जान ।
तहां चौबीसी तिन विराजे, आगत नागत करु वर्तमान ।
तिनके चरणकमलको निशदिन अर्घ चढाय करुं उरध्यान ।
इस संसार भ्रमणतैं तारो अहो जिनेश्वर करुणावान ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड द्वीपको पूर्वदिशि विजयमेरुकी दक्षिण भरत क्षेत्रसंबन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

इसी द्वीपकी प्रथम शिखरके, उत्तर ऐरावत जो महान ।
आगत-नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा शाश्वते जान ॥
तिनके चरण कमलको निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूं उरध्यान ।
इस संसार भ्रमणतैं तारो, अहो जिनेश्वर करुणावान ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड द्वीपकी पूर्वदिशि विजयमेरुकी उत्तरदिशि ऐरावतक्षेत्रसंबन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि०

चौपाई

खंडधातुकी गिरि अचल जु मेरु, दक्षिण तास भरत बहुँ घेरु
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान ।

ॐ ह्रीं धातुकीखण्डकी पश्चिमदिशा अचलमेरुकी दक्षिण दिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

अचल मेरु उत्तर दिश जाय, ऐरावत शुभ क्षेत्र बताय ।
तामें चोबीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान ।

ॐ ह्रीं धातुखंडकी पश्चिमदिशा अचलमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धि तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

सुन्दरी छन्द

द्वीप पुष्करकी पूरब दिशा, मंदिर मेरुकी दक्षिण भरतसा ।
ताविषै चौबीसी तीन अर्घ जु, अर्घ लेय जजौं परवीन जु ।

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपकी पूर्वदिशा मंदिरमेरुकी दक्षिणदिशा भरत क्षेत्र सम्बन्धि तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

गिर सु मन्दिर उत्तर जानियो, क्षेत्र ऐरावत सु बखानियो ।
ताविषै चौबीसी तीन जु अर्घ लेय जजुं परवीन जू ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपकी पूर्वदिशा मंदिरमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावत सम्बन्धि तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

पद्धरि छन्द

पश्चिम पुष्करगिरि विद्युतमाल, ता दक्षिण भरत बन्यो रसाल
तामें चौबीसी हैं जु तीन वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपकी पश्चिमदिशा विद्युतमालीमेरुकी दक्षिण दिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तरजिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि.

याही गिरिके उत्तरजु ओर ऐरावत क्षेत्र तनी सुठोर।
तामें चौबीसी हैं जु तीन वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपकी पश्चिम दिशा विद्युत्मालीमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्रसंबन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि० ।

द्वीप अढाई के विषै, पंचमेरु हित दाय ।
दक्षिण उत्तर ताहुके, भरत ऐरावत भाय ।
भरत ऐरावत भाय, एक क्षेत्र के मांही,
चौबीसी है तीन, तीन दशो ही के माहीं ।
दशो क्षेत्र के तीस सात सौ बीस जिनेश्वर,
अर्घ लेय कर जोर जजौं 'रविमल' मन शुद्ध कर ।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबन्धी दश क्षेत्रके विषै तीस चौबीसीके सातसौ वीस जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ।

जयमाला

दोहा—चौबीसी तीसो तनी पूजा परम रसाल ।
मन-बच-तन सों शुद्धकर अब वरणो जयमाल ॥

जय द्वीप अढ़ाई में जु सार, गिरि पंचमेरु उन्नत अपार ।
तागिरि पूरब पश्चिम जु और,शुभक्षेत्र विदेह बसौ जुठोर ॥

ता दक्षिण क्षेत्र भरत सु जान है उत्तर ऐरावत महान ।
गिरि पांचतन दश क्षेत्र जोय, ताको वरनन सुनि भव्य लोय
जो भरत तने वरनन विशाल, तैसो ही ऐरावत रसाल ।
इक क्षेत्र बीच विजयार्द्ध एक ता उपर विद्याधर अनेक ॥
इक क्षेत्र तने षट खंड जान, तहां छहों काल बरतैं समान ।
जो तीन कालमें भोगभूमि, दश जाति कल्पतरु रहें भूमि ॥
जब चौथी काल लगै जु आय, तब कर्मभूमि वर्तै सु आय ।
जब तीर्थंकरको जन्म होय, सुरलेय जजें गिरि मेरु सोय ।
बहु भक्ति करें सब देव आय, ताथेई थेई थेई की तानलाय
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनंदकार ॥
इत्यादि भक्ति करिके सुरिन्द्र, जिनथान जाय युत देव वृन्द
या विधि पांच कल्याण जोय, हरिभक्ति करैं अतिहर्ष होय
या कालविषै पुण्यवन्त जीव, नरजन्ममार शिव लहै अतीव
सब त्रेसठ पुरुष प्रवीन जोय सब याही काल विषै जु होय
जब पंचमकाल करे प्रवेश, मुनि धर्म तनो नहिं रहे लेश ।
विरले कोई दक्षिण देश मांहि, जिनधर्मी जन बहुते जु नांहीं
जब आवत है षष्टम जु काल दुःखमें दुःख प्रगटै अतिकराल
तब मांसभक्षी नर सर्व होय, जहां धर्म नाम नहिं सुनै कोय
याहीं विधिसे षट्काल जोय, दशक्षेत्रनमें इकसार होय ॥
सब क्षेत्रनमें रचना समान जिनवाणी भाख्यो सो प्रमान ।
चौबीसी है इक क्षेत्र तीन दश क्षेत्र तीस जानो प्रवीन ॥

आगत नागत जिन वर्तमान सब सात शतक अरु बीस जान
सबही जिनराज नमो त्रिकाल,मोहिभववारिधितै ल्यो निकाल
यह वचन हृदयमें धारि लेव मम रक्षा करो जिनेन्द्र देव ।
'रविमल'की विनती सुनो नाथ, तुमशरणलई करजोडी हाथ
मनवांछित कारज करो पूर, यह अरज हियेमें धरि हजूर ॥
घत्ता–शत सातजु बासं श्रीजगदीशं आगत नागत वर्तु है
मनवचतन पूजै, शुभमन हूँजै सुरग मुक्तिपद धारत है

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि दशक्षेत्रके विषै तीस चौबीसीके सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ।

दोहा–सम्वत् शत उन्नीस के ता उपर पुनि आठ ।
पौष कृष्ण तृतीया गुरु, पूरन कीनो पाठ ॥
अक्षर मात्राकी कसर, बुध जन शुद्ध करेहि ।
अल्प बुद्धि मोहि जानके, दोष नाहिं मम देहि ॥
पढ्यो नहीं व्याकरण मैं, पिङ्गल देख्यो नाहिं ।
जिनवाणी परसादतैं उमंग भई घट मांहि ॥
मान बढाई ना चहूँ, चहूँ धर्मको अंग ।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धार उमंग ॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलि

रविव्रत पूजा

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही ।
करहुँ भव्यजन लोक, सुमन दे के सही ॥
पूजौं पार्श्व जिनेन्द्र त्रियोग लगाय के ।
मिटै सकल संताप मिले निधि आयके ॥

मति सागर इक सेठ कथा ग्रंथन कही ।
उनही ने यह पूजा कर आनन्द लही ॥
तातैं रविव्रतसार, सो भविजन कीजिये ।
सुख सम्पति संतान अतुल निधि लीजिये ॥

दोहा—प्रणमों पार्श्व जिनेशको, हाथ जोड शिर नाय ।
परभव सुखके कारने, पूजा करूं बनाय ॥
रविवार व्रतके दिना, एहीं पूजन ठान ।
ता फल स्वर्ग सम्पति लहै, निश्चय लीजे मान ।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेंद्र । अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिष्ठापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

उज्ज्वल जल भरके अति लायो रतन कटोरन माहीं ।
धार देत अति हर्ष बढावत जन्म जरा मिट जाहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत दिन भाई ।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगल दाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्रायजन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।१।

मलयागिरि केशर अति सुन्दर कुंकुम रंग बनाई ।
धार देत जिनचरन आगे, भव आताप नशाई । पारस ।चंदनं

मोती सा अति उज्ज्वल तन्दुल ल्यायो नीर पखारो ।
अक्षयपदके हेतु भावसों श्रीजिनेश्वर ढिंग धारो ।पारस .अक्षतं

बेला अर मचकुन्द चमेली, पारिजातके ल्यावो ।
चुनचुन श्री जिन अग्र चढ़ाऊ, मनवांछित फल पावो .पा.पुष्पं

बावर फेनी गुंजा आदिक, घृत में तेल पकाई ।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढाई ।पारस.।नैवेद्यं

मणिमय दीप रतन मय लेकर, जगमग जोति जगाई।
जिनके आगे आरति करके, मोह तिमिर नशजाई ।पा. ।दीपं
चूनकर मलयागिरका चन्दन, धूप दशांग बनाई ।
तव पावकमें खेय भावसों, कर्मनाश हो जाई । पारस.। धूपं
श्रीफल आदि बदाम सुपारी, भांति भांति के लावो ।
श्रीजिनचरन चढाय हरष कर, तातें शिवफल पावो ।पा. फलं
जल गन्धादिक अष्ट द्रव्य ले, अरघ बनाओ भाई।
नाचत गावत हर्षभाव सों कंचन थार भराई । पा. । अर्घं

गीता छन्द

मन वचन काय विशुद्ध करके पार्श्वनाथ सु पूजिये ।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन भक्तिवंत सु हुजिये ।
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुख दातारजी ।
जे करत हैं नरनारी पूजा, लहत सुख अपारजी ॥पूर्णार्घं ॥

जयमाला

दोहा—यह जगमें विख्यात है, पारसनाथ महान।
जिन गुनकी जयमालिका, भाषा करो बखान ॥

पद्धरि छन्द

जय जय प्रणमों श्रीपार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहूंलोक विषै उद्योत कीन ॥
जय जिनके पितुश्रीविश्वसेन, तिनके घर भये सुख चैन देन ।
जय बामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ॥२
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजनके दाता भए ऐन ।
जय जिनने प्रभुकी शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन

जय नाग नागिनी भये अधीन, प्रभु चरनन लाग रहे प्रवीन
तजके सो देह स्वर्ग सु जाय, धरणेन्द्र पद्मावती भये आय ४
जय चोर सुअंजन अधमजान, चोरी तज प्रभुको धरे ध्यान
जय मृत्यु भये स्वर्गे सु जाय, ऋद्धि अनेक उनने सो पाय ५
जय मतिसागर इक सेठ जान जिन, रविव्रत पूजा करि ठान
तिनके सुत थे परदेश मांहि, जिन अशुभ कर्म काटे सु ताहि ६
जे रविव्रत पूजन करि सेठ ता फलकर सबसे भई भेट।
जिन जिनने प्रभुकी शरण लीन, तीन रिद्धि सिद्धि पाई नवनिन
जे रविव्रत पूजा करहि जेय, ते सुक्ख अनन्तानन्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावती हुए सहाय प्रभु भक्त जान तत्काल जाय
पूजा विधान इहि विधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय
जे भक्तिभाव जयमाल गाय सोंही सुख सम्पति अतुल पाय
बाजत मृदंग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार।
तन नननननननन ताल देत, सन नननननन सुर भर सुलेत
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छमछमछमछम घुंघरु बजाय
जे कहति निरति इहि भांति२, ते लहहि सुक्ख शिवपुरसुजात

दोहा—रविव्रत पूजा पार्श्वकी करे भाविक जन जोय।
सुख सम्पत्ति इह भव लहें तुरत सुरग पद होय॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व०।

अडिल्ल—रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र पूज्य भवि जन धरे।
भव भव के आताप सकल छिनमें टरें॥

होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहें ।
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहें ॥
फेर सर्व विध पाय भक्ति प्रभु अनुसरैं ।
नाना विध सुख भोग बहुरि शिव तियवरैं ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री आदिनाथ जिन पूजा ।

नाभिराय मरुदेविके नन्दन, आदिनाथ स्वामी महाराज ।
सर्वारथसिद्धितै आप पधारे, मध्य लोक मांहि जिनराज ॥
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज ।
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजैं प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

क्षीरोदधिको उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय ।
जन्म-जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढाऊं प्रभुजीके पांय ।
श्रीआदिनाथके चरण-कमलपर, बलि-२ जाऊं मन वच काय
हो करुणानिधि भवदुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०।

मलयागिरी चंदन दाह निकन्दन, कंचनझारीमें भर ल्याय ।
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, भव आताप तुरत मिटि जाय
श्री आदि० ॥ चंदन ॥

शुभशालि अखंडित सौरभ-मंडित, प्रासुकजलसौं धोकर ल्याय
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, अक्षय पदको तुरत उपाय ॥
श्री आदि० ॥अक्षतं।

कमल केतली बेल चमेली, श्रीगुलाबके पुष्प मंगाय ।
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, कामबाण तुरत नशि जाय।
श्री आदि० ॥ पुष्पं ॥

नेवज लोना षट रस भोना श्रीजिनवर आगे धरवाय ।
थाल भराऊं क्षुधा नशाऊं, ल्याऊं प्रभु के मंगल गाय ॥
श्री आदि० । नैवेद्यं ॥

जगमग जगमग होत दशो दिश,ज्योति रही मंदिरमें छाय।
श्रीजीके सन्मुख करत आरती, मोह-तिमिर नासै दुखदाय ॥
श्री आदि० ॥ दीपं ॥

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर, चन्दन कूट सुगन्ध मिलाय ।
श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहूँ गति मिटजाय
श्री आदि० ॥धूपं॥

श्रीफल और बदाम सुपारी केला आदि छुहारा ल्याय ।
मनमोक्ष-फल पावन कारन, ल्याय चढाऊं प्रभुजीके पांय ॥
श्री आदि० । फलं।

शुचि निरमल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरुले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ॥
श्री आदि० ॥अर्घं॥

पंचकल्याणक

सर्वार्थसिद्धितैं चये मरुदेवी उतर आय ।
दोज असित आषाढकी जजूं तिहारे पाय ॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाद्वितीययां गर्भ कल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

चैत्र वदी नौमी दिना, जनम्या श्री भगवान ।
सुरपति उत्सव अति कराया, मैं पूजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

तृणवत ऋद्धि सब छांडिके, तप धारयो बन जाय ।
नौमी चैत्र असेत की, जजूं तिहारे पांय ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवल ज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करि, मैं पूजों यह थान ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की मोक्ष गये भगवान ।
भवि जीवोंको बोधिके, पहूँचे शिवपुर थान ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

जयमाला ।

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूं ।
चारो गतिके मांहि मैं दुख पायो सो सुनो ॥

अष्ट कर्म मैं एकलो यह दुष्ट महादुख देत हो ।
कबहुँ इतर निगोद में मोकूं पटकत करत अचेत हो ।।
म्हारी दीनतणी सुन विनती ॥१॥

प्रभु कबहुँ पटक्यो नरकमें जठै जीव महादुःख पाय हो ।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो । म्हा.
प्रभु नरकतणा दुःख अब कहु जठै करत परस्पर घात हो ।
कोइयक बांध्यो खांभसो, पापी दे मुद्गरकी मार हो म्हा.
कोइयक काटे करोत सों पापी अंगतणी दोय फाड हो ।
प्रभु यह विधि दुःखभुगत्या घणा फिरगतिपाई तिरयंच हो ।
हिरण बकरा बाछला, पशु दीन गरीब अनाथ हो ।
पकड कसाई जाल में पापी काट काट तन खाय हो म्हा.
प्रभु मैं ऊंट बलद भैंसों भयो, ज्यांपै लादियों भार अपार हो
नहिं चाल्यो जब गिरपरयो, पापी दे सोटन की मार हो म्हा.
प्रभु कोइयक पुण्य संयोगसु मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो ।
देवांगना संग रमि रह्यो, जठै भोगनिको परिताप हो । म्हा.
प्रभुसंघ अप्सरा रमि रह्यो कर कर अति अनुराग हो ।
कबहुँक नन्दनवन-विषै, प्रभु कबहुँ बन गृह मांहि हो । म्हा.
प्रभु यहविधि काल गमायकं, फिर मालागई मुरझाय हो ।
देव तिथि सब घट गई फिर उपज्यो सोच अपार हो ।
सोच करता तन खिरपडयो, फिर उपज्यो गरभमें जाय हो म्हा.

प्रभुगर्भतणा दुख अब कहूँ, जठै सकुडाईकी ठौर हो।
हलन-चलन नहिं कर सक्यो जठै सघनकीच घनघोर हो।म्हा
माता खावै चरपरो, फिर लागै तन सन्ताप हो ।
प्रभु जो जननी तातो भखै, फिर उपजे तन संताप हो।म्हा.
औंधे मुख झूल्यो रह्यो, फेर निकसन कौन उपाय हो ।
कठिन २ कर निसरयो जैसे निसरै जंत्रीमें तार हो।म्हा.
प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पडयो, फिर लागीभूक अपारहो
रोय रोय विलख्यो घणो, दुख वेदनको नाहिं पार हो।म्हा.
प्रभु दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागू तिहारे पांय हो।
सेवक अरज करै प्रभु ! मोकूं भवोदधि पार उतार हो म्हा.

दोहा—श्रीजीकी महिमा अगम है, कोई न पावै पार ।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करै विस्तार ॥

ॐ ह्रीं आदिनाथाय जिनेन्द्राय महार्घं निर्व० स्वाहा।

दोहा—विनती ऋषभ जिनेशकी जो पढसी मन लाय ।
स्वर्गोमें संशय नहीं निश्चय शिवपुर जाय ।

इत्याशीर्वादः ।

पंच बालयती तीर्थंकर पूजा

दोहा—श्री जिन पंच अनंगजित, वासुपूज्य मलि नेम ।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम ॥

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

शुचि शीतल सुरभि सुनीर, लायो भर झारी।
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अति।
नमुं मन वच तन धरि प्रेम, पांचों बालयति।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर करपूर जल में घसि आनो।
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानो॥ श्रीवासु. ।चंदनं
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे
बह देश देशके लाय, तुमरी भेट धरे। वासु. ॥ अक्षतं॥
यह काम सुभट अति सूर, मनमें क्षोभ करो।
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरो। श्रीवासु.। पुष्पं॥
षट्रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी।
द्वय करम वेदनी छेद, आनंद है भारी। श्रीवासु. ।नैवेद्यं॥
धरि दीपक जगमग ज्योति तुम चरनन आगे।
मम मोह तिमिर क्षय होत, आतम गुण जागे॥श्रीवासु.दीपं
ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं गन्ध मयी।
दशगंध दहन जिन भूप, तुम हो कर्मजयी।श्रीवासु.।धूपं॥
पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने।
तुम चरण जजूं गुणधाम, द्योसुख मोक्ष तने।श्रीवासु.।फलं॥
सजि वसुविधि द्रव्य मोनज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं।श्रीवासु.॥अर्घं।

जयमाला

दोहा—बालब्रह्मचारी भये, पांचो श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका, कहूँ स्वपर हितकाज ॥
जयजय जयजय श्रीवासुपूज्य तुम सम जगमें नहीं और दूज ।
तुम महालक्ष सुर लोक छार, जब गर्भ मात मांहि पधार ॥
षोडश स्वपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
अति हर्षधार दंपति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान ॥
छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छः मास अगाऊ गर्भ आय, धनपति सुवरन नगरी रचाय ॥
तुम तात महल आंगन मंझार तिहूँकाल रतन धारा अपार ।
वरषाये षट् नवमास सार, धनि जिन पुरुषन नयनन निहार
जय मल्लिनाथ देवन सदेव, शतइन्द्र करत तुम चरन सेव ।
तुम जन्मत ही त्रयज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुँ जग अपार
तबही ले चहु विधि देव संग, सौधर्म इन्द्र आयो उमंग ।
सजि गज ले तुम हर गोद आप, बन पांडुक शिल उपर सुथाप
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जरु घट हाथोहाथ लाय ॥
करि न्हवन वस्त्रभूषण सजाय, दे ताल नृत्य तांडव कराय ।
पुनि हर्षधार हृदये अपार, सब निर्जर तब जय जय उचार ॥
तिस अवसर आनन्द हे जिनेश हम कहिवे समरथ नांहि लेश
जय जादोपति श्री नेमिनाथ हम नमत सदा जुग जोरि हाथ
तुम ब्याह समय पशुवन पुकार, सुन तुरत छुडाये दयाधार ।
कर कंकण अरु सिर मौर बन्द, सो तोड भये छिनमें स्वछन्द

तबही लोकांतिक देव आय, वैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ॥
तत्क्षण शिविका लाये सुरन्द आरुढ भये तापर जिनेन्द्र ।
सो शिविका निज कंधन उठाय,सुरनरखग मिल तपवन ठैराय
कचलौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार ।
हरि केश लेय रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांहि पधार
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ
जुग नाग जरत कीनो सुरक्ष, यह बात सकल जगमें प्रत्यक्ष
तुम सुर धनु सम लखि जग असार, तपत भये तन ममतक्षार
सठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेरु नहिं ढगमगाय
तुम शुक्लध्यान गहि खंडन हाथ,अरि चार घातियाकर सुघात
उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुवेर हरि बच प्रमाण ॥
की समोसरण रचना विचित्र, तहां खिरत भई वाणी पवित्र
मुनि सुरनर खग तिर्यंच आय सुनि निज२ भाषा बोध पाय ॥
जय वर्द्धमान अंतिम जिनेश पायो न अंत तुम गुण गणेश ।
तुम चार अघाती करमहान लियो, मोक्षस्वयंसुख अचलथान ॥
तबही सुरपति बल अवधिजान, सब देवन युत बहु हर्षठान ।
सजि निज बाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुम शरीर
निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चन्दन कपूर ।
बहु द्रव्य सुगन्धित सरस सार, तामें श्रीजिनवर वपु अपार
निज अगनिकुमारिन मुकूटनाय,तिहं रतननिशुचि ज्वाला उठाय
तिस शिर मांह दीनों लगाय,सो भस्म सबन मस्तक चढाय
अति हर्ष थकी रचि दीपमाल, शुभ रतनमई दशदिश उजाल

पुनि गीत नृत्य बाजे बजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय
सो थान अबै जगमें प्रत्यक्ष, नित होत दीपमाला सुलक्ष ।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिक सुसार
तुम ज्ञानमांहि तिहुँलोक दर्व, प्रतिबिंबत हैं चर अचर सर्व ।
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध
ह्वै बालयति तुम सबन एम, अचरज शिवकांता वरी केम ।
तुम परम शांति मुद्रा सुधार, किये अष्टकर्म रिपुको प्रहार ॥
हम करत विनती बार बार, कर जोर स्व मस्तक धार धार ।
तुम भये भवोदधि पार पार, मोको सुवेग ही तार तार ॥
अरदास दास ये पूर पूर, वसु कर्म शैल चकचूर चूर ।
दुख सहन करन अब शक्ति नांहि, गहि चरणशरण किजे निबाह
चौ०—पांचों बालयति तीर्थेश, तिनकी यह जयमाल विशेष ।
मनवचकाय त्रियोग संहार जे गावत पावत भवपार ॥

ॐ ह्रीं पंच बालयति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घं ।

दोहा—ब्रह्मचर्य सो नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ ।
पांचों बाल यतीन को, कीजे नित प्रति पाठ ॥

इत्याशीर्वादः ।

पंच परमेष्ठीकी पूजा ।

दोहा—मंगल मय मंगल करन, पंच परम पदसार ।
अशरण को ये ही शरण, उत्तम लोक मंझार ॥१॥
चव अरिष्ट को नष्ट कर, अनन्त चतुष्टय पाय ।
परम इष्ट अरिहन्त पद, वन्दौं शीष नवाय ॥२॥

वसुविधिहरि वसु भू वसे वसु गुणयुत शिव ईश ।
नमूं नाथ वसु अंग तिन, दायक पद जगदीश ॥३॥
आप धरैं आचार शुभ, पर आचरावन हार ।
सो आचरज गुणधर, नमूं शीश कर धार ॥४॥
आप अंग पूरव बढै, शिषनि पढावत सोय ।
ते उवझाय सु नाय सिर, नमूं देव धो मोय ॥५॥
मोक्ष मार्ग साधन उदित, धरै मूल गुण साध ।
मैं शिवसाधन साधु पद, नमूं हरन भव वाधि ॥६॥
इहि विधि पंचनि प्रणमिकर, रचूं पूज सुखकार ।
तातैं प्रथमहि पढनि को, समुचय जजि हूँ सार ॥पुष्पा.

[अथ पंच परमेष्ठी सामान्य पूजा]

अडिल्ल—प्रथम नमूं अरिहन्त सिद्ध अरु सूर ही,
उपाध्याय सब साधु नमूं गुण पूरहो ॥
परम इष्ट यह पंच जजों जुग पादही,
आह्वाननं विधि करूं सुगुन गुण गावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तादि सर्वसाधुपर्यंत पंचपरमेष्ठिन्! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः प्रतिष्ठापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक-गीता छन्द ।

वर मिष्ट स्वच्छ सुगन्ध शीतल, सुर सरित जल लाइये ।
भरि कनक झारी धार देतें, जन्म मृत्यु नशाइये ।।

अरिहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय सुपद सब साधही ।
पूजूं सदा मन वचन तन तैं, हरो मो भव बाध ही ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय माँहि मिलाय केशर, घसौं चंदन बावना ।
भृंगार भरिकरि चरण पूजन, भवआताप नसावना ।अ.चंदनं
अक्षत अखंडित सुरभि श्वेत हि, लेत भरि करि थालही ।
जे जजै भविजन भाव सेती, अक्षयपद पावै सही ।अरि.अक्षतं
स्वर्ण रूप्यमय मनोहर, विविध पुष्प मिलाइये ।
भरि कनकथाल सु पूजि है,भवि समर-बान नशाइये ।अ.पुष्पं
बहु मिष्ट मोदक सुष्ट फेनी, आदि बहु पकवान ही ।
भरिथाल प्रभु जजैं विधतैं, नसैं क्षत दुखनाशही अरि.नैवेद्यं
मणि स्वर्ण आदि उद्योत कारण, दीप बहुविधि लीजिये ।
तम मोह पलट विध्वंसने,जुग पाद पूजन कीजिये ।अरि.दीपं
कपूर अगर सुगन्ध चंदन, कनक धूपायन भरें ।
भवि करहि पूजा भाव सेती, अष्ट कर्म सब जरैं ।अ. धूपं।
बादाम श्रीफल लौंग खारिक, दाख पुंगी आदि ही ।
भरिथाल भविजन पूज करितैं, मोक्षफल पावै सही ।अ.फलं
जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फलो गही ।
करि अर्घ पूजैं पंचपद को, लहैं शिवसुख वृन्द ही । अरि.अर्घं

जयमाला

दोहा—नमूं प्रथम अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवझाय ।
साधु सकल बिनती करूं, मन वच तन शिरनाय ।१।

पद्धरि छन्द

चव घाति चूर अरिहंत नाम, पायोच्युत दोष सगुणधाम ।
तिनमें षटचाल जु मुख्य थाय, तिनमें दशगुण जनमत उपाय ॥
जय केवल ज्ञान उद्योत ठान, उपजे दशगुणको कहि बखान ।
चौदह गुण देवनि करत होय, तिनकी महिमा चरणे सु कोय
वर अष्ट प्रातिहारज संयुक्त, चामर छात्रादिक नाम युक्त ।
केवल दर्शन वरज्ञान पाय, सुखवीर्य अनन्त चतुष्टय पाय ॥
ये कहिवेके गुण हैं छिपार, गुण अनंत लखै तिनको न पार ।
तातै करिहो करि अर्घ लेय, मोहि तारि अरिहंत देव ॥
वसुविधिहरि वसुभू बसे सिद्ध, बसुगुण आदिक लहि अत्यन्तरिद्ध
पूजूं मन वच तन अर्घ ल्याय, मोकूं तुम थानकमें बसाय ॥
वर द्वादश तप दश धर्म मेव, षट् आवास पंचाचार येव ।
त्रय गुप्ति सुगुन छत्तीसपाय, सब संघ ज्येष्ठ गुरु सूरिथाय ।
बहु जीवन वृषको मग बताय, शिव संपति दिनी सु मुनिराय
पूजूं मन वच तन अर्घ लेय, मोकूं अजरामर पद करेय ॥
वर ग्यारह अंगरु चौद पूर्व, पढ उपाध्याय पद लहिये पूर्व
तिनके पद पूजत अर्घ लाय, सब भ्रम नाशन जिन ज्ञानपाय
गुण मूल अष्टविंशति अनूप, धरि हैं सब साधु सु शिव स्वरूप
व्रत पंचसमिति पणइन्द्र रोध, षट् आवास भूमि सुशयन सोध
तजि स्नान वसन कचलौंच ठानि, लघु भोजन ठाढे करत आन
त्यागे दातुन ये अष्टबीस, धरि साधै शिव तिन नमत शीस

करि अष्ट द्रव्यको अर्घ लेय, सब साधुनकी करिहों जु सेव
मैं मन वच तनतैं शीश नाय, नमि हौंमो शिवमगको बताय
जलथल रत मग विकट मांहि, ये पंच परमगुरु शरण थाहि
डायन प्रेतादि उपद्रव मांहि, उन पंच परम बिन को सहाय
बहु जीव जपत नवकार येव, रिद्धि सिद्धि लहि संकट हरेव।
सो कथन पुरान २ मांहि, हम ताको महिमा का कहांहि।।

घत्ता-ये पंच आराधैं, भव दुख बांधे, शिव संपति सहजै वरई
मैं मन वच गाऊं, शीश नवाऊं, मो अविचल थान धरई

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि जिनेभ्यः जयमाल पूर्णार्घ्यं।

सोरठा-विघन विनाशनहार, मंगलकारी लोकमें।
सो तुमको भी सार, पंच सकल मंगल करैं।।

इत्याशीर्वादः।

श्री शान्तिनाथ जिन पूजा।

मत्तगयन्द छन्द (जमकालंकार)

या भवकाननमें चतुरानन पापपनानन घेरी हमेरी।
आतमजानन मानन ठानन बानन हो दई सठ मेरी।।
तामद भानन आपहि हो, यह छानन आनन आननटेरी।
आन गही शरणागतको अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी।१।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भवर वषट्।

(अष्टक) छन्द त्रिभंगी। अनुप्रासक। (मात्रा ३२ जगनवर्जित)
हिमगिरिगतगंगा धार अभंगा, प्रासुक संगा, भरि भृंगा।
जरमरन मृतंगा नाशि अघंगा, पूजि पदंगा मृदु हिंगा॥
श्री शान्तिजिनेशं नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं हें गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं॥१॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०
वर बावनचंदन, कदलीनंदन, घनआनंदन सहित घसों।
भवतापनिकंदन, ऐरानंदन, बदि अमंदन चरन वसों श्री. २
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०।
हिमकरकरि लज्जत, मलयमुसज्जत, अच्छत जज्जत भरीथारी
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत भवभयभज्जत अतिभारी श्री
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।
मंदार सरोजं कदली जोजं, पुंज भरोजं मलय भरं।
भरि कंथनथारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी धीरधरं श्री४
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०।
पकवान नवीने पावन कीने षटरसभीने सुखदाई।
मनमोदनहारे, क्षुधा विदारे आगैं धारैं गुनगाई। श्री. ५
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०।
तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतम नाशै, ज्ञेयविकाशे सुखराशे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा निजभासे श्री६
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०
चन्दन करपूरं करिवर चूरं, पावक भूरं माहिजुरं।
तसु धूप उडावै, नाचत आवै, अलि गुंजावै मधुरसुरं श्री.७
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।

बादाम खजूरं, दाडिम पूरं, निंबुक भूरं ले आयो ।
तासो पद जजों, शिवफल सजो निजरसरजों उमगायो ।श्री.
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ।
वसुद्रव्य संवारी, तुमढिगधारी आनन्दकारी दृगप्यारी ।
तुम हो भवतारी करूनाधारी यातैं थारो, शरनारी ।श्री. ९
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।
(पंचकल्याणक अर्घ (सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित छन्द)
असित सातय भादव जानिये, गरभमंगल तादिन मानिये ।
शचि कियो जननी पद चर्चनं हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीशांतिनाथायार्घं
जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकरुइन्द्र सु आगत धाम है
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजैं इत मैं जजि हो अबै ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्म मंगलप्राप्ताय श्री शांतिनाथायार्घं
भव शरीर सुभोग असार है, इमि विचार तबै तप धार है ।
भ्रमर चौदसि जेठ सुहावनी, परमहेत जजों गुन पावनी ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां निःक्रमण महोत्सव मण्डिताय श्री शांतिनाथायार्घं ।
शुकलपोष दशैं सुखराश है, परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है ।
भवसमुद्रउधारन हाकी, हम करैं नित मंगल सेवकी ॥
ॐ ह्रीं पोषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री शांतिनाथायार्घं ।
असित चौदसि जेठ हनें अरि, गिरि समेदथकी शिव-तिय-वरो
सकरुइन्द्र जजैं तित आयकै, हम जजैं इत मस्तक नायकैं ।५
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशांतिनाथायार्घं

जयमाला

शांति शांतिगुनमंडिते सदा जाहि ध्यावत सु पंडिते सदा ।
मैं तिन्हें भक्तिमंडिते सदा पूजिहों कलुषहंडिते सदा ।।१।
मोच्छ हेतु तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुनरत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुणदाम ही धरों ध्यावतैं तुरित मुक्ति-तीय वरों ।।

छन्द पद्धरि (१६ मात्रा)

जय शांतिनाथ चिद्रुपराज, भवसागरमें अद्भुत जहाज ।
तुम तजि सरवारथसिद्धथान सरवारथजुत गजपुर महान ।।१
तिन जनम लियो आनन्द धार, हरि तत छिन आयौ राजद्वार
इन्द्रानी जाय प्रसूतिथान, तुमको करमें लै हरष मान ।।२।।
हरि गोद देय सो मोद धार, शिर चमर अमर ढारत अपार
गिरिराज जाय तित शिला पांड, तापै थाप्यौ अभिषेक मांड
तित पंचमउदधि तनौं सुवार, सुकर करकरि ल्याये उदार ।
तब इन्द्र सहस करकरि आनंद, तुम सिर धारा ढारयौ सुनंद ४
अघ घघघघघघ धुनि होत घोर,भमभमभमभ धधधध कलशशोर
दृमदृमदृमदृम बाजित मृदंग, झन नननननननन नूपुरंग ।।५।।
तननननननननन तनन तान धननननन घंटा करत ध्वान ।
ता थेईथेईथेईथेईथेई सुचाल, जुत नाचत गावत तुमहिं भाल
चटचटचट अटपट नटत नाट, झटझटझट हट नट शट विराट
इमि नाचत राचत भगतरंग, सुर लेत जहां आनंद सग ।।७
इत्यादि अतुलमंगल सुठाट, सित बन्यौ जहां सुरगिर विराट
पुनिकरि जिनेश पितुसदन आय,हरि सौंप्यौ तुम तितवृद्धथाय

पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न, भोग्यौ छखंड करि धरम यत्न
पुनि तप धरि केवलरिद्धिपाय, भवि जीवनकों शिवमग बताय
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुणमंडित अतुल अनंतामेष ।
मैं ध्यावतुहों नित शीश नाय, हमरी भवबाधा हरि जिनाय १०
सेवक अपनों निज जान २, करुणा करि भौभय भान-भान ।
यह विघन मूलतरु खंडखंड, चितचिंतित आनंद मंडमंड ११

घत्ता-श्रीशांति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनंता भगवंता ।
भवभ्रमन हनंता, सौख्यअनंता, दातारं तारनवंता ॥ १२

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द रूपक सवैया (मात्रा ३१)

शांतिनाथजिनके पदपंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय ।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकै जाय पलाय ॥
मनवांछित सुख पावे सो नर, बाचै भगतिभाव अतिलाय ।
तातैं 'वृन्दावन' नित बंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ पूजा

गीता छन्द

वर स्वर्ग प्राणतको विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरण जिनके सुर नये ॥
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसे ।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो करम मेरे सब नसैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्

क्षीरसोमके समान अम्बुसार लाइये
हेमपात्र धारिकै सु आपको चढाइये।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करू सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।१।
चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये।
आप चर्न चर्चा मोहतापको हनीजिये ॥ पार्श्व० ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०
फेन चन्दनके समोन अक्षतान् लायकैं।
वर्णके समीप सार पुंजको रचाइकैं ॥ पार्श्व० ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।
केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइकैं।
धार वर्णके समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्व० ॥४।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०
घेवरादि बाबरादि मिष्ट सद्य में सने।
आप चर्ण चर्चते क्षुधादि रोगको हने ॥ पार्श्व०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०
लाय रत्नदीपको सनेहपूरके भरूं।
वातिका कपूर वारि मोह ध्वांतकू हरूं। पार्श्व० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०
धूप गन्ध लेयकैं सु अग्निसंग जारिये।
तास धूपके सुसंग अष्ट कर्म वारिये ॥पार्श्व० ॥७।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०।

खारिकादि चिरभटादि रत्नथाल मैं भरुं ।
हर्षधारकै जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरुं ।।पार्श्व० ८।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।
नीरगंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतै जजीजिये ।पार्श्व० ।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक

शुभप्रानत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी ।१।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।
जगमें त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै रवि कोटिक तेज सु लाजै ।।२।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्व० जिनेंद्रायार्घं
कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावनभाई ।
अपने कर लोंच सु कीना हम पूजैं चरन जजीना ।३।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यांतपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्व० जिनेंद्रायार्घं
कलि चैत्र चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ।।४।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णैचतुर्थी दिनेकेवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथायार्घं०
सित तातै सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ।।५।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथायार्घं

जयमाला

पारसनाथ जिनेन्द्र तने वच, पौनभखी जरतें सुन पाये।
करयो सरधान लह्यो पद आन भयो प्रद्मावती शेष कहाये ॥
नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यनको शिवशरम दिखाये।
है विश्वसेनके नन्द भले, गुणगावत हैं तुमरे हरशाये ॥१॥
दोहा—केकी—कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहारपग, वन्दों पारसनाथ ॥२॥

पद्धरि छन्द

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुँगोपुर शोभ अपार।
सुकोटतनी रचना छवि देत, कंगूरनपैं लहकैं बहुकेत ।३।
बनारसकी रचना जु अपार, करि बहु भांति धनेश तैयार।
तहां विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार ।४
तज्यों तुम प्राणत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन।
तबै सुरइन्द्र-नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय ॥
पिता घर सौंपि गये निजधाम, कुवेर करैं वसु जाम सुकाम ।
बढ़ै निज दौज मयंक समान, रमै बहु बालक निर्जर आन ।६
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महा सुखकार।
पिता जब आनकरी अरदास करो तुम ब्याह वरो मम आश
करी तब नाहिं, रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जु मंद।
चढें गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग ।८॥
लख्यो इक रंक करैं तप घोर चहुँदिशि अगनि बलै अतिजोर
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात करै बहुजीवनकी मत घात ।९॥

भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव
लख्यो यह कारण भावन भाय,नये दिव ब्रह्मऋषिसुर आय ॥
तब ही सुर चार प्रकार नियोग,धरी शिविका निजकंध मनोग
कियो वन मांहि निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद ॥
गहे तहं अष्टमके उपवास गये धनदत्त तने जु अवास ।
दयो पयदान महा-सुखकार, भई पनवृष्टि तहां तिहिंवार ।१२
गये तब काननमांहि दयाल, धर्यो तुम योग सबहिं अघटाल
तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचरको सुर आन।१३
करैं नभगौन लखे तुम धीर जु पूरव बैर विचार गहीर ।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहुतिक्षण पवन झकोर १४
रह्यो दशहूँ दिशिमें तम छाय, लगी बहुअग्नि लखी नहिं जाय
सुरुंडनके बिन मुंड खिलाय, पड़ैं जल मूसलधार अथाय १५
तबै पद्मावती कंथ धनिंद, चले जुग आय जहां जिनचन्द ।
भग्यो तब रंकसु देखत हाल, लह्यो तब केवल ज्ञान विशाल
दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहं कूट प्रसिद्ध,वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ।१७
जजूं तुम चरन दुहूँ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर
कहैं 'बखतावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भवपार लगाय १८

॥ घत्ता ॥

जय पारस देवं, सुरकृत सेवं वंदत चर्न सुनागपति ।
करुणाके धारी, परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ॥१९

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा ।

अडिल्ल–जो पूजैं मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुख सब जांय भीत व्यापै नहिं कीतही।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसौ शिव लहै 'रतन' इमि कहै पुकारे।२०

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं)

नवग्रह अरिष्ट निवारक पूजा।

श्लोक–प्रणम्याद्यन्ततीर्थेशं, धर्मतीर्थप्रवर्तकं।
भव्यविघ्नोपशान्त्यर्थं ग्रहार्च्या वर्ण्यते मया॥

मार्तण्डेन्दुकुजःसौम्य,–सूरसूर्यकृन्तान्तकाः।
राहुश्च केतुसंयुक्तो, ग्रहशान्तिकरा नव॥

दोहा–आदि अन्त जिनवर नमो, धर्मप्रकाशन हार।
भव्य विघ्न उपशांतको, ग्रहपूजा चित धार॥
काल दोष प्रभावसों, विकलप छुटे नाहिं।
जिन पूजामें ग्रहन की पूजा मिथ्या नाहिं॥
इसही जम्बूद्वीपमें, रवि शशि मिथुन प्रमान।
ग्रह नक्षत्र तारा सहित, ज्योतिश्यचक्र प्रमान॥
तिनही के अनुसार सौं, कर्म चक्र की चाल।
सुखदुख जानैं जीवको, जिन वच नेत्र विशाल॥
ज्ञान प्रश्न व्याकरण में, प्रश्न अंग है आठ।
भद्रबाहु मुख जनित जो, सुनत कियो मुख पाठ॥

अवधिधार मुनिराजजी कहे, पूर्व कृत कर्म
उनके बच अनुसार सौं, हरे हृदय को भर्म ॥

समुच्चय पूजा ।

दोहा—अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु ।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने, श्री जिन पूज रचाहूँ ।

ॐ ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापन अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक—गीतीका छन्द ।

क्षीर सिंधु समान उज्वल, नीर निर्मल लीजिये ।
चौबीस श्रीजिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिये ।
रवि सोम भूमिज सौम्य गुरु कवि, शनि नमो पूतकेतवै ।
पूजिये चौबीस जिन, ग्रहारिष्ट नाशन हेतवै ।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेंद्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखंड कुमकुम हिम सुमिश्रित, घिसों मनकरि चावसौं ।
चौबीस श्रीजिनराज अघहर, चरण चरचों भावसौं ।रवि. चं.
अक्षत अखंडित सालि तंदुल, पुंज मुक्ताफलसमं ।
चौबीस श्रीजिनराज पूजत,नाश ह्वै नवग्रह भ्रम ।रवि. ।अ.
कुन्द कमल गुलाब केतकी, मालती जाही जूही ।
काम बाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही ।रवि. पुष्प
फेनी सुहारी पुवा पापर, लेउं मोदक घेवरं ।
शतछिद्र आदिक विविध विजन क्षुधाहर बहु सुखकरं ।रवि.नै.

मणि दीप जगमग ज्योत तमहर, प्रभु आगे लाइये ।
अज्ञान नाशक जिन प्रकाशक,मोह तिमिर नसाइये ।रवि.दीपं
कृष्णा अगर घनसार मिश्रित लौंग चन्दन लेइये ।
ग्रहरिष्ट नाशन हेतु भविजन, धूप जिनपद खेइये ।रवि. धूपं
बादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच लिंबू सद फलं ।
चौबीस श्रीजिनराज पूजत,मनोवांछित शुभ फलं ।रवि. फलं
जल गंध सुमन अखंड तंदुल, चरू सुदीप सुधूपकं ।
फल द्रव्य दूध दही सुमिश्रित, अर्घ देय अनुपकं ।रवि. अर्घं

जयमाला

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, ग्रहरिष्ट मिट जाय ।
पंच ज्योतिषी देव सब, मिल सेवे प्रभु पांय ।

पद्धरि छन्द

जयजय जिन आदि महंत देव, जय अजित जिनेश्वर करहिंसेव
जयजय संभव भव भय निवार, जयजय अभिनंदन जगत तार
जय सुमति २ दायक विशेष, जय पद्मप्रभ लख पदम लेष ।
जयजय सुपार्स हर कर्म पास, जयजय चंद्रप्रभ सुख निवास
जय पुष्पदन्त कर कर्म अंत, जय शीतल जिन शीतल करंत
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव ।
जय विमल २ कर जगतजीव, जय २ अनन्तसुख अति सदीव
जय धर्म धुरंधर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्तिसाथ ।
जय कुन्थुनाथ शिवसुखनिधान जय अरह जिनेश्वर मुक्तिखान
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकाश

जय जय नमिदेव दयाल संत, जय नेमनाथ प्रभु गुण अनन्त
जय पारस प्रभु सङ्कट निवार, जय वर्द्धमान आनन्दकार ॥
नवग्रह अरिष्ट जब होय आय, तब पूजैं श्रीजिनदेव पाय ।
मनबच तन सब सुख सिंधु होय, ग्रहशांति रीत यह कही जोय

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेंदाय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—चौबीसो जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुखसार ॥

इत्याशीर्वादः ।

रक्षा बन्धन पूजा ।

(श्री विष्णुकुमार पूजा)

अडिल्ल छन्द-विष्णुकुमार महामुनि को ऋद्ध भई ।
नाम विक्रीया तास सकल आनन्द ठई ॥
सो मुनि आये हथनापुर के बीचमें ।
मुनि बचाये रक्षा कर वन बीच में ॥१॥
तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो ।
जिमि चिन्तामणि रत्न एक पायो मनो ॥
सब पुर जै जै कार शब्द उचरत भये ।
मुनि को देय आहार आप करते भये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनि अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टक चाल-सोलहकारण पूजा की।

गंगाजल सम उज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय।
सप्त सैकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं

मलयागिरी चन्दन शुभसार, पूजों श्रीगुरुवर निर्धार।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त.

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः भवतापविनाशनायचंदनं नि०

श्वेत अखंडित अक्षत लाय पूजों श्री मुनिवरके पाय।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त.॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

कमल केतकी पुष्प चढाय, मेटो कामबाण दुखदाय।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरन चढाय।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

घृत कपूरका दीपक जोय, मोहतिमिर सब जावै खोय।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त.॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं

अगर कपूर सुधूप बनाय, जारे अष्ट कर्म सुखदाय
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय। सप्त.॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

लौंग लायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुख दातार ।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय ॥सप्त.॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः मोक्षफल प्राप्तये फलं नि०

जलफल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों दोय ।
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय । सप्त.॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनिभ्योनमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०

अथ जयमाला

दोहा–श्रावण सुदी सु पूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ॥

चाल–छन्दभुजङ्गप्रयात

श्री विष्णु देवा करू चर्ण सेवा ।
हरो जनकी बाधा सुनो टेर देवा ॥
गजपुर पधारे महा सुक्खकारी ।
धरो रूप वामनसु मनमें विचारी ॥२॥
गये पास बलिके हुआ वो प्रसन्ना ।
जो मांगो सौ पावो दिया ये वचन्ना ॥
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै ॥
दई ताने ततक्षिन सु नहिं ढील थापै ॥३॥
कर विक्रिया मुनि सु काया बढाई ।
जगह सारी ले ली सु दृढ दो के मांह ।

धरी तिसरी डग बली पीठ मांहीं ।
सु मांगी क्षमा तब बलीने बनाई ॥४॥
जल की सु वृष्टि करी सुखकारी ।
सरव अग्नि क्षण में भई भस्म सारी ॥
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से ।
भई जै जैकारा सरव नग्र ही ॥५॥

चौपाई

फिर राजाके हुक्म प्रमान, रक्षा बन्धन बन्धी सुजान ।
मुनिवर घर घर कियो विहार, श्रावकजन तिन दियो आहार
जाघर मुनि नहि आये कोय, निज दरवाजे चित्र सुलोय ।
स्थापन कर तिन दियो आहार, फिर सब भोजन कियो संहार
तबसे नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्यौहार ।
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासौं धर्म बढ़ै सु अतीव ॥
धर्म पदारथ जगमें सार, धर्म बिना झूठो संसार ।
सावन सुदी पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजै लोय ॥
सब भाइन को दो समझाय, रक्षाबंधन कथा सुनाय ।
मुनिका निज घर करो अकार, मुनि समान तिन देउ अहार ॥
सबके रक्षा बन्धन बांध जैन मुनिन को रक्षा जान ।
इस विधिसे मानो त्यौहार, नाम सलूना है संसार ॥
धत्ता-मुनि दिनदयाला सबदुख टाला, आनंदमाला सुखकारी
'रघुसुत' नित वंदे आनंद कंदे सुख करंदे हितकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमुनिभ्यो नमः महार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

दोहा–विष्णुकुमार मुनि के चरण जो पूजे धर प्रीत ।
'रघुसुत' पावै स्वर्गपद लहैं पुण्य नवनीत ॥

इत्याशीर्वादः ।

सलूना पर्व पूजा ।

(श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनि पूजा)

(चाल-जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु शिरोमणि सात शतक मुनि ज्ञानी ।
आ हस्तिनापुर कानन में हुए अचल दृढ़ ध्यानी ॥
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये ।
आत्मा साधना के साधक वे, तनिक नहिं अकुलाये ।
योगी राज श्री विष्ण त्याग तप, वत्सलता-वश आये ।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये ॥
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन, शुभ दिन था सुखदाता ।
पर्व सलूना हुआ पुण्य प्रद यह गौरवमय गाथा ॥
शांति दया समता का जिनसे नव आदर्श मिला है ।
जिनका नाम लिये से होती जागृति पुण्य कला ॥
करूं वंदना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊं ।
आह्वाननं संस्थापन सन्निधि-करण करूं हर्षाऊं ॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टक-गीता छन्द

मैं उर सरोवर से विमल जल भावका लेकर अहो।
नत पाद-पद्मोंमें चढाऊं मृत्यु जनम जरा न होय ॥
श्री गुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिभ्यो जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तोष मलयागिरिय चन्दन, निराकुलता सरस ले।
नत पादपद्मोंमें चढाऊं, विश्वताप नहीं जले। श्रीगुरु.।चंदनं

तंदुल अखंडित पूत आशाके नवीन सुहावने।
नत पादपद्मोंमें चढाऊं, दीनता क्षयता हने।श्रीगुरु.।अक्षतं।

ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे।
नत पादपद्मोंमें चढाऊं कामकी बाधा हरे। श्रीगुरु.।पुष्पं।

शुभ भक्ति घृतमें विनयके पकवान पावन मैं बना।
नत पादपद्मोंमें चढाऊं मेटू क्षुधाकी यातना।श्रीगुरु.।नैवेद्यं ॥

उत्तम कपूर विवेकका ले आत्म दीपकमें जला।
कर आरती गुरकी हटाऊं मोह तमकी यह बला।श्रीगुरु.दीपं

ले त्याग तपकी यह सुगन्धित धूप मैं खेऊं अहो।
गुरुचरण-करुणासे करमका कष्ट यह मुझको न हो।श्रीगु.धूपं

शुचि साधनाके मधुरतम प्रिय रस फल लेकर यहां।
नत पादपद्मोंमें चढ़ाऊं मुक्ति मैं पाऊं यहां ॥श्रीगुरु.।फलं ॥

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेहसे पुलकित हृदय ।
नत पादपद्मोंमें चढाऊ भवपारमें होऊं अभय ॥श्रीगुरु.अर्घं॥

जयमाला

सोरठा—पूज्य अकम्पन आदि, सात सतक साधक सुधी ।
यह उनकी जयमाल वे मुझको निज भक्ति दें ॥

पद्धरि छन्द

वे जीव दया पालें महान, वे पूर्ण अहिंसक ज्ञानवान ।
उनके न रोष उनके न राग, वे करें साधना मोह त्याग ॥
अप्रिय असत्य बोले न बैन, मन वचन कायमें भेद हैं न ।
वे महा सत्य धारक ललाम, है उनके चरणोंमें प्रणाम ॥
वे ले न कभी तृणजल अदत्त उनके न धनादिकमें ममत्त ।
वे व्रत अचोर्य दृढ धरैं सार, है उनको सादर नमस्कार ॥
वे करें विषयकी नहीं चाह उनके न हृदयमें काम-दाह ।
वे शील सदा पालें महान,कर मग्न रहे जिन आत्मध्यान ॥
सब छोड वसन भूषण निवास, माया ममता अरु स्नेह आस
वे धरें दिगम्बर वेष शांत होते न कभी विचलित न भ्रांत ॥
नित रहे साधनामें सुलीन, वे सहें परीषह नित नवीन ।
वे करें तत्त्वपर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ॥
पंचेन्द्रिय दमन करें महान वे सतत बढ़ावें आत्मज्ञान ।
संसार देह सब त्याग, वे शिव-पथ साधे सतत जाग ।
'कुमरेश' साधु वे हैं महान, उनके पावें जग नित्य त्राण ।
मैं करूं वंदना बार बार वे करे भावार्णव मुझे पार ॥

घत्ता

मुनिवर गुणधारक पर उपकारक भवदुत हारक सुखकारी।
वे करम नशायें सुगुण दिलायें मुक्ति मिलायें भवहारी ॥

ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिभ्यो महार्घं निर्व० ।

सोरठा—श्रद्धा भक्ति समेत जो जन यह पूजा करें।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत्दुख ॥

इत्याशीर्वादः ।

चौसठ—ऋद्धि (समुच्चय पूजा।

गीता छन्द

संसार सकल असार जामें सरता कछु है नहीं,
धनधान धरणी और गृहणी त्यागी लीनी वनमही।
ऐसे दिगम्बर हो गये, अरु होयंगे वरतत सदा,
इत थापि पूजों मन वचन करि देहु मंगल विधि तदा ॥१॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसंबंधि पंचप्रकारसर्वऋषिश्वराः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

चाल-रेखता

लाय शुभ गंगजल भरिकै कनक भृंगार धरि करिकै।
जन्म जरामृत्यु के हरनन, यजो मुनिराजके चरणन ॥१॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसंबंधिपुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकपंचप्रकारसर्वमुनिश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

घसो कश्मिर संग चन्दन मिलावो केलिको नन्दन ।
करत भवतापको हरनन, यजों मुनिराजके चरणन ।२ चंदनं ।
अक्षत शुभचन्द्रके करसे, भरो कणथालमें सरसे ।
अक्षयपद प्राप्तिके करणन यजों,मुनिराजके चरणन ।३ अक्षतं।
पहुप ल्यो घ्राणके रंजन, उडत ता मांहि मकरंदन ।
मनोभव बाणके हरनन, यजों मुनिराजके चरणन ।४।पुष्पं ।
लेय पकवान बहुविधिके, भरो शुभथाल सुवरणके ।
असातावेदनी क्षरणन, यजों मुनिराजके चरणन ।५। नैवेद्यं ।
जगमगे दीप लेकरिके, रकाबी स्वर्णमें धरिके ।
मोहविध्वंशके करणन यजों मुनिराज चरणन ।६। दीपं ।
अगर मलयागिरि चन्दन, खेयकरि धूपके गन्धन ।
होय कर्माष्टको जरनन यजों मुनिराजके चरणन ७।धूपं ।
सिरीफल आदि फल ल्याया, स्वर्णको थाल भरवायो ।
होय शुभ मुक्तिको मिलन, यजों मुनिराजके चरणन ।८।फलं
जलादिक द्रव्य मिलवाये, विविध वादित्र बजवाये ।
अधिक उत्साह करि तनमें, चढावो अर्घ चरणनमें ।९।अर्घं।

सोरठा—तारण तरण जिहाज, भव समुद्रके मांहि जो ।
ऐसी श्री ऋषिराज, सुमरि सुमरि विनती करो ॥१॥

पद्धरि छन्द ।

जयजय जय श्री मुनियुगल पाय, मैं प्रणमो मनवच शीशनाय
ये सब असार संसार जानि, सब त्याग कियो आतमकल्याण

क्षेत्र वास्तु अरू रत्न स्वर्ण, धन धान्य द्विपद अरु चतुष्कवर्ण
अरु कोप्यो भांड दश बाह्य भेद, परिग्रह त्यागे नहीं रंचखेद
मिथ्यात तज्या संसार मूल,मुनि हास्य अरंति रति शोकशूल
भय सप्त जुगुप्सा स्त्रीय वेद पुनि पुरुष वेद अरु क्लीव वेद ४
अरु क्रोध मान माया रु लोभ, ये अंतरङ्गमें करत क्षोभ ।
इमि ग्रंथ सबै चौबीस येह, तजि भए दिगम्बर नग्न जेह ५
गुणमूल धारि तजि रागदोष, तप द्वादश धरि तन करत शोष
तृण कंचन महल मसान मित्त अरु शत्रुनिमें समभाव चित्त ६
अरु मणि पाषाण समान जास, पर-परणतिमें नहिं रंच वास
यह जीव देह लखि भिन्न२, जे निज स्वरूपमें भाविकिन्न ७
ग्रीषमऋतु पर्वत शिखर वास. वर्षामें तरुतल है निवास ।
जे शीतकालमें करत ध्यान, तटनीतट चोहट शुद्ध थान ।८
हो करुणासागर गुण अगार मुझ देहु अखय सुखको भंडार ।
मैं शरण गही मुझ तार२, मो निज स्वरूप द्यो बार बार ।९

॥ धत्ता ॥

यह मुनि गुणमाला, परम रसाला जो भविजन कंठे धरही ।
सबविघ्नविनासहि,मंगल भासहि,मुक्तिरमा वह नर वरही

ॐ ह्रीं भूतभविष्यत्वर्तमानकाल संबंधिपचप्रकारऋषिभ्यरायार्घं ।

दोहा-सर्व मुनिनकी पूजा यह, करै भव्य चित्त लाय ।
वृद्धि सर्व घरमें बसै, विघ्न सबै नशि जाय ॥११॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री वर्धमान जिन पूजा।

मत्तगयन्द।

श्रीमत वीर हरै भवपीर भरे सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अङ्क अरीकरदंक नये हरि पंकति मौलि सु आइ॥
मैं तुमको इत थापतु हौं, प्रभु भक्ति समेत हिय हरखाई।
हे करुणाधनधारकर देव! इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्।

अष्टक छन्द।

क्षिरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरो।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करौं॥
श्री वीर महा अतीवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।१।
मलयागिर चन्दन सार, केशर संग घसौं।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलशौं। श्री वीर।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०।२।
तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावो शिव नगरी। श्री वीर०।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।३।

सुर तरुके सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ-भज्जन हेत, पूजौं पद थारे । श्री वीर० ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०
रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी । श्री वीर० ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०
तुम खंडित मंडित–नेह, दीपक जोवत हो ।
तुम पदतर हैं सुख गेह, भ्रमतम खोवत हो । श्री वीर० ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०
हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा । श्री वीर० ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।
ऋतुफल कलवर्जित लाय, कंचन थार भरों ।
शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेट धरों ।श्री वीर०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।
जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों । श्री वीर० ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक

मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी मोहि राखो
गरभ षाढ सित छट्ठ लियो तित, त्रिशलाउर अघहरना ।

सुर सुरपति तित सेवकरो नित, मैं पूजौं भवतरना ।मोहि०
ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यांगर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरायार्घं ।

जनम चैत्र सित तेरसके दिन, कुण्डलपुर कनवरना ।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भय हरना ।मोहि०।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरायार्घं

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृपकुमार घर पारण कीनो, मैं पूजों तुम चरना ।मोहि०
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

शुक्ल दशै वैशाख दिवस अरि घाति चतुक क्षय करना ।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजो चरन सुखभरना ।मोहि.
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय पावापुरतैं वरना ।
गणफणिवृन्द जजै तित बहुविधि मैं पूजौं भय हरना ।मोहि.
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेंद्राय अर्घं नि० स्वाहा

जयमाला (छन्द हरिगीता)

गनधर असनिधर चक्रधर हलधर गदाधर वरवदा ।
अरु चापधर विद्यासुधर, त्रिशूलधर सेवहि सदा ।।
दुखहरन आनन्द भरन, तारन तरन चरन रसाल है ।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भालकी जयमाल है ।१।

छन्द घत्ता

जय त्रिशलानंदन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चंदवरं।
भवतापनिकंदन तनकनमंदन रहित सपन्दन नयनधरं ॥२

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु कला सदनं, भवि कोक विकासन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगावर चूर करं ॥१
गर्भादिक मंगल मंडित हो, दुख दारिदको नित खंडित हो
जगमांहि तुम्हीं सत पंडित हो, तुमही भव भावविहंडित हो
हरिवंश सरोजनको रवि हो, बलवन्तमहन्त तुम्ही कवि हो
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलौं सोई मारग राजतियो
पुनि आप तने गुनमांहि सही सुरमग्न रहे जितने सबही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननि सों मनभावत हैं
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुव भक्ति विषै पग एम धरी ॥
झननं झननं झननं झननं सुरलेत तहां तननं तननं ॥५॥
घननं घननं घन घण्ट बजे, दृमदृं दृमदृं मिरदंग सजें।
गगनांगन-गर्भगता सुगता ततता ततता अतता वितता ॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभमें इकरुप अनेक जु धारि भ्रमैं। ७॥
कइ नारि सुवीन बजावत हैं तुमरो जस उज्जवल गावत हैं।
करताल विषै करताल धरे, सुरताल विशाल जु नाद करें ८
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुमही जगजीवनके पितु हो, तुमही बिन कारनतैं हितु हो।

तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुमही निज आनन्द भासनहो
तुमही वित चिंतत दायक हो,जगमांहि तुमही सब लायकहो
तुमरे पन मंगल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सबही
हमको तुमरी शरणागत हैं, तुमरे गुनमें मन पागल है ॥११
प्रभु मो हिय आप सदा वसिये, जबलों वसुकर्म नहीं नसिये
तबलों तुम ध्यान हिये बरतो,तबलों श्रुतिचिंतन चित्त रतो१२
तबलों व्रत चारित चाहतु हो,तबलों शुभ भाव सुगावतु हो।
तबलों सत संगति नित रहो, तबलों मम संजमचित गहों।
जबलों नहिं नाशकरो अरिको, शिवनारि वरों समताधरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी,हम जाचतु हैं इतनी सुनजी

घत्ता-श्रीवीर जिनेशा, नमतसुरेशा, नागनरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावैं विघन नशावै, वांछित पावैं शर्मवरा १५

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—श्रीसन्मतिके जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीत
"वृन्दावन" सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ॥

इत्याशीर्वादः।

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी, तुममें जितने गुण हैं तितनी
कहि कौन सकै मुखसों सबही, तिहिं पूजतहों गही अर्घ यही

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरांतेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घं नि०

कवित्त

ऋषभ देवको आदि अन्त, श्रीवर्द्धमान जिनवर सुखकार।
तिनके चरण कमलको पूजै, जो प्राणी गुणमाल उचार ॥

ताके पुत्रमित्र धन जोवन, सुख समाज गुन मिलै अपार ।
सुरपद भोग भोगी चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार ॥२

इत्याशीर्वादः ।

महा अर्घ ।

प्रभुजी अष्ट द्रव्यजु ल्यायो भावसों ।
प्रभु थांका हर्ष हर्षगुण गाऊं महाराज ।
यों मन हरख्यो प्रभु थांकी पूजाजी रे कारणे ।
प्रभुजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करैं ॥
ताका अशुभ कर्म कट जाय महाराज । यो मन० ।
प्रभुजी इन्द्र धरणेन्द्रजी सब मिली गाय ।
प्रभुका गुणां को पार न पायो महाराज ॥ यो मन० ॥
प्रभुजी थे छो जी अनन्ताजी गुणवान ।
थाने तो सुमरयां, संकट परिहरे महाराज ॥ यो मन०॥
प्रभु थे छो जी साहिब तीनों लोक का ।
जिनराज मैं छूं जी निपट अज्ञानी महाराज । यो मन०॥
प्रभु थांका तो रुपको निरखन कारणे ।
सुरपति रचया छै नयन हजार महाराज ॥ यो मन० ॥
प्रभुजी नरक निगोदमें भव भव मैं रुल्यो ।
जिनराज सहिया छै दुःख अपार महाराज । यो मन०॥
प्रभुजी अब तो शरणोजी थारों मैं लियो ।
किस विधि कर पार लगावो महाराज ॥ यो मन० ॥

प्रभुजी म्यारो तो मनडो थामें घुल रह्यो ।
ज्यो चकरी बिच रेशम डोरी महाराज ।।यो मन० ।।
प्रभुजी तीन लोक में हैं जिन बिम्ब ।
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां महाराज । यो मन.।।
प्रभुजी जल चन्दन अक्षत पुष्प नेवेद्य ।
दीप धूप फल अर्घ चढाऊं महाराज ।
जिन चैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज ।।यो०
प्रभुजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो बनाय ।
पूजा रचाऊं श्री भगवानकी महाराज । यो मन० ।।

अरिहंता छियाला सिद्धड्ढा सूर छत्तीसा ।
उवज्झाया पणवीसा साहूणं होती अडवीसा ।

(निम्नलिखित अर्घ बोलते समय जलधारा छोड़ते रहना चाहिये)

ॐ ह्रीं श्रीं अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः दर्शनविशुद्धियादि षोडशकारणेभ्यो नमः उत्तम क्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्योः सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्रेभ्या नमः भूत-भविष्यत-वर्तमानकालचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः अद्य संवत.....मध्ये.....मासे .....पक्षे..... तिथौ.....समये पूजायां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्य पद-प्राप्तये जलाअर्घं महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा । भाव पूजा वन्दनास्तवसमेतं कायोत्सर्ग करोम्यहम ।

(यहां कायोत्सर्गपूर्वक ९ बार णमोकार मंत्रका जाप्य करना चाहिये ।

कई महानुभाव उक्त महाअर्घके स्थान पर पंचपरमेष्ठि जयमाला बोलते हैं ।

शांति पाठ भाषा

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी ।
लखन एकसोआठ बिराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे ।१।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।
दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ।३।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिरनाई ।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको ।४।

वसंततिलका

पूजैं जिन्हैं मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप ।५।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकोंको यतीनकों औ यतिनायकों को
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेशको ले कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ।

स्रग्धरा छन्द ।

होवे सारी प्रजाको सुखबल युत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समै पै तिलभर न रहे व्याधियोंका अन्देशा ।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ७

दोहा ।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगतमें वृषभादिक जिनराज ॥

अथेष्टक प्रार्थना (मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका ॥
बोलु प्यारे वचन हीतके, आपका रूप ध्याऊं ।
तोलौं सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलों न पाऊं ॥

आर्य्या ।

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनित चरणों में ।
तबलौं लीन रहों प्रभु जबलौ पाया न मुक्ति पद मैंने । १०।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करूणा करि पुनि छुडाहु भव दुखसे
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी ॥
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ।१२

(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

(यहांपर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

भजन

नाथ ! तेरी पूजाको फल पायो,मेरे यो निश्चय अब आयो ।
मेढक कमल पाखडी मुख ले वीर जिनेश्वर धायो ।
श्रेणिक गजके पग तल मुवो, तुरत स्वर्गपद पायो । नाथ.॥
मैंनासुन्दरी शुभ मन सेती, सिद्धचक्र गुण गायो ।
अपने पतिको कोढ गमायो, गंधोदक फल पायो ॥ नाथ.॥
अष्टा पदसे भरत नरेश्वर आदिनाथ मन लायो ।
अष्टद्रव्यसे पूज्य प्रभुजी, अवधि ज्ञान दरशायो ॥ नाथ.॥
अंजनसे सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो ।
महिमा मोटी नाथ तुम्हारी मुक्तिपुरी सुख पायो । नाथ.॥
थकि थकि हारे सुर नर खगपति, आगम सीख जतायो ।
'देवेन्द्रकीर्ति' गुरुज्ञान 'मनोहर' पूजा ज्ञान बतायो ॥नाथ.॥

॥ स्तुति ॥

तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनो ।
श्री नाभिनन्दन जगत वन्दन, आदिनाथ निरंजनो ॥१॥

तुम आदिनाथ अनादि सेऊ, सेय पदपूजा करूं ।
कैलास गिरिपर ऋषभ जिनवर, पदकमल हिरदै धरुं ॥२॥

तुम अजितनाथ अजीत जीते अष्टकर्म महाबली ।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ॥३॥

तुम चन्द्रवदन, सुचन्द्रलच्छन, चन्द्रपुरी परमेश्वरो ।
महासेननन्दन जगतवन्दन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो ॥४॥

तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्ध मनवचकाय जू ।
दुर्भिक्ष चोरी पाप नाशन विघन जाय पलाय जू ॥५॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्य कमल विकासनो ।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ।६॥
जिन तजि राजुल राजकन्या, कामसेन्या वस करी ।
चारित्र रथ चढि होय दुलह, जाय शिवरमणी वरी ।७॥
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन कमठ शठ निर्मद कियो ।
अश्वसेन नन्दन जगतवन्दन, सकलसंघ मङ्गल कियो ।८॥
जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मान विदारकैं ।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमौं शिरधारकैं ।९ ।
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दिन जानि दया करो ।
सिद्धार्थनन्दन जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो ।१०॥
छत्र तीन सोहे सुरनर मोहे, बीनती अब धारिये ।
करजोडि सेवक बीनवे प्रभु, आवागमन निवारिये ।११॥
अब होउ भव भव स्वामि मेरे मैं सदा सेवक रहौं ।
करजोडि यो वरदान मांगूं मोक्षफल जावत लहौं ॥१२॥
जो एक मांही एक राजै एक मांही अनेकनों ।
इक अनेक की नहीं संख्या, नमूं सिद्ध निरंजनो ।१३॥

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करो मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ।१४

कृपा तिहारी ऐसी होय, जाम्न मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करुं, तुम सेवा भवसागर तरुं ।१५।

नाम लेत सब दुख मिट जाय तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवनके देव मैं तो करूं चरण तव सेव ।।१६।।

जिन पूजा तें सब सुख होय, जिन पूजा सम और न कोय ।
जिन पूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रमतें पावैं निर्वाण ।।१७।।

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊं शिश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ।।१८

दोहा-सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान ।
मो गरीब की बीनती, सुन लिज्यो भगवान ।।१९।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान ।
सुरगनके सुख भोग कर, पावै मोक्ष निदान ।।२०।।

जैसी महिमा तुम विषैं और धरैं नहिं कोय ।
जो सुरज में ज्योति है, तारण में नहिं सोय ।।२१।।

नाथ तिहारे नामतें अघ छिनमांहि पलाय ।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय ।।२२।।

बहुत प्रशंसा क्या करूं मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानूं नहीं शरण राशि भगवान ।।२३।।

इस अपार संसार में शरण नाहिं प्रभु कोय ।
यातें तव पद भक्तको भक्ति सहाई होय ।।२४।।इति।।

विसर्जन

विन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई ।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय ॥१॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहीं जानौं आह्वान ।
और विसर्जन हूँ नहीं क्षमा करहु भगवान ॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहूँ चरणकी सेव ॥३॥
आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण ।
ते सब मेरे मन बसी, चौबीसों भगवान[1] ॥४॥

इत्याशीर्वादः ।

आशिका लेना—श्री जिनवरकी आशिका, लिजै शीश चढाय
भव-भवके पाकत कटे दुख दूर हो जाय ॥१॥

१-विसर्जनमें कई लोग दोहा निम्न प्रकार और बोलते हैं।
आये जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमान ।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने२ स्थान ॥४॥ इति ॥

पद्मावती पूजा ।

(छप्पय)

जग जीवनको शरण, हरण भ्रम तिमिर दिवाकर ।
गुण अनन्त भगवन्त कन्थ, शिवरमणि सुखाकर ॥
किशनवदन लजिमदन, कोटिशशिसदन विराजै ।
उरगलछन पगधरण, कमठ मदखण्डन साजै ॥

अनन्त चतुष्टय लक्षिकर, भूषित पारस देव।
त्रिविध नमौं शिरनाय के करूं पद्मावती सेव ॥१॥

दोहा— आह्वानन बहुविधि करौं इस थल तिष्ठो आय।
सत्य मात पद्मावती, दर्शन दीजो धाय॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेवी अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गङ्गा हृदयनीरं सुरभिसमीरं आकृतक्षीरं ले आयो।
रतननकी झारी भरिकंरधारी आनन्दकारी चितचायो॥
पद्मावतिमाता जगविख्याता, दे मोहि माता मोदभरी।
मैं तुम गुनगाऊँ हर्ष बढाऊँ, बलि बलि जाऊँ धन्यधरी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीघिसायो केशर लायो, गन्ध बनायो स्वच्छ मई।
आताप विनाशे चित हुल्लासे, सुरभि प्रकाशे शीतमई॥
पद्मा०। चंदनं॥

मुक्ताउनहारं अक्षतसारं खण्ड निवारं गन्धभरे।
शशिज्योतिसमानं मिष्टमहानं, शक्तिप्रमानं पुंजधरे॥
पद्मा०॥ अक्षतं॥

चम्पारु चमेली केतकि सेलि, गन्ध जु फैली चहुँ ओरी।
चितभ्रमर लुभायो मन हरषायो,तुम ढिग आयो सुन मोरी॥
पद्मा०। पुष्पं॥

घेवर घृतसाजे खुरमाखाजे, लाडू ताजे थार भरे ।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई कीरत गाई अग्रधरे ।
पद्मा० । नैवेद्यं ॥

दीपक शशि जोतं तमक्षय होतं ज्ञान उद्योतं छाय रहो ।
ममकुमतविनाशी सुमतप्रकाशी, समतामाषी सरन गह्यो ॥
पद्मा० । दीपं ॥

कृष्नागुरु धूपं सुरभिअनूपं मनवचरूपं खेवतु हौं ।
दशदिशा अलिछाये वाद्य बजाये, तुम चरन खेवतु हौं ॥
पद्मा० । धूपं ॥

बादाम सुपारी श्रीफलभारी, आनन्दकारी मरिथारी ।
तुम चरन चढ़ाऊँ चित उमगाऊँ वाँछित पाऊँ बलिहारी ॥
पद्मा० फलं॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु चित, दीप धूपफल लायधरे ।
शुभ अर्घ बनायो पूजन धायो, तूर बजाया नृत्य करे ॥
पद्मा० ।अर्घं॥

अथ जयमाला

श्री पद्मावती मायगुण, अनेक तन शोभते ।
अब वर्णन जयमाला, सुनौं सुजन मन लायके ॥१॥

पद्धरि छन्द

जय तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ, प्रणमूं तिरकाल नवाय माथ ।
जिनमुखसे बानी खिरी सार, सब जीवनको आनन्दकार ॥
छद्मस्थ अवस्थाको जुवर्ण सुनियो भवि चित लगाय कर्ण ।
इकदिन गज चढ श्री पार्श्वनाथ,अरु सखा अनेकों लिये साथ

गंगा तट आये मोद ठान तहां तापस कुपत करै अयान ।
इक काष्टथूलमें नाग दोय, तापसको कछु नहिं ज्ञान सोय ।
वह काष्ठ अग्निमें दिया लगाय, उरगनिकों संकट परौ आय
यह भेद जान श्रीपार्श्वदेव, तापसके ढिंग आये स्वमेव ॥
तासों बोले नहिं ज्ञान होय, हिंसा मय तप करि कुग तेहोय
चीरौ जो काष्ठ तत्काल सोय, काढ़े सुनागिनी नाग दोय ॥
तिनके जु काष्ठ गत रहे प्राण, पारस प्रभु करुणाधर महान
तिनके वचनामृत शुभ महान, निर्मल भावोंसे सुने कान ॥
तत्काल पुण्यसमुदाय होय, उत्तम गति बन्ध कियो सुदोय ।
सन्यास कियो मनको लगाय, धरणेन्द्र सु पद्मावती लहाय ॥
सोही पद्मावती मात सार, नित प्रति पूजौं मैं बार बार ।
बहुत जीवन उपकार कीन, मेरी बारी मैं बहुत दीन ॥
जल आदिक वसु विधि द्रव्यलाय, गुणगान गाय बाजे बजाय
घननन घननन घण्टा करन्त तननं तननं नूपूर तुरन्त ॥
ताथेई थेई२ घुंघरु करन्त, झुकि झुकि झुकि फिर पग धरंत ।
बाजत सितार मिरदंग साज, वीना मुरली मधुरी अवाज ॥
करि नृत्य गान बहुगुण बखान, कहलों महिमा वरनं अयान
'सेवक' पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियो प्रवीन ॥

घत्ता-पद्मावति माता तुमगुण गाता आनन्ददाता कष्ट हरौ ।
सुनि मातामोरी शरणजु तोरी, लखि मम ओरी धीर धरौ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावती देव्यै पूर्णार्घं ।

दोहा—हे माता मम उर बिषै पूरण तिष्ठो आय ।
रहे सदैव दयालुता कहता सेवक गाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

शांतिपाठ संस्कृत ।

शांतिजिनं शशि-निर्मल-वक्त्रं, शील-गुण-व्रत संयम-पात्रं ।
अष्टशताचित-लक्षण गात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुज-नेत्रं ॥१॥
पच्चम भीप्सित-चक्रधराणा पूजितमिंद्र-नरेन्द्र गणैश्च ।
शांतिकरं गण-शांतिमभीप्सुः षोडश तीर्थंकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्य-तरूः सुर-पुष्प-सुवृष्टिर्दुन्दुभिरासन-योजन घोषौ ।
आतपवारण-चामर युग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥३॥
तं जगदर्चित शांति जिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांति मह्यमरं पठते परमां च ।४।

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणै स्तुति-पाद-पद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपा—
स्तीर्थंकराः सतत शांतिकरा भवन्तु ॥५॥

इन्द्रवज्रा ।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य—तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः ॥
क्षेम सर्व—प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भुमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥

दुर्भिक्षं चोर-मारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्य प्रदायि ॥७॥

प्रध्वस्त घाति कर्माणः केवलज्ञान भास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

यथेष्ट प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपति नुतिः संगति सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुण गण कथा दोषवादे च मौनं ।
सर्वस्यापि प्रिय हित वचो भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भव भये यावदेतेऽपवर्गः ॥९ ।

आर्यावृत्तं ।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद द्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाण संप्राप्तिः ॥१०॥
अक्खर-पयत्थ-हीणं मत्ता हीणं च जं मए भणियं ।
तं खमऊ णाणदेवाय मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ।११॥
दुक्ख-खयो कम्म-खओ समाहिमरणं च वोहि-लाहोय ।
मम होउ जगद्-बंधव तव जिणवर चरण-सरणेण ॥१२॥

संस्कृत प्रार्थना ।

त्रिभुवन गुरो ! जिनेश्वर ! परमानन्देक कारन कुरुष्व ।
मयि किंकरेत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः ॥१३।
निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुःखया भवस्थित्या ।
अपुनर्भवाय भवहर ! कुरु करुणामंत्र मयि दीने ॥१४॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद्-भवकूपतः कृपां कृत्वा ।
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ।।१५।।
त्वं कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश ! तेनाहं ।
मोह-रिपु-दलित मानं फुत्करणं तव पुरः कुर्वे ।।१६।।
ग्रामपतेरपि करूणा, परेण केनाप्युपद्रु ते पुंसि ।
जगतां प्रभो ! न किं तव, जिन ! मयि खलु कर्मभिःप्रहते
अपहर मम जन्म दयां कृत्वै चेत्येक वचसि वक्तव्यं ।
तेनातिदग्ध इति मेव देव ! भभूव प्रलापित्वं ।।१८।।
तव जिनवर ! चरणाब्ज-युगं करूणामृत-शीतलं यावत् ।
संसार-ताप-तप्तः करोमि हृदि तावदेव सुखी ।।१९।।
जगदेक शरण भगवान् ! नौमि श्रीपद्मनन्दित-गुणौघ ।
किं बहुना कुरु करुणामंत्र जने शरणमापन्ने ।।२०।।

अथ विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ! ।।१।।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ! ।।२।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।

१-विसर्जन पाठ यही तक है कई लोग निम्न पद्य और बोलते हैं।
आहुता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमं ।
ते मायाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितिम् ।।

चोबीस तीर्थंकरकी आरती

अघहर श्री जिनबिम्ब मनोहर, चोवीस जिनका करो भजन
आज दिवस कंचन समउगीयो, जिनमंदिरमें चलो सजन टेक
न्हवन स्थापना सहस्रनाम पढ, अष्ट विधार्चन पूज रचन।
जयमाला आरती सुस्वर, स्तवन सामायिक त्रिकाल पठन ।अ
जयजय आरती सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभी बाज बजन।
रतन जडित कर स्थाल मनोहर ज्योति अनुपम धूम्र तजन ।अ
ऋषभ अजित संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमूं चरण।
सुमति पद्मप्रभ, देव सुपार्श्व, चंद्रनाथ वपु शुभ्र वरण ।अ.
पुष्पदंत, शीतल श्रेयांस नमी वासुपूज्य भवतार तरन।
विमल अनंत धर्म, शांति, जिन, कुंथु अरहंत जन्म मरण ।अ.
अरु मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमि पार्श्वनाथ हत अष्ट करम
नाथवंश, उन्नत, कर सप्तम अंतम सन्मति देव शरन ।अ.५
समवशरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन।
जीव उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राय रंकको राख शरन ।अ.६
तीर्थंकर गुणमाल कंठकर, जाप जपो नित करो कथन ।
देवशास्त्र गुरु विनय करो, ये तीन रतनका करो जतन। अ.७
मूलसंघ पुष्करगच्छ मंडन, शांतिसेन गुरुपाद रचन ।
भविजन भावे शिवसुख पावे बगेरवाल कहे लाड रतन। अ.८

पंचपरमेष्ठीकी आरती

यह विधि मंगल आरती कीजे, पंचपरमपद भजि सुख लीजे
प्रथम आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा ॥१
दूजी आरती सिद्धनकेरी सुमिरन करत मिटत भवफेरी ॥२॥
तीजी आरति सूरि मुनींद्रा जन्ममरण दुख दूर करिंदा ॥३॥
चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन होवत पाप पलाया ॥४॥
पांचवी आरती साधु तुम्हारी, कुमतिविनाशन शिव अधिकारी
छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक वंदो आनंदकारी।
सातमी आरती श्री जिनवाणी, सेवत स्वर्ग-मुकतिसुखदानी।
पूजा करके आरती कीजे, जनम-जनमका लाहो लीजे ॥
जो यह आरती पढ़े पढ़ावे, द्यानत अजर अमर पद पावे ॥

पद्मावति माताकी आरती

पद्मावति माता दर्शन की बलिहारियां।
पार्श्वनाथ महाराज विराजे मस्तक ऊपर थारे।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र सभी खड़े रहे नित द्वारे ॥पद्मावति॥१
जो जिय थारो शरणों लीनो सब संकट हर लीनो।
पुत्र पौत्र धन संपति देकर मंगलमय करि दीनो ॥२॥
डाकिन शाकिन भूत भवानी नाम लेत भग जावे।
वात पित्त कफ रोग मिटे अरु तन मन सुख हो जावे ॥३॥
दीप धूप अरु पुष्पहार ले मैं दर्शन को आया।
दर्शन करके माता तुम्हारे मनवांछित फल पाया ॥४॥

आचार्य मानतुंगाचार्य द्वारा रचित

भक्तामर स्तोत्र

=×=

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद युगं ! युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्वबोधा-
दुद्भूत-बुद्धि पटुभिः सुरलोक-नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।२॥

बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद् पीठ !
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशांक-कांतान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्त-काल पवनोद्धत-नक्र चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥

सोऽहं तथापि तव-भक्ति-वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तिः ।
प्रीत्यात्म-- वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रम्,
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतु ॥६॥

त्वत्संस्तवेन भव-संतति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु,
सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥७॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद—
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ता-फल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥८॥

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हंति ।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ ।
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः,
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शान्त-राग रूचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रि-भुवनैक-ललाम-भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रुपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष निर्जित-जगत्त्रितयोपमानं ।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाशकल्पं ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डल-शशांक कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रिता- स्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार- मार्गम् ।
कल्पांत-काल-मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५।

निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रगटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्तिं,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक बिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नी विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमः सु नाथ !
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनोहरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपम जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस–
मादित्य-वर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र पंथा ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिव-मार्ग-विधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रि-भुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणि-मयूख-शिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं,
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव-सहस्र-रश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कांतम् ।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झरवारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापं ।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गंभीरतार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः ।
सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

मंदार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
संतानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा ।
गंधोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरूत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरंतर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्यां ।३४॥

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्व-कथनैक-पटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुज-कांती,
पर्यूल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३८॥

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ।३९।

कल्पांत-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कंठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तं ।
आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शङ्क—
स्त्वन्नाम-नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

बल्गत्तु रंग-गज-गर्जित-भीमनाद—
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ।
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह—
वेगावतार-तरणातुर-योधभीमे ।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा—
स्त्वत्पाद-पंकज वनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण नक्रचक्र—
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण वाडवाग्नौ ।
रङ्गतरङ्ग शिखर स्थित यान पात्रा—
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

उद्भूत भीषण जलोदर भार भुग्नाः
शोच्यां दशामुपगतास्च्युत जीविताशाः ।
त्वत्पाद पंकज रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजः तुल्यरुपाः ॥४५॥

आपाद कंठमुरु-शृंखल वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्ट जंघाः ।
त्वन्नाम मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः
सद्यः स्वयं विगत बंध भया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि–
संग्राम वारिधि–महोदर बंधनोत्थं ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भयेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते । ४७ ॥

स्तोत्र स्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्र–पुष्पां ।
धत्ते जनो य इह कंठ–गतामजस्त्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचित आदिनाथस्तोत्र (भक्तामर स्तोत्र)

तत्वार्थसूत्रं

[आचार्य गृद्धपिच्छ]

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ।।

त्रिकाल्यं द्रव्य-षट्कं नव-पद-सहित जीव-षट्काय-लेश्याः ।
पंचान्ये चास्तिकाय व्रत-समिति-गति-ज्ञानं-चारित्रभेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवन-महितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः सवै शुद्धदृष्टिः ।१

सिद्धे जयप्पसिद्धे चउविहाराहणाफलं पत्ते ।
वंदिता अरहंते वोच्छं आराहणा कमसो ।२ ।
उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिच्छरण ।
दंसण-णाण चरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ३॥

सम्यग्दर्शनज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः । १॥
तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ॥२। तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।३।
जीवाजीवास्रव-बंध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वं ।४। नाम-
स्थापना-द्रव्य-भावतस्यन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ।६
निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ।७॥
सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालांतर-भावाल्पबहूत्वैश्च ॥ ८ ॥
मति-श्रुतावधि-मनःपर्याय-केवलानि ज्ञानं ॥९ । तत्प्रमाणे
॥१०॥ आद्ये परोक्षं ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मति-
स्मृतिः संज्ञा चिंताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरं ॥१३॥

तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमितं ।१४॥ अवग्रहेहावाय-धारणाः ॥१५। बहु-बहुविध-क्षिपानि-सृतानुक्त ध्रुवाणां सेतराणां ।१६। अर्थस्य ।१७। व्यंजनस्यावग्रहः ।१८। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्यां ।१९ श्रुतं मतिपूर्वद्वयनेक-द्वादश-भेदं ।२०। भवप्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणां ।२१। क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणां ।२२ ऋजु-विपुलमती मनः पर्ययः २३। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।२४ विशुद्धि-क्षेत्र स्वामिविषयेभ्योऽवधि-मनः पर्याययोः २५ मति श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ।२६। रुपिष्ववधेः ।२७। तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ।२८। सर्व द्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।२९। एकादिनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुभ्यः ।३० मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च ।३१। सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ३२ नैगम-संग्रह व्यवहारर्जु सूत्र-शब्द-समभिरुढैवंभूतानयाः ।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ।१। द्वि नवाष्टा-दशैकविंशति त्रिभेदा यथाक्रमं ।२. सम्यक्त्व-चारित्रे ।३। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञान-दर्शनलब्धयश्चतु-स्त्रित्रि-पंचभेदाः सम्यक्त्व-चारित्रसंयमासंयमाश्च ।५ गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयता-सिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याभव्यत्वानि

च ।७ उपयोगो लक्षणं ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।९। संसारिणो मुक्ताश्च ।१० समनस्काऽमनस्काः ११ संसारिणस्त्रस-स्थावराः ।१२ पृथ्व्यप्तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः ।१३। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ।१४। पंचेन्द्रियाणि ।१५। द्विविधानि १६। निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियं ।१८। स्पर्शन-रसनाघ्राण-चक्षुश्श्रोत्राणि ।१९ स्पर्श-रस-गंध-वर्ण-शब्दास्तद्‌र्थाः २० श्रुतमनिन्द्रियस्य ।२१। वनस्पत्यन्तानामेकं ।२२ कृमि पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२३। संज्ञिनः समनस्काः ।२४। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।२५।अनुश्रेणि गतिः २६। अविग्रहा जीवस्य ।२७। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्‌चतुर्भ्यः ।२८। एकसमयाऽविग्रहा ।२९। एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ।३०। संमूर्च्छन गर्भोपपादाजन्म ।३१ सचित्तशीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।३२ जरायुजांडज-पोतानां गर्भः ।३३ देवनारकाणामुपपादः ।३४। शेषाणांसम्मूर्च्छनं ।३५। औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजसकार्मणानि शरीराणि ।३६। परं परं सूक्ष्मं ।३७। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।३८। अनन्तगुणे परे ।३९। अप्रतीघाते ।४०। अनादि संबंधे च ।४१ सर्वस्य ।४२। तदादीनि भाज्यानि-युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।४३। निरूपभोगमन्त्यं ।४४। गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यं ।४५। औपपादिकं वैक्रियिकं ।४६। लब्धि-प्रत्ययं च ।४७॥

तैजसमपि ।४८। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्त-संयतस्यैव ।४९। नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।५०। न देवाः ।५१। शेषास्त्रिवेदाः ।५२। औपपादिक-चरमोत्तमदेहाऽसंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।५३।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्न--शर्करा--बालुका-पंक--धूम--तमो--महातमः-प्रभा-भूमयो घनांबुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः योजनं ।१। तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदशदशत्रि-पंचोनैक-नरकशत-सहस्राणि-पंच-चैव यथाक्रमम् ।२। नारका नित्याऽशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ।३ परस्परोदीरित-दुःखाः ।४। संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्चप्राक् चतुर्थ्याः ।५ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति--त्रयस्त्रिंशत्सागरो-पमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।६। जम्बूद्वीप लवणोदादयः शुभनामानो द्वीप समुद्राः ७ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व परिक्षे-पिणो वलयाकृतयः ८ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन शत सहस्र विष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।९। भरत हैमवत-हरि विदेह रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिम वन्महाहिमवन्निषध-नील रुक्मि शिखरिणो वर्ष धर-पर्वताः ।११। हेमार्जुन तपनीय वैडूर्यरजत हेम मयाः ।१२। मणिविचित्र पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः ।१३ पद्म महापद्म-तिगिच्छ केशरि-महापुण्डरीक पुण्डरीका

हृदास्तेषामुपरि ।१४। प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्ध विष्कम्भो हृदः ।१५। दश योजनावगाहः ।१६। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।१७। तद्द्विगुणाहृदाः पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्यः श्री ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससा-मानिक-परिषत्काः ।१९। गंगा-सिन्धु रोहिद्रोहि-तास्या हरिद्धरिकांताः सीता सीतोदा नारी नरकांता सुवर्ण रुप्यकूला-रक्तारक्तोदा- सरितस्तन्मध्यगाः ।२०। द्वयोर्द्वयोः पूर्व पूर्वगाः ।२१। शेषास्त्वपरगाः ।२२। चतुर्दशनदीसहस्र-परिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ।२३। भरतः षड्विंशति-पंचयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य २४ तद्द्विगुण-द्विगुण विस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।२५ उत्तरा दक्षिण-तुल्याः ।२६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्-समयाभ्यामुत्सर्पिण्यव-सर्पिणीभ्याम् ।२७। ताभ्याम-परा भूमयोऽवस्थिता ।२८। एक द्वि-त्रि पल्योपमस्थितयोः हैमवतक-हारिवर्षक-दैव कुरवकाः २९ तथोत्तराः ।३०। विदेहेषु संख्येय-कालाः ।३१। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति शत भागः ३२। द्विर्धातकीखण्डे ।३३। पुष्करार्द्धेच ३४। प्राङ्-मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।३५। आर्याम्लेच्छाश्च ।३६। भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तर कुरुभ्यः ।३७। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहुर्ते ।३८। तिर्यग्योनिजानां च ।३९।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ।१। आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ।२। दशाष्ट पंच-द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यंताः ।३। इन्द्र सामानिक त्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक प्रकीर्णकाभि योग्य किल्विषिकाश्चैकशः ।४। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ।५। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।६। काय प्रवीचारा आ ऐशानात् ।७ शेषाः स्पर्श रूप शब्द मनः प्रवीचाराः ।८। परेऽप्रवीचाराः ।९। भवनवासिनोऽसुर नाग विद्युत्सुपर्णाग्नि वात स्तनितोदधि द्वीप दिक्कुमाराः ।१०। व्यन्तराः किन्नर किंपुरुष महोरग गन्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाचाः ।११। ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारकाश्च ।१२ मेरुप्रदक्षिणा नित्य गतयो नृलोके ।१३। तत्कृतः काल विभागः ।१४। बहिरवस्थिताः ।१५। वैमानिकाः ।१६। कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।१७। उपर्युपरि ।१८। सौधर्मैशान सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ-शुक्र महाशुक्रसतार सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय जयन्त वैजयन्त अपराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।१९। स्थिति प्रभाव सुख-द्युति लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि विषय तोऽधिकाः ।२०। गतिशरीर परिग्रहाभि मानतो हीनाः ।२१। पीत पद्म शुक्ल लेश्या द्वि-त्रि शेषेषु २२। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।२३। ब्रह्म लोकालया लौकान्तिकाः ।२४। सारस्वतादित्य ब्रह्मरूप-गर्दतोय तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।२५। विजयादिषु द्वि चरमाः ।२६।

औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः २७ स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण द्वीप शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्ध हीन-मिताः ।२८ सौधर्मैशानयोः सागरोपमऽधिके २९। सान-त्कुमार माहेन्द्रयोः सप्त ।३०। त्रि-सप्तनवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ३१। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन-नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।३२। अपरापल्योप-ममधिकम् ।३३। परतः परतः पूर्वापूर्वाऽनन्तरा ३४ नारकाणां च द्वितीयादिषु ।३५। दश वर्ष सहस्राणि प्रथमायाम् ।३६ भवनेषु च ।३७। व्यन्तराणां च ।३८ परापल्योममधिकम् ।३९ ज्योतिष्काणां च ।४०। तदष्टभागोऽपरा ।४१ लौका-न्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि च सर्वेषां ।४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः ।१। द्रव्याणि ।२ जीवाश्च ।३। नित्यावस्थितान्यरुपाणि ।४ रुपिणः पुद्-गलाः ।५। आकाशादेकद्रव्याणि ।६। निष्क्रियाणि च ।७। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैक जीवानाम् ।८। आका-शस्यानन्ताः ।९। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।१०। नाणोः ११। लोकाकाशेऽवगाहः ।१२। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।१३। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानां १४। असंख्येय-भागादिषु जीवानाम् ।१५। प्रदेश-संहारविसर्पाभ्यां प्रदीप-वत् ।१६। गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।१७।

आकाशस्यावगाहः ।१८। शरीरवाङ् मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ।१९। सुखदुःखजीवित मरणोपग्रहाश्च ।२०। परस्परोपग्रहोजीवानां ।२१। वर्तना परिणाम क्रिया परत्वा परत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्श-रस गन्ध-वर्ण-वंतः पुद्गलाः ।२३। शब्द बंधसौक्ष्म्य स्थौल्य संस्थान-भेद-तमश्छायातपो-द्योतवंतश्च ।२४। अणवः स्कंधाश्च ।२५। भेद-संघातेभ्याः उत्पद्यन्ते ।२६। भेदादणुः ।२७। भेद-संघाभ्तेयां चाक्षुषः ।२८। सद्-द्रव्य-लक्षणम् ।२९ उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् ।३०। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।३१। अर्पितानर्पितसिद्धेः ३२ स्निग्ध रूक्षत्वाद्बन्धः ।३३। न जघन्य गुणानाम् ।३४। गुण-साम्ये सदृशानाम् ।३५। द्वयधिकादि गुणानाम् तु ।३६। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।३७। गुणपर्ययवद द्रव्यम् ।३८। कालश्च ।३९। सोऽनन्तसमयः ।४०। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।४१। तद्भावः परिणामः ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमें मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥५॥

काय-वाङ्-मनः कर्मयोगः ।१। स आस्रवः ।२। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।३। सकषायाकषाययोः साम्परायिके-र्यापथयोः ४ इन्द्रियकषायाव्रत-क्रियाः पंच चतुः पंच-पंचविंशति संख्याः पूर्वस्य भेदाः ।५। तीव्र मन्द-ज्ञाताज्ञात भावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ६ अधिकरणं जीवा-ऽजीवाः ७ आद्यं संरम्भ समारम्भारंभ योग-कृत कारिता-

नुमत कषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ।८। निवर्तना: निक्षेप संयोगनिसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रि, भेदः परम् ।९। तत्प्रदोषनिह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता, ज्ञान दर्शनावरणयोः ।१०। दु:ख-शोक तापाक्रन्दन-वध ,परिदेवनान्यात्म परोभय-स्थानान्यसद् वेद्यस्य ।११। भूतव्रत्यनुकम्पादान सरागसंयमादि योगः शान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।१२। केवलि-श्रुत-संघ-धर्म देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१३। कषायोदयातीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।१४ बह् वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुष १५ मायातैर्यग्योनस्य ।१६। अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुषस्य ।१७। स्वभाव मार्दवं च ।१८। निः शीलव्रतत्वि च सर्वेषाम् ।१९। सरागसंयम संयमासंयमाकामनिर्जरा बालतपांसि देवस्य ।२०। सम्यक्त्व च ।२१ योग वक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।२२। तद्विपरीतं शुभस्य ।२३ दर्शनविशुद्धिविनयसम्पन्नता शील व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग संवेगौ शक्तितस्त्याग तपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरण-महदाचार्य-बहूश्रुत प्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि मार्गप्रभावना प्रवचन वत्सलत्वमिति-तीर्थंकरत्वस्य २४ परात्म-निंदा प्रशंसे-सदसद्गुणोच्छादनोद्भा वने च नीचैर्गोत्रस्य ।२५। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२६। विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

हिंसाऽनृत स्तेयाब्रह्म परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।१॥

देश सर्वतोऽणु-महती ।२। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंच-पंच ३ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपण समित्यालोकित पानभोजनानि पंच ।४। क्रोध लोभ भीरूत्व-हास्य प्रत्याख्यानान्यनुवीचि-भाषण च पंच ५। शून्यागार वि मोचितावास परोपरो-धाकरण भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माऽविसंवादाः पंच ।६। स्त्री-राग-कथाश्रवण तन्मनोहरांगनिरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण वृष्येष्ट स-स्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ।७। मनोज्ञामन ज्ञेन्द्रिय-विषय-रागद्वेषवर्जनानि पंच ।८। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ।९। दुःखमेव वा १०। मैत्री-प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ्यानि च सत्वगुणाधिक-क्लिश्यमानाऽविनयेषु ।११। जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् १२। प्रमत्तयोगात्प्राण व्यप-रोपणं हिंसा ।१३। असद्विधानमनृतम् ।१४। अदत्तादानं स्तेयं ।१५। मैथुनंब्रह्म ।१६ मूर्च्छा परिग्रहः १७। निः शल्यो व्रती ।१८। अगार्य नगारश्च ।१९। अणुव्रतोऽगारी ।२०। दिग्देशानर्थदण्ड विरति सामायिक-पोषधोपवासोप-भोगपरिभोग-परिमाणातिथि संविभाग व्रत सम्पन्नश्च २१ मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।२२। शंका कांक्षा-विचि-कित्सान्यदृष्टि प्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।२३। व्रत शीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ।२४। बन्ध-वध-च्छेदाति-भारारोपणान्नपान-निरोधाः ।२५। मिथ्योपदेश रहोभ्या-ख्यान कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकारमन्त्रभेदाः ।।२६।।

स्तेनप्रयोग तदाहृतादान विरुद्धराज्यातिक्रम हीना-धिकमा-नोन्मान-प्रतिरुपकव्यवहाराः ।२७। परविवाहकरणेत्वरिका परिगृहीतापरिगृहीतागमना नंगक्रीडा कामतीव्राभिनिवेशाः ।२८। क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्ण धनधान्यदासीदास-कुप्यप्रमा-णाति क्रमाः ।२९। उर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम क्षेत्रवृद्धिस्मृ त्यन्तराधानानि ।३०। आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्दरुपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ।३१। कन्दर्प कौत्कुच्य मौखर्यासमीक्ष्याधिक-रणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।३२। योग-दुःप्रणिधानाना-दर स्मृत्यनुपस्थानानि ।३३। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गा दान-संस्तरोपक्रमणाना दरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३४। सचि-त्तसम्बन्ध सम्मिश्राभिषवदुः पक्वाहाराः ।३५। सचित्त-निक्षेपापिधान परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ।३६। जिवित-मरणाशंसा मित्रानुराग सुखानुबन्धः निदानानि ।३७। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।३९। विधि द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः ३९ ।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद कषाय योगा बन्धहेतवः ।१। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बंधः ।२। प्रकृति स्थित्यनुभाग प्रदेशास्तद्विधयः ३। आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोह-नीयायुर्नाम-गोत्रान्त-रायः ।४। पंच-नव द्वयष्टाविंशति चतुर्द्वि चत्वारिंशद्-द्वि-

पंच भेदा यथाक्रमम् ।५। मतिश्रुतावधिमनः पर्यय केवलानाम् ६। चक्षु रचक्षु रवधिकेवलानां निद्रा निद्रानिद्राप्रचला प्रचला प्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।७। सदसद्वे द्ये ८। दर्शन चारित्र मोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रि द्विनव षोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्व तदु भयान्य कषाय कषायौ हास्यरत्यर तिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदाः अनंतानुबंध्यप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध मान-माया लोभाः ।९। नारकतैर्यग्योन मानुषदैवानी १०। गति जाति शरीरांगोपांग निर्माण बंधन-संघात संस्थान-संहनन स्पर्श-रस-गंध वर्णानुपूर्व्य गुरूलघूपघात-परघाता तपो द्यो तोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येक-शरीर त्र स सुभग सुस्वर-शुभ सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय यशः कीर्ति सेतराणि-तीर्थक रत्वं च ।११। उच्चैनीचैश्च ।१२। दान-लाभ भोगोपभोग-वीर्याणाम् ।१३ आदि तस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्साग-रोपम-कोटी कोट्यः परास्थितिः ।१४। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१५ विंशतिर्नाम गोत्रयोः १६। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्या-युषः ।१७। अपराद्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ।१८। नामगोत्र-योरष्टौ ।१९। शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।२०। विपाकोऽनुभवः ।२१। स यथानाम ।२२। ततश्च निर्जरा २३। नाम प्रत्ययाः सर्वतो योग विशेषात्-सूक्ष्मैक क्षेत्रावगाह स्थिताः सर्वात्म प्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ।२४। सद्वेद्य शुभायुर्नाम-गोत्राणि

पुण्यं ।२५। अतोऽन्यत्पापम् २६।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेअष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आस्रव-निरोधः संवर ।१। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा परिषहजय-चारित्रैः ।२। तपसा निर्जरा च ।३। सम्यग्योग निग्रहो गुप्तिः ।४। ईर्याभाषैषणा-दाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।५। उत्तम क्षमा-मार्दवार्जव शौच-सत्य संयम-तप-स्त्यागाकिंचन्य ब्रह्मचर्याणि धर्मः ।६। अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वा शुच्यास्रवसंवर निर्जरालोक बोधिदुर्लभ धर्मस्वाख्या-तत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ७। मार्गाच्यवन निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।८। क्षुत्पिपासा शीतोष्ण दंशमशकनाग्न्यारति-स्त्री चर्या विषद्या-शय्याक्रोश वधयाचनालाभ रोग तृणस्पर्शमल सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ।९। सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थ वीतरागयोश्चतुर्दश ।१० एकादश जिने ।११। बादरसाम्पराये सर्वे ।१२। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।१३। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।१४। चारित्रमोहे नाग्न्यारति स्त्री विषद्याक्रोश याचना सत्कारपुरस्काराः-।१५। वेदनीये शेषाः ।१६। एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतिः ।१७ सामायिक--च्छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि सूक्ष्म साम्पराय-यथा ख्यातमिति-चारित्रम् ।१८। अनशनाव मौदर्य वृत्तिपरिसंख्यान रसपरित्याग-विविक्त-शय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ।१९। प्रायश्चित विनय वैयावृत्य स्वाध्याय-व्युत्सर्ग ध्यानान्युत्तरं ।२० नव चतुर्दश

पंच द्वि भेदा यथाक्रमं प्रागध्यानात् ।२१।आलोचना-प्रतिक्रमण-तदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेद-परिहारोपस्थापनाः २२। ज्ञान दर्शन चारित्रोपचाराः ।२३। आचार्योपाध्याय तपस्वि शैक्ष्यग्लान गण कुल संघ साधु मनोज्ञानाम् ।२४। वाचना पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशाः ।२५ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।२६ उत्तम संहननस्यैकाग्रचिंता-निरोधो ध्यानमान्त मुहूर्त्तात् ।२७ आर्तरौद्र-धर्म्य शुक्लानि ।२८। परे मोक्षहेतू ।२९। आर्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति समन्वाहारः ।३० विपरीतं मनोज्ञस्य ।३१। वेदनायश्च ।३२। निदानं च ३३। तदविरत-देशविरत-प्रमतसंयतानाम् ।३४। हिंसानृत-स्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत देशविरतयोः ।३५ आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ।३६। शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।३७। परे केवलिनः ।३८। पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरत-क्रियानिवर्तीनि ३९। त्र्येकयोग काययोगयोगानाम् ।४०। एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।४१। अवीचारं द्वितीयम् ।४२। वितर्कः श्रुतम् ।४३। विचारोऽर्थव्यंजन योग-संक्रांतिः ।४४ सम्यग्दृष्टि-श्रावक विरतानंतवियोजक-दर्शनमोहक्षपकोशमकोपशांत मोह-क्षपक-क्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुण-निर्जराः ।४५। पुलाक-वकुश कुशील निर्ग्रंथ स्नातकाः निर्ग्रंथाः ।४६। संयम-श्रुत-प्रतिसेवना तीर्थलिंग-लेश्योपपाद स्थान विकल्पतः साध्याः ।४७

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ।।९।।

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय क्षयाच्च केवलम् ।१। बन्धहेत्वभाव- निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः २ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ।३। अन्यत्र केवलसम्यक्त्व ज्ञान दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।४। तदनन्तर मूर्ध्व गच्छत्या-लोकान्तात् ।५। पूर्वप्रयोगा दसंगत्वाद् बन्धच्छेदात्तथागति-परिणामाच्च ।६। आविद्ध-कुलाल चक्रवद् व्यपगत लेपाला-बुबदेरण्ड बीजवदग्नि-शिखावच्च ७। धर्मास्तिकायाभा-वात् ।८। क्षेत्र-काल-गति लिंग-तीर्थ-चारित्र प्रत्येकबुद्ध-बोधित ज्ञानावगाहनान्तर संख्याल्प बहुत्वतः साध्या ९।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

कोटिशतं द्वादशं चेव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्त्यधिकानी चैव । पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्या-मेतद्श्रुतं पंचपदं नमामि ।१। अरहन्त भासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियंसव्वं । प्रणमामि भत्ति-जुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा ।२। अक्षर मात्र-पद-स्वर-हीनं व्यंजन-संधि-विवर्जित-रेफम् साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्र-समुद्रे ।३। दशाध्याय परिच्छन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति । फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ।४। तत्वार्थसूत्रकर्तारं गृद्धपिच्छोपलक्षि-तम् वन्दे गणीन्द्र संजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ।५। जं सक्कइ तं कीरइ जं पुण संक्कइ तहेव सद्दहणं । सद्दह-माणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं ।६। तव यरणंवय-धरणं, सज्झमसरणं

च जीवदया करणम् । अंते समाहि मरणं, चउविह-दुक्खं णिवारेई । ७॥

॥ इति तत्त्वार्थ—सूत्रं समाप्तम् ॥

बारह भावना ।

(भूधरदास कृत)

दोहा—राजा, राणा, छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी—अपनी बार । १॥
दल-बल देई-देवता, मात-पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीवको, कोई न राखनहार ।२॥
दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान । ३॥
आप अकेले अवतरै, मरै अकेलो होय ।
यों कवहूँ इस जीवको, साथी—सगा न कोय ॥४॥
जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपनो कोय ।
घर—सम्पत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥
दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड पिंजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, अवर नहीं घिन गेह ॥६॥

सोरठा—मोह नींदके जोर, जगवासी घूमै सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस लूटैं सुध नहीं ॥७॥
सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमै ।
तप कछु बनहिं उपाय, कर्म-चोर आवत रुकै ॥८॥

दोहा।

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विध बिन निकसै, नहि पैठे पूरव चोर ॥९॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रीय-विजय, धार निर्जरा सार ॥१०॥
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥
धन-कन-कंचन राज-सुख, सबहि सुलभकर जान।
दुरलभ है संसारमें, एक जथारथ ज्ञान।१२॥
जांचे सुर-तरु देय सुख, चिन्तन चिन्ता रैन।
बिन जांचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन ॥१३॥

निर्वाण कांड भाषा

दोहा-वीतराग वन्दौं सदा, भाव-सहित सिरनाय।
कहूँ कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥१॥

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चम्पापुरि नामी।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बंदौं भावभगति उर धार ॥२॥
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखर समेद जिनेसुर बीस, भाव-सहित वंदौं निशदीस।३॥
वरदतराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदिगुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि ऊठकोड़ि,वन्दौं भाव सहित कर जोड़ि।४

श्रीगिरनार शिखर विख्यात कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्बु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ५
रामचन्द्रके सुत द्वै वीर, लाड़ नरिन्द्र आदि गुणधीर।
पांच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि बन्दौं निरधार ६
पांडव तीन द्रविड राजान,आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्रीशत्रुंजय गिरिके शीस, भाव-सहित बन्दौं निश दीस ॥७
जे बलभद्र मुकतिमें गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल,तिनके चरन नमूं तिहुँ काल।८
राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील-महानील।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान,तुंगीगिरी बन्दौं धरि ध्यान ९
नंग अनंग कुमार सुजान, पांच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि सीश, ते वन्दौं त्रिभुवन पति ईश १०
रावणके सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवा तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास,ते वन्दौं धरि परम हुलास ॥११
रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठ कोड़ि बन्दौं भव पार ।१२
बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि-चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बन्दौं भवसायर तर्ण ॥१३
सुवरण भद्र आदि मुनि चार,पावागिरि वर शिखर मंझार।
चेलना नदी तीरके पास, मुक्ति गये बन्दौं नित तास ।१४

फल होड़ि वडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरु दत्तादि मुनिसुर जहां मुकित गये बन्दौं नित तहां ॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नाग कुमार मिले त्रय होय ।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते बन्दौं नित सुरत संभार ॥
अचलापूरकी दिश ईशान, जहां मेंढागिरी नाम प्रधान ।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय ॥
बंसस्थल वनके ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय ।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥
जसरथ राजाके सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे ।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूं जोर जुग पान ॥
समवशरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिन्दोगिरी नयनानन्द ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जिहाज ॥
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बू स्वामी आयें निर्वाण ।
चरमकेवली पंचम काल, ते वन्दौं नित धर्म-जिहाज ॥
तीन लोकके तिरथ जहाँ, नितप्रति वन्दन कीजैं तहां ।
मन-वच-काय सहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविकगुण गाय
संवत सतरह सौ इकताल आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
'भैया' वन्दन करहि त्रिकाल, जय निर्वाण कांड गुणमाल ॥

अतिशय क्षेत्र श्री पद्मपुरामें विराजित ।

श्री पद्मप्रभ जिन पूजा ।

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभ, वितराग जिननाथ ।
विघन हरण मंगल करन, नमों जोरि जुगहाथ ॥
जन्म महोत्सवके लिए, मिलकर सब सुर राज ।
आये कौशाम्बी नगर, पद पूजाके काज ॥
पद्मपुरीमें पद्मप्रभ, प्रगटे प्रतिमा रूप ।
परम दिगम्बर शांतिमय, छबि साकार अनूप ॥
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजाके काज ।
आह्वानन करते मुखद कृपा करो महाराज ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्

अष्टक ।

क्षीरोदधि उज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा ।
कंचन झारी में लेय, दीनो धार धरा ॥
वाडीके पद्म जिनेश, मंगल रूप सही ।
काटो सब क्लेश महेश मेरी अज यही ॥१

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।१

चन्दन केशर करपूर, मिश्रित गन्ध धरो ।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो ॥ बाडा के० ॥

ॐ ह्रं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

ले तन्दुल अमल अखंड, थाली पूर्ण भरो ।
अक्षय पद पावन हेतु हे प्रभु पाप हरो ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।
ले कमल केतकी वेल, पुष्प धरुं आगे ।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०
नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा ।
मम क्षुधारोग नश जाय, गाऊं वाद्य वजो ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०
हो जगमग २ ज्योति, सुन्दर अनियारी ।
ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०
ले अगर कपूर सुगन्ध चन्दन गन्ध महा ।
खेवत हों प्रभु ढिंग आज, आठों कर्म दहा ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।
श्रीफल बादाम सुलेय केला आदि धरे ।
फल पाऊ शिव पद नाथ, अरपूं मोद भरे ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।
जल चंदन अक्षत पुष्प नेवज आदि मिला ।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध शिला ॥ बाडा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि०

अर्घ्यं चरणोंका

चरण कमल श्री पद्म के, वंदों मन वच काय।
अर्घ्य चढाऊं भावसे कर्म नष्ट हो जाय ॥ बाडा के०।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र चरणकमलेभ्यो अर्घं नि०।

भूमिमें विराजमानका अर्घं।

धरतीमें श्री पद्मको पद्मासन आकार।
परम दिगम्बर शांतिमय, प्रतिमा भव्य अपार।
सौम्य शांत अति कान्तिमय, निर्विकार साकार।
अष्ट द्रव्यका अर्घ्य ले, पूजो विविध प्रकार। बाडा के.।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय भूमि में स्थित समय अर्घं नि०।

पंचकल्याणक

(हर एक दोहाके बाद नीचे लिखो आंचरो पढ़ना चाहिये)
श्री पद्मप्रभ जिनराजजी मोहे राखो हो शरना।

दोहा–

माघ कृष्ण छठीमें प्रभो आये गर्भ मझार।
मात सुसीमाका जनम, किया सफल करतार ॥श्रीपद्म०

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठी दिने गर्भमंगल प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।

कार्तिक सुद तेरस तिथि, प्रभो लियो अवतार।
देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार ॥ श्रीपद्म० ।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत् बंधन तोड ।
तप धार्यो भगवान् ने, मोह कर्म को तोड ॥ श्रीपद्म० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा उपज्यो केवलज्ञान ।
भवसागर से पार हो, दियो भव्य जन ज्ञान ॥श्रीपद्म०॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

फाल्गुन वदी सुचौथ को, मोक्ष गये भगवान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान ॥श्रीपद्म०॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थी दिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा ।

जयमाला

दोहा—चौत्रीसौं अतिशय सहित, बाडा के भगवान ।
जयमाला श्री पद्मकी, गाऊं सुखद महान ॥

पद्धरि छन्द

जय पद्मनाथ परमात्मदेव, जिनकी करते सुर चरणसेव ।
जय पद्म २ प्रभु तन रसाल, जय २ करते मुनिमन विशाल ॥
कोशाम्बीमें तुम जन्म लीन, बाडामें बहु अतिशय करीन ।
इक जाट पुत्रने जमीं खोद, पाया तुमको होकर समोद ।
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द, आकर पूजा की दुख निकंद ॥
करते दुखियोंका दुःख दूर, हो नष्ट प्रेत बाधा जरुर ।
डाकिन शाकिन सब होय चूर्ण, अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ॥

श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर, तारे तुमने उनको विभोर ।
अरु नकुल सर्प सीता समेत, तारे तुमने निज भक्ति हेत ।
हैं संकट मोचक भक्त-पाल, हमको भी तारो गुण विशाल ॥
विनती करता हूँ बार बार, होवे मेरा दुख क्षार क्षार ।
मीना गूजर सब जाट जैन, आकर पूजै कर तृप्त नैन ॥
मन वच तन से पूजे जो कोय, पावे वे नर शिवसुख जु सोय
ऐसी महिमा तेरी दयाल, अब हमपर भी होवो कृपाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा ।

पूजन विधि जानूं नहीं नहिं जानूं आह्वान ।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान ॥

इत्याशीर्वादः ।

चांदनगांव महावीर स्वामी पूजा ।

(स्व० श्री पूरणमलजी शमशाबाद कृत)

छन्द ।

श्री वीर सन्मति गांव चांदनमें प्रगट भये आय कर ।
जिनको वचन मन कायसे मैं, पूजहूँ शिरनाय कर ॥
हुये दयामय नार नर लखि, शांति रूपा वेष को ।
तुम ज्ञान रूपी भानू से, कीना सुशोभित देश को ॥
सुर इन्द्र विद्याधर मुनि, नरपति नवावे शीश को ।
हम नमत हैं नित चावसौं महावीर प्रभु जगदीश को ।

ॐ ह्रीं श्रीचांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन्

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामीन् अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टक

क्षीरोदधि से भरि नीर, कंचनके कलशा ।
तुम चरणनि देत चढाय, आवागमन नशा ॥
चांदनपुरके महावीर, तौरी छवि प्यारी ।
प्रभु भव आताप निवार, तुम पद बलिहारी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामीने जलं नि० ।

मलयागिरि और कपूर, केशर ले घस्यों ।
प्रभु भव आताप मिटाय, तुम चरणनि परसों ।चांदन चंदनं
तंदुल उज्ज्वल अति धोय, थारी में लाऊं ।
तुम सन्मुख पूंज चढाय, अक्षयपद पाऊं ॥चांदन .अक्षतं॥
बेला केतकी गुलाब, चंपा कमल लाऊं ।
दे काम बाण करि नाश, तुमरे चरण दऊं ॥चांदन.।पुष्पं ॥
फेनी गुंजा पकवान, मोदक ले लीजे ।
करि क्षुधा रोग निरवार, तुम सन्मुख कीजे ॥चांदन.।नैवेद्यं
धृत में कर्पूर मिलाय, दीपक में जारों ।
करि मोह तिमिरको दूर, तुम सन्मुख बारों ।चांदन. दीपं ॥
दश विधि ले धूप बनाय, तामें गंध मिला ।
तुम सन्मुख खेऊं आय, आठों कर्म जला ॥चांदन.।धूपं ॥
पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफल लोंग सजा ।
श्री वर्द्धमान पद राख; पाऊं मोक्ष पदा ॥ चांदन.।फलं ॥

जल गन्ध सु अक्षत पुष्प चरुवर जोर करों।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों॥ चांदन। अर्घं॥

टोंकके चरणोंका अर्घं।

जहां कामधेनु नित आय दुग्ध जु बरसावै।
तुम चरणनि दरशन होत, आकुलता जावै॥
जहां छतरी बनो विशाल, अतिशय बहु भारी।
हम पूजत मन वच काय, तजि संशय सारी। चांदन.॥

ॐ ह्रीं टोंकमें स्थापित श्री महावीर चरणेभ्यो नमः अर्घं०

टीलेमें विराजमानका अर्घं।

टीले के अन्दर आप सोहे पद्मासन,
जहां चतुरनिकाई देव, आवे जिन शासन।
नित पूजन करत तुम्हार कर में ले झारी,
हम हूँ वसुद्रव्य बनाय, पूजैं भरि थारी॥चांदन.॥

ॐ ह्रीं श्रीचांदनपुर महावीरजिने० टीलेमें विराजमान समयकाऽर्घं०

पंचकल्याणक।

कुण्डलपुर नगर मंझार त्रिशला उर आये।
सुदि छठि अषाढ सुर आय, रतनजु बरसायो। चांदन..

ॐ ह्रींश्रीमहावीरजिनेंद्राय आषाढशुक्लाषष्ठयांगर्भमंगलप्राप्तायार्घं

जनमत अनहद भई घोर, आय चतुर्निकाई।
तेरस शुक्लाकी चैत्र, सुरगिरी ले जाई॥ चांदन.॥

ॐ ह्रींश्रीमहावीरजिनेंद्रायचैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्तायार्घं

कृष्णा मगसिर दश जान, लौकान्तिक आये।
करि केशलोंच तत्काल, झट वनको धाये। चांदन.॥

ॐ ह्रींश्रीमहावीरजिनेंद्राय मगसिरकृष्णादश्यांतपोमंगलप्राप्तायार्घं०

वैशाख सुदी दश मांहि घाति क्षय करना ।
पायो तुम केवलज्ञान, इन्द्रनकी रचना ॥चांदन०॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय वैशाखशुक्लादश्यां केवलज्ञानप्राप्तायार्घं
कार्तिक जु अमावस कृष्ण पावापुर ठाहीं ।
भयो तीन लोकमें हर्ष, पहूँचे शिव माहीं ॥चांदन०॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय कार्तिककृष्णामावश्यां निर्वाणप्राप्तायार्घं
जयमाला (दोहा)
मङ्गलमय तुम हो सदा, श्री सन्मति सुखदाय ।
चांदनपुर महावीरकी, कहूँ आरती गाय ॥
पद्धरि छन्द
जय जय चांदनपुर महावीर तुम भक्त जनोंकी हरत पीर ।
जड चेतन जगमें लखत आप, दई द्वादशांग बानी अलाप ।१।
अब पंचम काल मंझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय
टिलेके अन्दर बैठ वीर, नित हरा गायका आप क्षीर ।२
ग्वाला को फिर आगाह कीन, जब दर्शन अपना आप दीन ।
मूरत देखी अति ही अनूप, हैं नग्न दिगंबर शांति रूप ।३।
तहां श्रावक जन बहूँ गये आय, कीये दर्शन करि मन वचन काय
है चिन्ह शेरका ठीक जान, निश्चय हैं ये श्री वर्द्धमान ।४।
सब देशनके श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो बनाय
फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतही गजरथ फिर लयो सजाय५
वे देख ग्वाल मनमें अधीर, मम गृहको त्यागो नहीं वीर ।
तेरे दर्शन बिन तजूं प्राण, सुनि टेर मेरी कृपा निधान ॥६॥

कीने रथमें प्रभु विराजमान,रथ हुआ अचल गिरिके समान ।
तब तरह २ के किये जोर बहुतक रथ गाडी दिये तोड ७।
निशिमांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथचलेग्वालका लगतहाथ
भोरहि झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्वालहि कराय
करि जय जय प्रभुसे करी टेर रथ चल्यो फेर लागी न देर ।
बहुनृत्य करत बाजे बजाय, स्थापन कीने तहं भवन जाय ९
इकदिन मंत्रीको लगा दोष,धरि तोप कही नृप खाइ रोष।
तुमको जब ध्याया वहां वीर,गोलासे झट बच गया वजीर।
मंत्री नृप चांदनगांव आय, दर्शन करि पूजा की बनाय ॥
करि तीन शिखर मन्दिर रचाय कंचन कलशा दीने धराय।
वह हुक्म कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला हो हमेश ।
अब जुडन लगे नर व नारि तिथि चैत सुदी पूनों मंझार ॥
मीना गूजर आवे विचित्र, सब वर्ण जुडे करि मन पवित्र।
बहूँ निरत करत गावें सुहाय, कोई २ घृत दीपक रह्यो चढाय
कोई जय २ शब्द करे गंभीर, जयजयजय हे श्री महावीर ।
जैन जन पूजा रचत आन, कोई छत्र चमर के करत दान ।
जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावै तुरंत।
जो करे बंदना एक वार, सुख पुत्र संपदा हो अपार ॥
जो तुम चरणोंमें रक्खों प्रीत, ताको जगमें हो सके जीत।
है शुद्ध यहां का पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर
पूरनमल पूजा रची सार, जहां हो भूल लेउ सज्जन सुधार।
मेरा है शमशाबाद गाम, त्रिकाल करु प्रभुको प्रणाम ॥

श्री वर्द्धमान तुम गुण निधान, उपमा न बनी तुम चरणनकी।
है चाह यही नित बनी रहे अभिलाष तुम्हारे दरशन की॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनपुर महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं।

दोहा—अष्ट कर्मके दहनको, पूजा रची विशाल।
पढ़े सुने जो भावसे, छूटे जग जंजाल॥
संवत जिन चौबीस सौ, है बासठ की साल।
एकादश कार्तिक वदी पूजा रची सम्हाल॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

अतिशय क्षेत्र देहरे तिजाराके

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन।

वर चंद्र काम कलंक वर्जित नेत्र मनहिं लुभावने,
शुभ ज्ञान केवल प्रगट कीनों घातिया चारो हने।
ऐसे प्रभुके दर्श पाये धन्य दिन यह वार है,
होकर प्रगट महिमा दिखाई नमन शत शत वार है॥
देहरे के श्रीचन्द्र प्रभ मम उर मन्दिर आय।
तिष्ठ तिष्ठ नाथ मैं, पूजूं मन वच काय॥१॥

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

क्षीरोदधि को जल लाय, कंचन भृङ्ग भरा।
तुम ढिंग दे धार नशाय, जामन मरन जरा॥

देहरे के चन्द्र जिनेश अर्ज सुनहूँ मेरी ।
मेटहूं भव भ्रमण क्लेश प्रभु न करो देरी ।१।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

चंदन केशर कर्पूर, श्रद्धा सहित घसे ।
पूजत तुम चरण हजूर, भव आताप नशे ।देहरे० ।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

उज्ज्वल अक्षत जिनराज, मुक्ता सम ल्याऊं ।
दऊं पुंज चरण ढिंग आज, अक्षय पदपाऊं देहरे.।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

बेला गुलाब मचकंद सुमन सुगंध भरे ।
तुमको पूजत प्रभु चन्द्र, काम कलंक हरे ।।देहरे०।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

नैवेद्य जु विविध प्रकार, षट रस बलकारी ।
कर क्षुधा वेदनी क्षार, भूख नशे म्हारी ।देहरे० ।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यंनि०

घृतके भर दीप जलाय, धारु तुम आगे ।
मम तिमिर मोह नशि जाय ज्ञानकला जागे ।।देहरे०।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

शुभ धूप दशांग बनाय पावक में खेऊं ।
मम अष्ट करमजर जाय मोक्षधरा लेऊं ।। देहरे०।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।

पिस्ता बादाम अनार, केला सुखकारी ।
धारे प्रभु चन्द्र अगार, पावे शिवनारी ।।देहरे०।।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

सब जल फल आदिक अर्घ, तुम गुण गावत हूं।
पद पाऊं नाथ अनर्घ, शीश नमावत हूँ ॥ देहरे० ॥

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व०

पंचकल्याणक

वदी चैत सुपंचमी आई, तज वैंजयंत जिनराई।
लक्ष्मणा मात उर आये, सुर इन्द्र जजे सिरनाये।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चैत्रवदी पंचमीको गर्भमङ्गल मण्डिताय अर्घं नि० स्वाहा।

कलि पौंष एकादशि आई, जन्मे थे त्रिभुवन राई।
सुर चन्द्रपुरी मिल आये, अभिषेक सुमेर कराये।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पौषकृष्णा एकादशीको जन्ममङ्गल मण्डिताय अर्घं नि० स्वाहा।

प्रभु भवतन भोग अपारा, निस्सार जाय जग सारा।
वदि पौष एकादशि प्यारी, वनमें जा दीक्षा धारी॥

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पौषकृष्ण एकादशीको तपो मङ्गल मण्डिताय अर्घं नि० स्वाहा।

चहूँ कर्म घातिया नाशा, शुभ केवल ज्ञान प्रकाशा।
फाल्गुन शुभ सप्तमी कारी, बना समोसरण मनहारी॥

ॐ ह्रीं देहरेके श्रींचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुनवदी सप्तमीको केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं नि० स्वाहा।

सम्मेद शैल प्रभु नामी, है ललित कूट अभिरामी।
फाल्गुन सुदि सप्तमी चूरे, शिव नारि वरिविधि कूरे।

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुनसुदी सप्तमीको मोक्षमङ्गल मण्डिताय अर्घं नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा—चन्द्र वदन लक्षण विमल, निष्कलंक निष्काम ।
ऐसे श्री जिन चन्द्र को वंदौ आठों याम ॥

शांति मूर्ति लख आपको, काटे अनन्ते पाप ।
रोग शोक दारिद्र दुख, नशत आप सेआप ॥

पद्धरि छन्द

जय चन्द्रनाथ द्युति अमल चंद्र,जय इन्द्रचंद्र वंदित सुचर्न ।
जय चन्द्रपुरीमें जन्मलीय, महासेन नृपति गृह शोभ कीन ॥
जय मात लक्ष्मण गोद पाय नाना क्रीडा कीनी जिनाय ।
देवन कुमार संग खेल कीन,प्रभुवृद्धि भये मन मोद लीन ।
दश लक्ष्य पूर्व वह लही आप, रहें इन्द्र अमरगण सदा साथ
ले राज्य भार चिरकाल कीन, जानों नहीं काल व्यतीत हीन
सब वस्त्र आभरण देव लाय, श्री जिनको संतोषित कराय ।
एकदिन शृङ्गार करौ जू नाथ, दर्पणमें लख निज मुख सुआप
एक चिह्न जू मुख पर लख प्रवीन,भव भोगन वांछा लांछदीन
वर चन्द्र पुत्रको राज्य देय, संबोधित ह्वै प्रभुजी स्वमेव ।
'विमल' जु पालखीमें बिठाय,ले गये नाथ को इन्द्र आय ।
सर्वतुक बन दीक्षा सु लीन, सह इक हजार राजा प्रवीन ॥
कर पंच मुष्ठि से लौंच केश, धारो जु दिगम्बर नग्न भेष ।
था नलिन नगरपुरका सुराय, तसु नाम सोमदत्तजी कहाय ॥
कीनौ जु पारनों तासु गेह, जहां रत्नोंका बरसा जु मेह ।

फिर आत्म ध्यानमें भये लीन, लहि केवल कीने कर्म छीन ॥
कीनों विहार भारत जु बर्ष, यह पुण्य धरा प्रगटी प्रत्यक्ष।
धर्मोपदेश से भव्य तार, आये सम्मेद शिखर पहार ॥
तहां योग नियोग किये जु सार, पहुँचे प्रभु मोक्ष महल मंझार
यह पंचम दुखमा काल जान, हुई धर्म कर्म सबकी जु हान।
इस नगर तिजारा मध्य खेत, देहरा पवित्र सुन्दर सुक्षेत्र ।
श्रावण शुक्ला दशमी अनूप, वर वार बृहस्पति शुभ स्वरूप ॥
सम्वत् तेरह दो सहस वर्ष मध्याह्न समय अभिजित मुहूर्त ।
जिन प्रगट भये अतिशय सरुप, दिखलाया अपना दिव्यरूप
प्रभुके दर्शन लख कटत पाप, सुख शांति मिलित तुमनाम जाप
सब भूत प्रेत भयभीत होय, डर कर भागत हैं नमत तोय ।
अरु दुख अनेक जाते पलाय, जो भाव सहित प्रभुको जु ध्याय
उनके संकट टरते न कोय विन भाव क्रिया नहीं सफल होय
अब अरज सुना मेरी कृपाल मैं भव दुख दुखिया हे दयाल
मत देर करो सुनिये पुकार, दुष्ट अष्ट करम मेरे निवार ।

धत्ता-श्रीचन्द्र जिनेशं दुख हर लेतं, सब सुख देतं मनहारी ।
गाऊं गुणमाला जग उजियाला, कीर्ति विशाला सुखकारी ॥

ॐ ह्रीं देहरेके श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्राय महार्घं नि० स्वाहा ।

दोहा–देहरे के श्रीचन्द्र को, मन बच तन जो ध्याय ।
ऋद्धि वृद्धि होवे 'सुमति' संकट जाय पलाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

कलि कुण्ड पार्श्वनाथ पूजा ।

सबके मध्य लिखा हींकार फिर चहुँ ओर ब्रह्म अक्षर ।
उसके बाद लिखा स्वर खींचों आठ, वज्र रेखा दुर्द्धर ॥१॥
प्रणव वज्र रेखा आगे है मध्य अनाहत युगल लिखा ।
ह-भ-म-र-घ'झ-स-ख पिंड युक्त जिनवर्ण सहित संशुद्ध लिखा
पीछे वेष्टित किया यथाविधि यही मन्त्र कलिकुण्ड महान ।
पर कृत विघ्न निवारक है अरु चोर डाकिनी नाशक जान ३
जो मंत्रज्ञ डाम से इसको कांस्य पात्रमें लिखते हैं ।
करते हैं श्री खण्ड लेख जो उनको सन्मुख मिलते हैं ॥४॥
दोहा—रोग शोक नाशक विमल, सिद्ध सु महिमावान ।
करूं शुद्ध संस्थापना, श्री कलिकुण्ड महान ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती-सेवित अतुल-बलवीर्यपराक्रम सर्वविघ्नविनाशक । अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं ।

शुभ तीर्थ गंगा नदी द्रह पद्मादिपै मैं जाय के ।
शीतल सुगंधित ओर शुद्ध पवित्र जल भर लायकैं ॥
दुष्ट कृत्य उपसर्ग नाशक एक ही जिन नाथ को ।
मैं पूजता हूँ भाव से कलिकुण्ड पारस नाथ को ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती सेविताय अतुलबलवीर्य-पराक्रमाय सर्वविघ्नविनाशनाय

ह्म्ल्व्यूं भ्म्ल्व्यूं म्म्ल्व्यूं रम्ल्व्यूं घ्म्ल्व्यूं झ्म्ल्व्यूं स्म्ल्व्यूं
खम्ल्व्यूं जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

अतिगंध से जिस पै लुभाते भ्रमर नित्य अनेक हैं ।
वह मलयागिरिका दाहनाशक शुद्ध चंदन एक हैं दुष्ट.।चंदनं
चन्द्रके सम शुक्ल स्वच्छ अखंड शालि बनाय कै ।
अविनाशि पदकी प्राप्तिहेतु अनिंद्य तंदुल लायकै दुष्ट.।अक्षतं
मंदार अरु वकुलादि के रमणी पुष्प मंगाय कै ।
सरमें प्रफुल्लित कमल कुसुम सुगंधसी महकायकै दुष्ट.पुष्पं
ताजे बनाये विविध घृत रसपूर्ण व्यंजन लायकै ।
अति स्वच्छ सुन्दर कनक भाजनमें उन्हें रखवायकै दुष्ट.नैवेद्यं
जगका प्रकाशक तम विनाशक कनकमय दीपक धरुं ।
बहु जगमगाते ज्योतिमय अति ज्वलितसे पूजा करुं ।दुष्ट.दीपं
कपूर चंदन अगुरु काष्ठादिक अनेक मंगायकै ।
अति गंध युक्त अनूप धूप दशांग को बनवायकै ।दुष्ट. धूपं
गोला छुहारे दाख पिस्तादिक अनेक सुलायकै ।
मोक्षका अभिलाष कर रमणीक फल मंगवायकै ।दुष्ट.फलं।
जल गंध अक्षत पुष्प चरु फल दीप धूप मिलायकै ।
वसु अर्घ से कलिकुण्ड पूजूं हर्ष भाव बढायकै ,दुष्ट. अर्घं।।

अडिल्ल छन्द

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु अरु शक्र है,
राहू केतु शनिश्चर नवग्रह चक्र है ।।

इनकी शांति हेतु मैं शांत जु भाव से,
पूजूं श्री कलिकुण्ड प्रभु अति चावसे ।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावतीसेविताय अतुलबलवीर्य-पराक्रमाय सर्वविघ्नविनाशनाय ह्म्ल्व्य्रूं भ्म्ल्व्य्रूं म्म्ल्व्य्रूं र्म्ल्व्य्रूं घ्म्ल्व्य्रूं झ्म्ल्व्य्रूं स्म्ल्व्य्रूं ख्म्ल्व्य्रूं अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा ।

स्तुति

देवेन्द्रों से पूजित हो, सर्वज्ञ जिनेश्वर हो भगवान ।
सदुपदेश जिनवर तुम मैं प्रणाम करता गुणगान ॥
सर्व विघ्न विनाशक हो प्रभुवर तुम हो सद्गुण की खान ।
विनती करता नाथ आपकी, हो नायक कलिकुण्ड महान ॥१॥

नित्य भक्ति पूर्वक निज मनमें याद किया जो हैं करते ।
अपनी शक्त्यानुसार प्रार्थना करके मंत्र जपा करते ॥
पूजा करते भक्तिभाव से यंत्रराज की जो गुणगान ।
पूर्ण हुआ करती है उनकी, मनोकामना निश्चय जान ॥२॥

भक्ति जिन्हों यंत्रराज में, है उनको सब सुख मिलता ।
उनके घरमें कल्प वृक्ष, मानों उत्पन्न हुआ करता ।
अथवा प्रगट होत चिंतामणि, रत्न चिन्त्य वस्तु दाता ।
या फिर मानव मनोरथोंके हेतु कामधेनु पाता ॥३॥

देवासुर से वंदित है जो रत्न पात्रमें लिखा गया ।
रत्नत्रय आराधन का कारण है जो सुना गया ॥

श्रीकलिकुण्ड यंत्र को मैं अध्यात्म प्रेममें पगा हुआ।
नमस्कार करता हूँ मन में भक्ति रंगसे रंगा हुआ ॥४॥

पड़े जेलखानों में जो हैं या बंधन में बन्धे हूए।
ज्वर अतिसार ग्रहणी रोगोमें प्राणी जो हैं फंसे हुए॥
सिंह करी सर्पाग्नि चोर अरु विष समुद्र के कष्ट अनेक।
राज काजके सभी डरों को यंत्र दूर करता है एक ॥५॥

वंध्या स्त्री बहु पुत्र वती हो सुख का अनुभव करती हैं।
सर्व अनर्थ दूर होते हैं शांति पुष्टि नित होती है।
सुख अरु यश बढता है उनका जो नित पूजन करते हैं॥
श्री जिनके मुखसे निकले कलिकुण्ड यंत्रको भजते हैं ॥६॥

सब दोषों से रहित तथा इन्द्रो से सम्पूजित हैं वे।
सर्व सुखोके दाता है अरु विघ्न विनाशकर्ता हैं ये।
जो जन परम भक्तिसे पढते और अर्चना करते हैं॥
पूर्ण सुखी होते हैं वे फिर मुक्ति रमा को वरते हैं ॥७॥

परिपुष्पांजलि।

अथ जयमाला।

दोहा—जिनवर के सुमरण किये, पाप दूर हो जाय।
ज्यो रवि किरणो से सदा, अन्धकार नशि जाय॥

पद्धरि छन्द

जय अंजन पर्वत सम जिनेश, धन गर्जन सम तव धुनि बहेय।
मदमत्त शांत होता गजेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ॥१॥

अति क्रुद्ध जीभ मुहँ दांत फाड, यमराज समान रहा दहाड ।
मृग सम होता है वह मृगेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ।२
खुल रहे केश काले कराल, बहु रहा लाल आंखे निकाल ।
बनता प्रसन्न वह व्यंतरेश मनमें भजते जो जन जिनेश ।३।
बहु भीषण जलवरसे दुरुह, तट अधिक हुआ जलका समूह ।
गोखुर प्रमाण होता जलेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ।४
सिर चमक रही मणिफण महान त्रयोलोक क्षोभ कारण महान
नहीं डरता क्रूरभृजंगनेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ।५।
जहां तीव्रज्वाला माला प्रसार, धृत तेल हवा सेदुगुणझार ।
वह शांत होय जिन तारकेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ।६
पड जेल बन्धे जंजीर डार, बन्धु जिनके रोते अगार ।
वे छूट अभय पाते अशेष मनमें भजते जो जन जिनेश ॥७।
फंस रहा मनुज रिपु चाल बीच वह संकट कष्ट अनेक कीच
असि कमलवेन नहिं हो क्लेश, मनमें भजते जो जन जिनेश ।८

दोहा ।

होते सुर असुरेश सब, अरु विद्याधरराज ।
वशमें उनके सर्वदा सुमरत जो जिनराज ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती-सेविताय अतुलबलवीर्य-पराक्रमाय सर्वविघ्नविनाशनाय ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं खम्ल्व्र्यूं जन्मजरामृत्यु विनाशनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र महुवाकी पूजा ।

सुरत के पास महुवा (मधुपुर नगर) में यह अतिशय क्षेत्र है जहां बारडोली सुरत व नवसारी स्टेशनो से बसमें जाया जाता है, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथकी ४ फीट ऊंची वेलुर पाषाणकी अतिशय युक्त प्रतिमाजी है। जिनके दर्शन करनेसे समस्त प्रकारके विघ्न संकट, मुसीबत, आपत्तियोंको दूर करती है, और मनवांछित मनोकामनाओंको पूर्ण करती है। जिसकी यह पूजा श्री भट्टारक विद्याभूषणजीने बनवाई है।

दोहा-महुवा नगर बिराजते, पार्श्वनाथ जिनराय ।
विघ्नहर मंगल करण, भव भर होउ सहाय ।

ॐ ह्रीं महुवानगर विराजित श्रीविघ्नहर पार्श्वनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः प्रतिस्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

गंगा भरी झारी, सुन्दर भरी, मीनाकारी सरस भरी ।
तामें गंगाजल, भरी अति निर्मल, पूरित मनसे हाथ भरी ॥
पूजो प्रभु पारस, देत महारस, विघ्नहर जिन यश गाया ।
कमठा मद मारण, नाग उधारण संयम धारण तज माया ।१

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

केशर ले चंदन चरचत अङ्गन, विघ्नहर तन सुख दाता।
श्रीजिनपद वंदन, दाह निकंदन, तपत हरन शीतल जात. पूजो

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा।

सुखदास सुपेती, अक्षत सहेती, कलश सु लेती पूंज करी।
अखंड सु उज्वल, गुण अति निर्मल, देहि अक्षेपद वास धरो. पू

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।

चंपक ले पूजो, अरु मचकुन्दो, वास सुगन्धो चुनि आनो,
बहु परिमल जाति, सुगंध सुपाति, मदन हरन तन सुख मानो. पू

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

घेवर ले साजे, सुखमा ताजे, सरस मनोहर अति ल्याजे।
कंचन भरि झारी, फेर रसाली क्षुधा निशाली सुख याजे. पू०

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्रीविघ्नहर पार्श्वनाथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

कंचन ले दीपं, ज्योति अनूपम, वाति कपूरं जोय धरं,।
मर्म ज्ञान उजारण तिमिर निवारण, शिवमारग परकाशकरं. पू

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्रीविघ्नहर पार्श्वनाथाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

कृष्णागुरु धूपं धूप अनूपम, सेवन घट ले जिन आगे,
खेवो भवितारं, कर्मकुठारं छार उजारं उडि भागे. पू० ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।

श्रीफल नारंगी खारक पुंगी, चोचमोच बहुभांति लिये।
जिनचरण चढावो भक्ति बढावो, शिवफल पावो सूरि किये.पू

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।

जल गंध सु अक्षत, कुसुम चरूवर, दीप धूप फल ले भारी।
यह अर्घ सु कीजे, जिनपद दीजे, 'विद्याभूषण' सुखकारी.पू

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।

जयमाला।

चन्द्रनाथं नमस्कृत्यं, नत्वा च गुरुपादकम्।
पार्श्वनाथस्य जयमाला, वक्ष्ये प्राणि-प्रसौख्यदाम् ॥

पद्धरि छन्द।

जय पार्श्व जिनेश्वर अकलरूप, जय इन्द्र चन्द्र फणि नमतभूप
जय विश्वसेनके पुत्र सार, जय वामादेवी सुत धर्मकार।
जय नीलवर्ण वर सायर काय, जय नवकार ऊंचो जिनंदराय
जय शतएक जिनवर तनु आय, जय खंडित क्रोध त्रिशल्यमाय
जय उग्रवंश उदियो सुर, जय कमठ महान ते किया दूर।
जयभूत पिशाचा दूर त्रास, डाकिनी शाकिनी आवे न पास ॥
जय चिंतामणि तुम कल्पवृक्ष, जय मनवांछित फल दान दक्ष।
जय नंत चतुष्टय सुखधार, जय 'विद्याभूषण' नमत सार ॥

धत्ता।

जय पारस देवं सुरीकृत सेवं, नासिय जन्म जरा मरणम्।
जय धर्म सुदाता भव जल त्राता, विघ्नहर सेवित चरणम् ॥

ॐ ह्रीं महुवानगर विराजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

कल्याण विजयभद्र, चिंतितार्थ मनोरथम् ।
पार्श्व पूजा प्रसादेन, सर्व कामाय सिद्धयति ॥

इति श्री भट्टारक विद्याभूषण रचित विघ्नहर पार्श्वनाथ पूजनम् समाप्तम् ।

-×-

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा ।

स्थापना ·

विघ्न हरण मंगल करण हो प्रभु दीनानाथ ।
मुक्ति रमा के कंथ तुम, जय मुनिसुव्रतनाथ ॥
नृप सुमित्र के लाल तुम, श्यामा देवी मात ।
करुं स्थापना त्रिविधि, मम हृदय बिराजो नाथ ।

ॐ ह्रीं श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण स्थित बिराजित मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संन्निधिकरणं ।

(चाल-नंदीश्वर श्री जिनधाम बावन पुंज करो)

प्रभु सम्यक भाव जगाय, प्रासुक जल लायो ।
मम जन्म मरण नशजाय, तव चरण आयो ॥
श्री मुनिसुव्रत भगवान, भवदधि पार करो ।
मन वच तन पूजूं आज संकट दुर करो ।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि-

केशर कर्पूर मिलाय, चंदन ले आयो।
मम भव आताप नशाय, पूजत सुख पायो ॥श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व० स्वाहा।

मुक्तासम उज्वल लाय, अक्षत चढवायो।
अक्षयपद दीजो नाथ, तुम चरण आयो ॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इस काम महारिपु काज, बहु दुःख पावत हूँ।
थिरता निजमें मिल जाय, पुष्प चढावत हूँ। श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

मन मोहन मोदक आज थाली भर लायो।
मम क्षुधारोग मिट जाय, तुमपद चढवायो ॥श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

यह दिप रतनमय लाय, धारु तुम आगे।
मम मोहतिमिर नश जाय, ज्ञान कला जागे ॥श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

यह कर्म महाबलवान, चहुँगति भरमावे।
खेऊं चरणन में धूप, करम सब कटजाये ॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुविधि में ऋतुफल लाय चरण चढावत हूँ ।
शिवपद चिरसुख मिलजाय, यह मन भावत हूं ॥श्री. ।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल बसु द्रव्य मिलाय, अर्घ चढावत हूँ ।
शिवपद निजपद मिलजाय, तुम पद अर्पत हूँ ॥
श्री मुनिसुव्रत भगवान, भवदधि पार करो ।
मन वच तन पूजूं आज, संकट दूर करो ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

(चाल-केवल रवि किरणोंसे जिनका संपूर्ण प्रकाशित है अंतर)

प्रभु चरण तुम्हारे आकर के, भक्तिके सुमन चढाता हूँ ।
विस्तृत है तेरी यशगाथा, उसका मैं पार न पाता हूँ ॥
जो शरण तुम्हारे आता है, भवदधिसे पार चलाजाता ।
वह जनम मरण के दुःखोसे, क्षणभरमें छुटकारा पाता ॥
वैशाख वदी दशमी के दिन, प्रभु राजगृहीमें जन्म लिया ।
इन्द्रोंने जन्म कल्याणका, उत्सवकर अतिशय पुण्य लिया ॥
हुवे चार कल्याणिक राजगृही, सम्मेदशिखरसे मोक्ष गये ।
वसुकर्म नाशकर सिद्धभये, अविनाशी अनंत सुख प्राप्त किये ॥

इतिहास पुरातन बदलाता, यह भूमि पवित्र मनोहर है।
भारतकी संस्कृतिका अनुपम, मानो यह क्षेत्र धरोहर है॥
खर दूषण राजा एकसमय, दंडकवनमें जब आया था।
वनकी सुन्दरता लखमनमें,उसका चित अति हुलसाया था॥
हो हर्षित तभी यहां उसने, वालूकी मूर्ति बनवाई थी।
सुन्दर मंदिर बनवा करकें, यह मूर्ति उसमें पधराई थी॥
प्रतिष्ठानमें बिंब प्रतिष्ठाकर, अपना नरभव सफल किया।
सबने मिल प्रभुकी पूजा की, अरु महापुण्यका लाभ लिया॥
आचार्य माघनंदी स्वामी, कर भ्रमण यहां पधारे थे।
उनके सुपुत्र शलिवाहन, शाककर्ता नृप कहलाये थे॥
पैठण नगरी सुप्रसिद्ध यहां, जिनमंदिर निर्मित है भारी।
मुनिसुव्रत प्रभुकी श्यामवर्ण प्रतिमा है जिसमें सुखकारी॥
यह चतुर्थ कालकी प्रतिमा है जिसका है अतिशय भारी।
भक्तोंके संकट मिटजाते वांछित फल पाते है नरनारी॥
चिमना पंडितने मावसको पुनमका चांद दिखाया था।
प्रभुकी भक्तिसे प्रेरित हो सबने मिल हर्ष मनाया था॥
बिन धूप सुगंधित धुवा यहां मंदिरजी में से आता है।
भक्तोंके द्वारा नंदा दीप निशदिन अखंडसा जलता है॥
मावस पुनमकी रात्रीमें जय घण्टा नाद सुन पाता है।
स्वर्गोंसे सुरगणका समूह, प्रभु दर्शनको नित आता है॥

प्रभु मुनिसुव्रत महिमा अपार, हम अल्प बुद्धि किसविध गाये ।
हम शरण तुम्हारी आये हैं संकट अनिष्ट सब मिट जाय ॥
प्रभु आज तुम्हारी पूजा हम, नहि शास्त्रविधिसे करपाये ।
अज्ञान समझ प्रभु क्षमा करो, हम भक्ति भावसे आये है ॥
भव भ्रमण नही मिटता जबतक प्रभुसाथ आपका बनारहे ।
बनु मुक्तिपथका 'राही' यह भाव सदा ही बना रहे ।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला सहित अर्घं नि० स्वाहा।

दोहा–

तीर्थंकर प्रभु विसवे, श्री मुनिसुव्रत नाथ ।
करुं आरती अघ, चरण नवाऊँ माथ ॥
पैठण में बिराजित आप कच्छवा चिन्ह सुहाय ।
बार बार विनवू सदा, हम पर होवू सहाय ।
जो भविजन पूजन करे, मनवांछित फलपाय ।
सुख संपति संपति लहे, क्रमशः शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वादं पुष्पांजलि क्षिपेत ।

–×–

भ. मुनिसुव्रतनाथकी आरती

(चाल–ॐ जय जगदीश हरे।

ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी, प्रभु जय मुनिसुव्रत स्वामी ।
भक्ति भावसे प्रणमूं, जय अंतरयामी ॥
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ॥१॥

राजगृहीमें जन्म लिया प्रभु आनंद भयो भारी।
सुर नर-मुनि गुण गाये, आरती करी थारी॥
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ।२॥

पिता तिहारे, सुमित्र राजा, शामाके जाया।
श्यामवर्ण मुरत तेरी, पैठणमें अतिशय दर्शाया।
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ॥३॥

जो ध्यावे सुख पावे, सब संकट दूर करें।
मन वांछित फल पावे, जो प्रभु चरण धरें॥
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ।४॥

जन्म मरण, दुख हरो प्रभु, सब पाप मिटे मेरे।
ऐसी कृपा करो प्रभु, हम दास रहे तेरे॥
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ५॥

निजगुण ज्ञानका, दीपक ले आरती करूं थारी।
सम्यग्ज्ञान दो सबको, जय त्रिभुवनके स्वामी॥
ॐ जय मुनिसुव्रत स्वामी ।६॥

भ. मुनिसुव्रतनाथ स्तुति

(चाल-तुमसे लागी लगन....)

दीनोंके दीनानाथ, मुनिसुव्रतनाथ,
जिनेश प्यारा, मेटो मेटोजी संकट हमारा।
मंगल स्तुती करुं, मनमें ध्यान धरु,
प्रभु प्यारा, सब संकट तुमने निवारा ॥टेक॥

शामाके आंखोंके तारे, सुमित्रके राज दुलारे,
पैठणमें प्रगटे प्रभो, मङ्गल होवे-विभो-आनंदसारा ॥१॥
राजगृही प्रभु आये, चारो कल्याणिक मन भाये,
पावन भूमि जहां, सम्मेदगिरि महान, निर्वाणपद थारा ॥२॥
सुर-नर-मुनि आये, प्रभु तव गुण सब गाये,
सम्यक् ज्योति जगे अष्ट कर्म नशे, जिनेश प्यारा ॥३॥
अंजनसे पापी तारे, राजा श्रीपालका कष्ट निवारे,
मेटो जामन मरण, कर दो दुखका हनन्, मुनिसुव्रत प्यारा ॥४॥
भाव भक्तिसे शीस नवाऊं, प्रभु तव पद कैसे पाऊं,
'राहो' व्याकुल खडा, तेरे चरणों पडा, कर दो भव पारा ॥५॥

-×-

पद्मप्रभ चालीसा

शीश नवा अर्हंतको सिद्धन करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्यका ले सुखकारी नाम ॥
सर्व साधु और सरस्वती जिन मंदिर सुखकार।
पद्मपुरीके पद्मको मन मन्दिरमें धार ॥

जय श्रीपद्मप्रभु गुणधारी, भवि जनको तुम हो हितकारी।
देवोंके तुम देव कहाओ, छट्ठे तीर्थङ्कर कहलाओ ॥
तीन काल तिहुँ जगकी जानो, सब बाते क्षणमें पहचानो।
वेष दिगम्बर धारण हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे ॥

मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासा पर ।
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेषका लेश न पाया ।।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जगके मनको भाते हो ।
कौशाम्बी नगरी कहलाए, राजा धारणजी बतलाए ।।
सुन्दर नाम सुसीमा उनके, जिनके उरसे स्वामी जन्मे ।
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरव बतलाई ।।
इक दिन हाथी बंधा निरखकर, झट आया वैराग उमड़कर ।
कार्तिक सुदी त्रयोदशि भारी, तुमने मुनिपद दीक्षा धारी ।।
सारे राज पाटको तजके, तभी मनोहर वनमें पहुँचे ।
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पूनम कहलाया ।।
एक सौ दश गणधर बतलाए, मुख्य वज्र चामर कहलाए ।
लाखों मुनि आर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों ।।
असंख्यात तिर्यंच बताये, देवी देव गिनत नहीं पाये ।
फिर सम्मेदशिखरपर जाकर, शिवरमणीको ली परणाकर ।।
पंचम काल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई ।
जयपुर राज ग्राम बाडा है, स्टेशन शिवदासपुरा है ।।
मूला नाम जाटका लड़का, घरकी नींव खोदने लागा ।
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनताको बतलाई ।।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्म प्रभुकी मूर्ति बताई ।
मनमें अति हर्षित होते हैं, अपने दिलका मल धोते हैं ।।

तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत प्रेतको दूर भगाया।
जब गंधोदक छींटे मारे, भूत प्रेत तब आप बकारे॥
जपनेसे जब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वो करे किनारा।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आंखे पाते हैं॥
प्रतिमा श्वेत-वर्ण कहलाए, देखत ही हिरदयको भाए।
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भवसे वह नर तरता है॥
अन्धा देखे गूंगा गावे, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ जावे।
बहरा सुन-सुन कर खूश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे॥
मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा।
चालीसेको चन्द्र बनावे, पद्म प्रभुको शीश नवावे॥

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगंध अपार, पद्मपुरीमें आयके॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जगमें चले॥

—+—

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिन वाणीको ध्याय।
लिखनेका साहस करूं चालीसा सिर नाय॥
देहरेके श्री चन्द्रको पूजों मन वच काय।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करैं, विघ्न दूर हो जाय॥

जय श्रीचंद्र दयाके सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर ।
शांति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगंबर धारा भारी ।
नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी ।
देवोंके तुम देव कहावो, कष्ट भक्तके दूर हटावो ।
समंतभद्र मुनिवरने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया ।
तुम जगमें सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थङ्कर कहलावो ।
महासेनके राजदुलारे, मात सुलक्षणाके हो प्यारे ।
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्र-प्रभु स्वामी ।
पौष वदी ग्यारसको जन्मे, नर नारी हरषे तब मनमें ।
काम क्रोध तृष्णा दुखकारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी ।
फाल्गुन वदी सप्तमी भाई, केवलज्ञान हुआ सुखदाई ।
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभु आप वहांसे ।
लोभ मोह और छोडी माया, तुमने मान कसाय नसाया ।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी ।
पंचम काल महा दुखदाई, धर्म कर्म भूले सब भाई ।
अलवर प्रान्तमें नगर तिजारा, होय जहां पर दर्शन प्यारा ।
उत्तर दिशिमें देहरा माहीं, वहां आकर प्रभुता प्रगटाई ।
सावन सुदी दशमी शुभ नामी, आन पधारे त्रिभुवन स्वामी ।
चिन्ह चन्द्रका लख नर नारी, चंद्रप्रभुकी मूरती मानी ।
मूर्ति आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली ।

अतिशय चन्द्र प्रभुका भारी, सुनकर आते यात्री भारी ।
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी, जुडता है मेला यहां भारी ।
कहलानेको तो शशि धर हो, तेज पुंज रविसे बढ़कर हो ।
नाम तुम्हारा जगमें सांचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा ।
राक्षस भूत प्रेत सब भागे, तुम सुमरत भय कभी न लागे ।
कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाते नित नर और नारी ।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, संकट झट कटता है भारी ।
जो भी जैसी आश लगता, पूरी उसे तुरत कर पाता ।
दुखिया दर पर जो आते हैं, संकट सब खो कर जाते हैं ।
खुला सभीको प्रभु द्वार है, चमत्कारको नमस्कार है ।
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावें ।
बहरा भी सुनने लग जावे, गहलेका पागलपन जावे ।
अखंड ज्योतिका घृत जो लगावे, संकट उसका सब कट जावे ।
चरणोंकी रज अति सुखकारी, दुख दरिद्र सब नाशनहारी ।
चालीसा जो मनसे ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे ।
पार करो दुखियोंकी नैया, स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया ।
प्रभु मैं तुमसे कुछ नहिं चाहूँ, दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ ।

करूं वन्दना आपकी, श्री चन्द्र प्रभु जिनराज ।
जंगलमें मंगल कियो, रखो 'सुरेश'की लाज ॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

॥ दोहा ॥

शीश नवा अरिहंतको, सिद्धन करूं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्यका ले सुखकारी नाम ॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार ।
अहिच्छत्र और पार्श्वको, मन मन्दिरमें धार ।

॥ चौपाई ॥

पार्श्वनाथ जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रतके धारी ।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम ही सब देवनके देवा ।
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जगका निस्तारा ।
अश्वसैनके राजदुलारे, वामाकी आंखोंके तारे ।
काशीजीके स्वामी कहाये, सारी परजा मौज उड़ाये ।
इक दिन सब मित्रोंको लेके, सैर करनको बनमें पहुँचे ।
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगलमें गई सवारी ।
एक तपस्वी देख वहां पर, उससे बोले बचन सुनाकर ।
तपस्वी ! तुम क्यों पाप कमाते, इस लक्कड़में जीव जलाते ।
तपसी तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़को चीर गिराया ।
निकले नाग नागिनी कारे, मरनेके थे निकट बिचारे ।
रहम प्रभुके दिलमें आया, तभी मन्त्र नवकार सुनाया ।
मर कर वो पाताल सिधाये, पद्मावति धरणेन्द्र कहाये ।
तपसी मर कर देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थोंमें गाया ।

एक समय श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर बनकी ठानी।
तप करते थे ध्यान लगाये, इकदिन कमठ वहां पर आये।
फौरन ही प्रभुको पहिचाना, बदला लेना दिलमें ठाना।
बहुत अधिक बारिश बरसाई, बादल गरजे बीजली गिराई।
बहुत अधिक पत्थर बरसाये, स्वामी तनको नहीं हीलाये।
पद्मावती धरणेन्द्र भी आये, प्रभुकी सेवामें चित लाये।
पद्मावतीने फन फैलाया, उस पर स्वामीको बैठाया।
धरणेन्द्रने फन फैलाया, प्रभुके सर पर छत्र बनाया।
कर्मनाश प्रभु ज्ञान उपाया, समोशरण देवेन्द्र रचाया।
यही जगह अहिच्छत्र कहाये, पात्र केशरी जहां पर आये।
शिष्य पांच सौ संग विद्याना, जिनको जाने सकल जहाना।
पार्श्वनाथका दर्शन पाया, सबने जैन धरम अपनाया।
अहिच्छत्र श्री सुन्दर नगरी, जहां सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाया।
प्रतिमा पर पालीश करवाया, फौरन इक मिस्त्री बुलवाया।
वह मिस्त्री मांस खाता था, इससे पालिश गिर जाता था।
मुनिने उसे उपाय बताया, पारस दर्शन व्रत दिलवाया।
मिस्त्रीने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना।
गदर सतावनका किस्सा है, इक मालीको यो लिक्खा है।
माली एक प्रतिमाको लेकर, झट छुप गया कुएके अन्दर।
उस पानीका अतिशय भारी, दूर होय सारी बीमारी।

जो अहिच्छत्र हृदयसे ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे ।
पुत्र संपदाकी बढती हो, पापोंकी इक दम घटती हो ।
है तहसील आंवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी ।
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जाने सब नर नारी ।
चालीसेको 'चन्द्र' बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये ।

॥ सोरठा ॥

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्रमें आयके ।
होय कुबेर समान जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जगमें चले ॥

श्री महावीर चालीसा

(शमशाबाद नि० कवि० पूरनमल कृत)

॥ दोहा ॥

सिद्ध समूह नमों सदा, अरु सुमरूं अरहन्त ।
निर आकुल निर्वाञ्छ हो, गए लोकके अन्त ॥
मङ्गल मय मङ्गल करन, वर्धमान महावीर ।
तुम चिंतत चिंता मिटे, भव हरो सकल भव पीर ।

॥ चौपाई ॥

महावीर दयाके सागर, जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ।
शांत छवि मूरति प्यारी, वेष दिगम्बरके तुम धारी ॥
कोटि भानुसे अति छवि छाजे, देखत तिमिर पाप सब भाजे ।
महाबलि अरि कर्म विदारे, बोधा मोह सुभटसे मारे ।

काम क्रोध तजि छोडो माया,क्षणमें मान कषाय भगाया ।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी ।
प्रभु तुम नाम जगतमें सांचा, सुमरत भागत भूत पिशाचा ।
राक्षस यक्ष डाकिनी भागे, तुम चिंतत भय कोई न लागे ।
महा शूलको जो तन धारे, होवे रोग असाध्य निवारे ।
व्याल कराल होय फणधारी, विषको उगल क्रोध कर भारी
महाकाल सम करै डसन्ता, निर्विष करो आप भगवन्ता ।
महामत्त गज मदको झार, भगै तुरत जब तुझे पुकारै ।
फार डाढ़ सिंहादिक आवे ताको हे प्रभु तुहीं भगावै ।
होकर प्रबल अग्नि जो जारै, तुम प्रताप शीतलता धारै ।
शस्त्र धार अरि युद्ध लडन्ता, तुम प्रसाद हो विजय तुरन्ता ।
पवन प्रचण्ड चलैं झकझोरा, प्रभु तुम हरो होय भय चोरा ।
झार खण्ड गिरि अटवी माहीं,तुम बिनशरण तहां को उनाहीं
वज्रपात करि घन गरजावै, मूसलधार होय तडकावै ।
होय अपुत्र दरिद्र संताना, सुमिरत होत कुबेर समाना ।
बन्दीगृहमें बन्धी जंजीरा, कठ सुई अनिमें सकल शरीरा ।
राजदण्ड करि शूल धरावै, ताहि सिंहासन तुही बिठावै ।
न्यायाधीश राजदरबारी, विजय करे होय कृपा तुम्हारी ।
जहर हलाहल दुष्ट पियन्ता, अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ।
चढ़े जहर, जीवादि डसन्ता निर्विष क्षणमें आप करन्ता ।

एक सहस वसु तुमरे नामा, जन्म लियो कुण्डपुर धामा।
सिद्धारथ नृप सुत कहलाये, त्रिशला मात उदर प्रगटाये।
तुम जनमत भयो लोक अशोका, अनहद शब्द भयो तिहुंलोका।
इन्द्रने नेत्र सहस्र करि देखा, गिरी सुमेर कियो अभिषेखा।
कामादिक तृष्णा संसारी, तज तुम भए बाल ब्रह्मचारी।
अथिर जान जग अनित बिसारी, बालपने प्रभु दीक्षा धारी।
शांत भावधर कर्म विनाशे, तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे।
जड-चेतन त्रय जगके सारे, हस्त रेखवत सम तू निहारे।
लोक अलोक द्रव्य षट् जाना, द्वादशांगका रहस्य बखाना।
पशु यज्ञोंका मिटा कलेशा, दया धर्म देकर उपदेशा।
अनेकांत अपरिग्रह द्वारा, सर्वप्राणि समभाव प्रचारा।
पंचम काल विषै जिनराई, चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई।
क्षणमें तोपनि वाडि-हटाई, भक्तनके तुम सदा सहाई।
मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता, सुमरत पंडित होय विख्याता।

॥ सोरठा ॥

करे पाठ चालिस दिन नित चालीसहिं बार।
खेवै धूप सुगंध पढ़, श्री महावीर अगार॥
जनम दरिद्री होय अरु जिसके नहिं सन्तान।
नाम वंश जगमें चले, होय कुबेर समान॥

'पूरनमल' रचकर चालीसा।
हे प्रभु तोहि नवावत शीशा॥

लक्ष्मी प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ण करनेका मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अ सि आ उ सा नमः

(प्रातः काल १ माला)

शान्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः

अथवा

ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः।

नव-ग्रह शांतिके लिए मंत्र जाप

सूर्य	= ॐ णमो सिद्धाणं	(१० हजार)
चन्द्र	= ॐ णमो अरिहंताणं	(१० हजार)
मंगल	= ॐ णमो सिद्धाणं	(१० हजार)
बुध	= ॐ णमो उवज्झायाणं	(१० हजार)
(गुरु) बृहस्पति	= ॐ णमो आइरियाणं	(१० हजार)
शुक्र	= ॐ णमो अरिहंताण	(१० हजार)
शनि	= ॐ णमो लोए सव्व साहूणं	(१० हजार)
केतु	= ॐ णमो सिद्धाणं	(१० हजार)
केतु राहु	= ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहूणं	(१० हजार)

॥ इति समाप्त ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सभी तरहके
दिगम्बर जैन धार्मिक ग्रंथ
मंगानेका पता -

⇓

दिगम्बर जैन पुस्तकालय
खप[redacted] गांधी चौक,
[redacted]